नवीन शिक्षा पद्धति पर आधारित एवं एन०सी०ई०आर०टी० द्वारा
निर्धारित पाठ्यक्रम के अनुसार

हिन्दी

भाग 5

लेखक :
अभिषेक अग्रवाल

- शिक्षाप्रद-कहानियाँ
- शब्दार्थ
- मौखिक एवं लिखित प्रश्न
- अभ्यास के लिए प्रश्न-पत्र

नवीन संस्करण

© प्रकाशकाधीन

इस पुस्तक के किसी भी भाग का किसी भी रूप में मुद्रण, प्रकाशन, संग्रहण अथवा प्रसारण प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना वर्जित है।

संशोधनकर्त्ता

डॉ0 राम कुमार
पी-एच0 डी0, एम0 ए0 (हिंदी)

विशाल जैन
एम0 ए0 (हिंदी)

वैधानिक सूचना

यद्यपि प्रस्तुत पुस्तक को त्रुटिरहित बनाने का हरसंभव प्रयास किया गया है। परंतु इसमें यदि कोई त्रुटि रह गई हो तो उससे कारित क्षति अथवा संताप के लिए लेखक, प्रकाशक, मुद्रक एवं पुस्तक विक्रेता का कोई दायित्व नहीं होगा। किसी त्रुटि के संज्ञान में आने पर भविष्य में उसका सुधार किया जाएगा।

हिन्दी

राष्ट्रभाषा हिंदी की पाठ्य-पुस्तक

वर्तमान में सैद्धांतिक शिक्षा के साथ-साथ व्यावहारिक व प्रयोगात्मक शिक्षा की सुदृढ़ता पर भी जोर दिया जा रहा है जिससे विकास के प्रत्येक क्षेत्र को स्थायित्व प्रदान किया जा सके। इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए नवीन राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) को प्रस्तुत किया गया है। इसके अंतर्गत ज्ञान के व्यावहारिक पक्ष को सबल बनाने और 'स्वयं करके सीखने' की अवधारणा को साकार करने पर जोर दिया गया है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के प्रमुख अवयव

रचनात्मक और नवीनता (Creativity and Innovativeness)
नए विचारों को उत्पन्न करने तथा उन रचनात्मक विचारों को चरितार्थ करने में सहायता करना।

निरंतर समीक्षा (Continuous Review)
नियमित समीक्षा के द्वारा समझ को परखना तथा सीखी गई अवधारणा को सुदृढ़ करना।

संप्रेषण (Communication)
प्रभावी रूप से संप्रेषण करने योग्य बनाना

डिजिटल साक्षरता (Digital Literacy)
शिक्षक-शिक्षार्थियों के बीच ऑनलाइन सहयोग को बढ़ाना

समस्या-समाधान और आलोचनात्मक सोच (Problem Solving and Critical Thinking)
मस्तिष्क को तेज करना तथा स्मरण शक्ति में वृद्धि करना।

अंतर-विषयक अधिगम (Inter-disciplinary Learning)
अध्ययन के विभिन्न विषयों को जोड़ना अथवा शामिल करना।

कला एकीकरण (Art Integration)
'कला के माध्यम' से और 'कला के साथ' सीखने हेतु छात्रों को प्रोत्साहित करना।

संगणनात्मक सोच (Computational Thinking)
तार्किक और विश्लेषणात्मक सोच को बढ़ाना

जीवन-कौशल और मूल्य (Life skills and Values)
आत्म-विश्वास और नैतिक मूल्यों का समुचित विकास करना।

अनुभावनात्मक अधिगम (Experiential Learning)
'स्वयं करके सीखने' की प्रक्रिया में संलग्न करना, समूह भावना में वृद्धि करना तथा जोखिम लेने की क्षमता।

आपके लिए.....

'हिन्दी' नवीन हिन्दी पाठ्य-पुस्तकें बच्चों की अभिरुचियों एवम् उनके मानसिक स्तर के अनुकूल हैं तथा उन्हें प्रतिदिन के जीवन से जोड़ती हैं। हिन्दी श्रृंखला अपने नाम को सार्थक करती, भाषा को विस्तृत रूप देती एक ऐसी, अनूठी श्रृंखला है जो विद्यार्थियों का निश्चय ही बहुआयामी मार्ग प्रशस्त करेगी।

पाठशाला में प्रवेश लेते ही बच्चों को उसके वातावरण के साथ तालमेल बनाना होता है, जिससे वे सीखने-सिखाने की प्रक्रिया से जुड़ सकें। पुस्तकें उनकी प्रिय मित्र बनें, इसे ध्यान में रखते हुए बच्चों की रुचि के अनुकूल विषयों का चयन किया गया है। जब विषय बच्चों की दुनिया से जुड़े हुए होते हैं तब उनसे बच्चों का परिचय स्वाभाविक ढंग से एवम् सरलता से हो जाता है। इन कक्षाओं में भाषा पर बल दिया जाता है; क्योंकि वर्णमाला सीखे बिना भाषा के लिखित रूप को सीख पाना संभव नहीं है। पढ़ना केवल वर्णमाला के अक्षरों और मात्राओं को रटना और जोड़-जोड़कर पढ़ना तथा लिखना ही नहीं अपितु इसके साथ-साथ सोच-समझ का विकास करना प्रस्तुत श्रृंखला का उद्देश्य है। भाषा-ज्ञान को सरल, सरस और रुचिकर बनाना भी अत्यंत आवश्यक है।

हिन्दी श्रृंखला की विशेषताएँ–

- भाषा-ज्ञान के लिए प्रस्तावित विविध पाठ्यक्रमों पर आधारित सरल और बोधगम्य विषयवस्तु।
- बच्चों के प्रतिदिन के अनुभवों से जुड़ी तर्कशक्ति और वैज्ञानिक दृष्टिकोण की वृद्धि करने वाली रोचक विषयवस्तु।
- शिक्षार्थियों के स्तर के अनुरूप कविता, कहानी, घटना-वर्णन, नाटक आदि से परिचय; विषयवस्तु में विविधता और नवीनता।
- भाषा में रुचि बढ़ाने हेतु अतिरिक्त पाठ्य एवम बोधगम्य-सामग्री।
- सरल परिभाषाओं के अतिरिक्त व्याकरण के व्यावहारिक पक्ष की जानकारी हेतु प्रयास।
- अभ्यासों द्वारा जीने की कला सिखाना, मानवीय मूल्यों तथा स्वास्थ्यवर्धक आदतों पर विशेष दृष्टिकोण।
- विषय वस्तु को अधिक प्रभावपूर्ण रूप से समझाने के लिए अध्यापक बंधुओं हेतु कुछ शिक्षण-संकेत।
- प्रस्तुत श्रृंखला बच्चों के सर्वांगीण विकास में उपयोगी सिद्ध हो सकेगी; ऐसी हमारी आकांक्षा है और अपेक्षा भी।
- प्रबुद्ध शिक्षक-शिक्षिकाओं तथा अभिभावकों के अमूल्य सुझावों का सर्वदा स्वागत है।

–प्रकाशक

विषय-सूची

1.	फूल और काँटा	(कविता)	... 5
2.	काबुलीवाला	(कहानी)	... 9
3.	लोनपोगार	(कहानी)	... 16
4.	जीवनदायक	(कहानी)	... 21
5.	परिश्रम का फल	(कहानी)	... 26
6.	चेतक	(कविता)	... 32
7.	प्राथमिक चिकित्सा	(कहानी)	... 36
	बीरबल की बुद्धिमानी	(केवल पठन हेतु)	... 41
8.	भैंस के आगे बीन बजाना	(कहानी)	... 45
9.	दोहावली	(कहानी)	... 50
10.	अकबर और बीरबल	(दोहे)	... 53
11.	समय का हेर-फेर	(व्यंग्य)	... 58
12.	फूलचंद और पंखुरी	(कहानी)	... 64
13.	बाजरे की रोटियाँ	(संवाद)	... 71
14.	अभ्यास का महत्त्व	(कहानी)	... 80
15.	सभी धर्म समान	(संस्मरण)	... 86
16.	सूरज की बेटी	(कविता)	... 92
17.	धमाचौकड़ी	(कहानी)	... 95
18.	बुधिया की समझदारी	(कहानी)	... 101
	सबसे मीठी, सबसे कड़वी	(केवल पठन हेतु)	... 105
	प्रश्न-पत्र–I		... 109
	प्रश्न-पत्र–II		... 111

1 फूल और काँटा
(कविता)

हैं जन्म लेते जगह में एक ही,
एक ही पौधा उन्हें है पालता।
रात में उन पर चमकता चाँद भी,
एक ही सी चाँदनी है डालता।

मेघ उन पर है बरसता एक-सा,
एक-सी उन पर हवाएँ हैं बहीं।
पर सदा ही यह दिखाता हैं हमें,
ढंग उनके एक-से होते नहीं।

छेदकर काँटा किसी की उँगलियाँ,
फाड़ देता है किसी के वर वसन।
प्यार-डूबी तितलियों का पर कुतर,
भौंर का है, वेध देता श्याम तन।

फूल लेकर तितलियों को गोद में,
भौंर का अपना अनूठा रस पिला।
निज सुगंधों और निराले रंग से,
है सदा देता कली जी की खिला।

है खटकता एक सब की आँख में,
दूसरा है सोहता सुर-शीश पर।
किस तरह कुल की बड़ाई काम दे,
जो किसी में हो बड़प्पन की कसर।

—अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

शब्द-पिटारा (Word-Meanings)

मेघ = बरसात (rain); अनूठा = अनोखा (unique); वर = उत्तम (best); निज = अपना (self); वसन = कपड़ा (cloth); जी = मन (heart); पर = पंख (feather); खटकता = चुभता (to rattle); कतर = काटकर (cutting); सोहता = अच्छा लगता (look well); भौंर = भँवरा (black-bee); सुर–शीश = देवताओं के सिर (head of gods); तन = शरीर (body); कुल = वंश (family); श्याम = काला (black); कसर = कमी (shortage)।

श्रुतलेख (Dictation)

पंख, भौंर, चाँदनी, सुगंध, बड़प्पन, सोहता, अंनूठा

अभ्यास (Exercises)

मौखिक (Oral)

- इन प्रश्नों के उत्तर दो—

(क) पानी कौन बरसाता है?

(ख) रात में आकाश में कौन चमकता है?

(ग) कपड़े कौन फाड़ देता है?

(घ) प्यार में डूबी कौन रहती है?

(ङ) तितलियों को गोद में कौन लेता है?

लिखित (Written)

1. इन प्रश्नों के उत्तर लिखो—

(क) काँटे क्या करते हैं?

____

(ख) फूल क्या करते हैं?

____

(ग) भौंरे क्या करते हैं?

____

(घ) बग़ीचे में सुगंध कौन बिखेरता है?

____

(ङ) देवताओं के मस्तक की शोभा कौन बढ़ाता है?

____

2. सही उत्तर के सामने सही का निशान (✓) लगाओ—

(क) 'अनूठा' शब्द का क्या अर्थ है?

अँगूठा ☐ अनोखा ☐ उत्तम ☐

(ख) भौंरों को अपना अनूठा रस कौन पिलाता है?

काँटा ☐ फूल ☐ तितली ☐

(ग) फूल और काँटे पर एक-सी चाँदनी कौन डालता है?

चाँद ☐ तारे ☐ सूरज ☐

(घ) 'कुल' शब्द का कविता में क्या अर्थ लिया गया है?

जोड़ ☐ योग ☐ वंश ☐

(ङ) 'पर' शब्द का अर्थ है?

लेकिन ☐ पंख ☐ ऊपर ☐

3. कविता की पंक्तियों को पूरी कीजिए—

(क) मेघ उन पर है बरसता एक-सा

____

पर सदा ही यह दिखाता है हमें,

____

(ख) फूल लेकर तितलियों की गोद में,

____

निज सुगंधों और निराले रंग से,

____

4. स्तंभ 'अ' को स्तंभ 'ब' से मिलाओ—

स्तंभ 'अ'	स्तंभ 'ब'
(क) श्याम	(i) कमी
(ख) वेधना	(ii) कपड़ा
(ग) वसन	(iii) देवता
(घ) सुर	(iv) छेदना
(ङ) कसर	(v) काला

5. दी गई पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए—

है खटकता एक सबकी आँख में,
दूसरा है सोहता सुर-शीश पर।
किस तरह कुल की बड़ाई काम दे,
जो किसी में हो बड़प्पन की कसर।

____

भाषा-ज्ञान (Language Knowledge)

1. दिए गए शब्दों के अर्थ समझते हुए अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए—

(क) सुर (देवता) — ____________________

सुर (लय) — ____________________

(ख) श्याम (काला) — ____________________

श्याम (श्रीकृष्ण)— ____________________

(ग) कुल (वंश) — ____________________

कुल (योग) — ____________________

2. दिए गए शब्दों के तीन-तीन पर्यायवाची शब्द लिखिए—

(क) चाँद — __________ __________ __________

(ख) हवा — __________ __________ __________

(ग) फूल — __________ __________ __________

(घ) आँख — __________ __________ __________

आलोचनात्मक सोच (Critical Thinking)

- आपको कौन सा फूल पसंद है और क्यों?

समूह कार्य (Group Discussion)

- हमें कौन से मौसम में कौन से फूलों के पौधे लगाने चाहिए? इसकी जानकारी इकट्ठा करें और कक्षा में चर्चा करें।

रचनात्मक गतिविधि

- ध्यान से पढ़िए और उत्तर दीजिए-
- गुलाब एक खुशबू वाला फूल है। यह कई रंगों का होता है। गुलाबी रंग के अलावा यह लाल, पीले, सफ़ेद तथा बैंगनी रंगों के भी होते हैं। इसके फूल सजाने, माला बनाने तथा गुलकंद बनाने के काम आते हैं। इसकी एक और किस्म होती है, जिसे गुलाब की लता कहते हैं। इसे घर के दरवाज़े या आँगन में लगा दें तो पूरा घर महक उठता है।

(क) गुलाब के फूल कौन-कौन से रंग के होते हैं?

(ख) गुलाब के फूल किस काम आते हैं?

(ग) पूरा घर कब महक उठता है?

काबुलीवाला 2
(कहानी)

मेरी पाँच वर्ष की बच्ची पायल एक क्षण भी चुप नहीं रह सकती। उसके इस स्वभाव से उसकी माँ परेशान हो जाती है, परंतु मेरे साथ ऐसा नहीं है। यदि पायल बहुत देर चुप रहे तो बड़ा अस्वाभाविक सा लगता है।

उस दिन मैं अपने नए उपन्यास का सत्रहवाँ अध्याय लिख रहा था। पायल चुपके से आई और मेरे हाथ पर हाथ रखकर कहने लगी, "पिता जी! राम दयाल चौकीदार है न! वह काक को कउवा कहता है। वह कुछ नहीं जानता। नहीं जानता न!"

मैं कुछ बोलता, इससे पहले वह कहने लगी, "पिताजी, भोला कहता है बादलों में हाथी बैठा है और अपनी सूंड से पानी बरसाता है। क्या यह सच है?"

मैं कुछ उत्तर सोच ही रहा था कि वह फिर पूछने लगी, "पिता जी! माता जी आपकी क्या लगती हैं?"

गंभीर भाव से मैंने कहा, 'पायल देखो, मैं काम कर रहा हूँ। तुम बाहर जाओ और भोला के साथ खेलो।" परंतु पायल बाहर नहीं गई। वह मेरे पैरों के पास बैठकर खेलने लगी।

मेरा कमरा ऊपर था। कमरे की खिड़की से सड़क दिखाई देती है। अचानक पायल अपना खेल छोड़कर खिड़की की ओर दौड़ी और चिल्लाने लगी, "काबुलीवाला! काबुलीवाला!"

"ओहो! अब काबुलीवाला आएगा और मेरा सत्रहवाँ अध्याय कभी पूरा नहीं होगा।" मैंने सोचा। काबुलीवाले ने पायल को देखा। वह डरकर माँ के पास भाग गई।

तभी काबुलीवाला भीतर आ गया। मुझे लिखना छोड़ना पड़ा। मैंने काबुलीवाले से कुछ खरीदा और इधर-उधर की बातें करने लगा। काबुलीवाले ने पूछा, "साहब, वह बच्ची कहाँ है?"

पायल के मन से भय दूर हो जाए, इसलिए मैंने उसको कमरे में बुलाया।

काबुलीवाला उसे किशमिश और बादाम देने लगा। परंतु वह डरकर मुझसे लिपट गई। उसका भय और बढ़ गया।

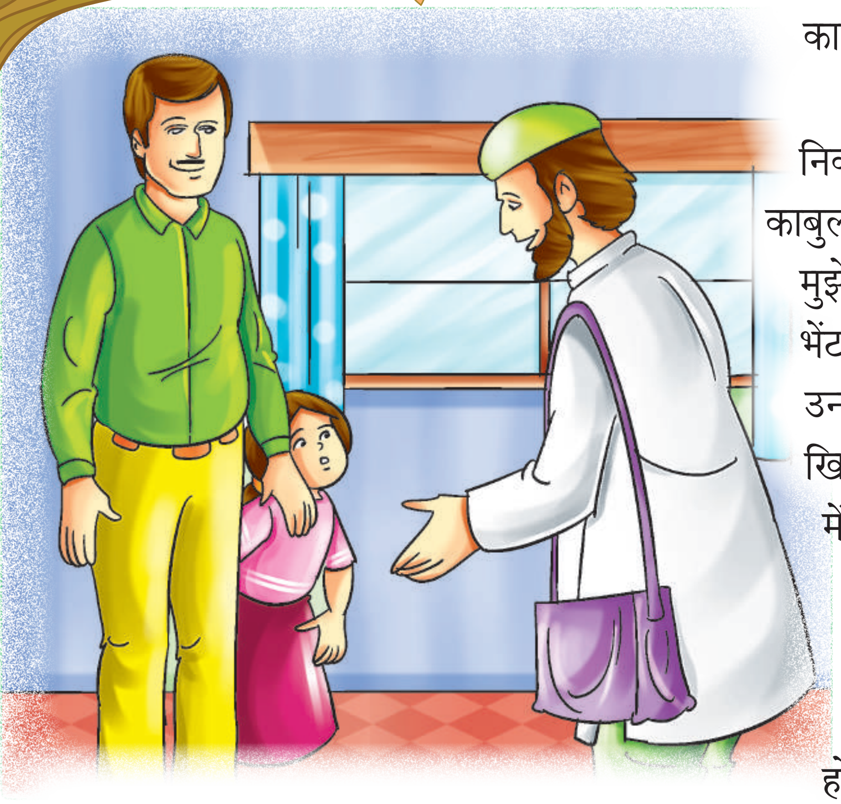

काबुलीवाले से मिलने का उसका यह पहला अवसर था।

कुछ दिनों पश्चात् मैं किसी कार्यवश घर से बाहर निकला तो यह देखकर चकित रह गया कि पायल काबुलीवाले से खूब घुल-मिलकर हँस-बोल रही है। बाद में मुझे पता चला कि काबुलीवाला और पायल की यह दूसरी भेंट नहीं है, अपितु उनकी मित्रता बहुत गहरी हो चुकी है। उनके बीच विचित्र मजाक होते हैं। पायल उससे खिल-खिलाकर पूछती, ''काबुलीवाले, काबुलीवाले! तुम्हारे थैले में क्या है?''

''हाथी''

फिर दोनों खूब हँसते।

काबुलीवला आता रहा और दोनों की मित्रता प्रगाढ़ होती रही।

सर्दियों के अंतिम दिन थे। मैं प्रातः अपने कमरे में बैठा लिख-पढ़ रहा था। वायु में ठिठुरन थी। खिड़की से आती सूर्य की किरणें मेरे चरणों में फैलने लगी थीं। आठ बज चुके थे। मैंने सड़क पर कोलाहल होते सुना। बाहर झाँककर देखा, दो पुलिस के सिपाही काबुलीवाले को पकड़कर ले जा रहे थे। पीछे-पीछे जिज्ञासु बालकों की टोली चल रही थी। एक सिपाही हाथ में चाकू पकड़े हुए था। ''क्या बात है?'' मैंने एक सिपाही से पूछा।

उसने बताया कि काबुलीवाले ने किसी पड़ोसी को एक शॉल बेचा था, परंतु अब वह पैसे देने के समय झूठ बोलता है कि मैंने नहीं खरीदा। काबुलीवाले को उसके झूठ पर क्रोध आया। झगड़ा हुआ और काबुलीवाले ने उसे चाकू मार दिया।

अचानक पायल भी बरामदे में आई और सदा की भाँति चहककर पुकारने लगी,

''काबुलीवाले! काबुलीवाले!''

काबुलीवाले का चेहरा खिल उठा, परंतु उसने हथकड़ी से जकड़े अपने हाथों को ऊपर उठाकर दिखाया और कहा, ''अफसोस! मेरे हाथ बँधे हैं।''

सिपाही काबुलीवाले को लेकर चले गए। प्रहार करने के आरोप में उसे कई वर्ष के कारावास का दंड मिला।

समय बीतता गया और काबुलीवाले की याद स्मृति-पटल पर भी शेष न रही। मेरी बेटी पायल भी अपने पुराने मित्र को भूल गई। उसके जीवन में नए-नए मित्र आ गए थे। ज्यों-ज्यों वह बड़ी होती गई, प्रायः लड़कियों के साथ ही उठती-बैठती। यहाँ तक कि मेरी बातचीत भी उससे कभी-कभी ही हो पाती थी।

कई वर्ष बीत गए। पतझड़ का मौसम था। हम पायल की शादी का प्रबंध कर चुके थे। वह शादी का दिन था। घर में प्रातःकाल से ही शोरगुल और चहल-पहल मची थी। यह करो, वह करो, शीघ्र काम निबटाने और उतावलेपन का जैसे अंत न था। मैं कमरे में बैठा हिसाब देख रहा था। एक व्यक्ति आया और आदर से सलाम कर सामने बैठ गया। यह रहमान था, काबुलीवाला।

प्रथम दृष्टि में तो मैं उसे पहचान नहीं सका। न उसके पास थैला था, न उसके लंबे बाल थे और न वह पहले जैसा हट्टा-कट्टा था। जब वह मुस्कुराया, तब मैं उसे पहचान गया।

''कब आए,'' मैंने पूछा।

''कल शाम को ही जेल से छूटा हूँ।'' वह बोला।

उसके आने के बाद मैं सोचने लगा, यदि यह आज न आया होता, तो अच्छा था। एक क्षण रुककर मैंने कहा, ''शादी का काम चल रहा है। मैं व्यस्त हूँ। क्या तुम दूसरे दिन आ सकते हो?''

वह जाने के लिए एकदम मुड़ा, किंतु पलटकर बोला, ''साहब, क्या मैं एक क्षण के लिए उस छोटी बच्ची से नहीं मिल सकता हूँ?''

कदाचित् उसे विश्वास था कि पायल अब भी वैसी ही छोटी होगी और काबुलीवाला! काबुलीवाला! चिल्लाती हुई आएगी।

मैंने कहा, ''घर में शादी है, आज तुम किसी से नहीं मिल सकते।'' उसका चेहरा बुझ गया। वह चुपचाप जाने लगा। मुझे कुछ खेद हुआ। इससे पहले मैं उसे वापस बुलाता, वह स्वयं ही लौटा और बोला, ''मैं ये कुछ चीजें उस बच्ची के लिए लाया था, आप उसे दे देंगे?''

मैं उसे चीजों के बदले में पैसे देने लगा। उसने मेरा हाथ पकड़ लिया और बोला, ''साहब, आप बहुत दयालु हैं। मुझे भूलिएगा नहीं। मुझे पैसे क्यों देते हैं? आपकी बच्ची जैसी मेरे घर में भी एक छोटी

लड़की है। मैं उसी का ख्याल कर आपकी लड़की के लिए चीजें लाता हूँ। बेचकर पैसा कमाने के लिए नहीं।'' यह कहते हुए उसने अपने ढीले-ढाले कुरते से कागज का एक छोटा मैला-सा टुकड़ा निकाला। बड़ी सावधानी से खोला और दोनों हाथों से सीधा कर मेरी मेज पर फैला दिया।

कोई फोटो नहीं, कोई चित्र नहीं, अपितु एक नन्हें से हाथ की छाप उस कागज पर थी। वह जब भी कोलकाता की गलियों में माल बेचने आता, उसे सदैव हृदय से लगाए रखता।

काबुलीवाले की बेटी के हाथ की छाप से मुझे अपने वर्षों पूर्व की

पायल की सुधि हो आई। मैंने तुरंत उसे बुलाया। उसे आने में कुछ अड़चन थी। परंतु मैं नहीं माना। शादी की लाल रेशमी साड़ी पहने, माथे पर चंदन का तिलक लगाए वधू के रूप में सजी-धजी पायल आई और बड़ी शालीनता से मेरे सामने खड़ी हो गई।

उस अलौकिक छवि को देखकर काबुलीवाला स्तंभित रह गया। वह अपनी पुरानी मित्र को पहचान न सका। अंत में वह मुस्कुराया और बोला, ''मेरी बच्ची! ससुराल जा रही हो?''

पायल लजा गई और सिर झुकाए खड़ी रही। मुझे याद आया वह दिन, जब काबुलीवाला और पायल पहली बार मिले थे। मैं विषाद से भर उठा। जब वह चली गई तो रहमान ने दीर्घ श्वास छोड़ा और फर्श पर बैठ गया। अचानक उसे ध्यान आया कि उसकी लड़की भी बड़ी हो चुकी होगी।

शहनाई बज रही थी। कोलकाता की गली में बैठे रहमान की आँखों में अफगानिस्तान का बंजर पहाड़ घूम रहा था।

मैंने एक नोट निकाला और उसे देते हुए कहा, ''रहमान जाओ, अपनी बेटी के पास जाओ।''

–रवीन्द्रनाथ टैगोर

शब्द-पिटारा (Word-Meanings)

क्षण = पल, घड़ी (moment); अवसर = मौका (opportunity); प्रगाढ़ = घना (great); कोलाहल = शोरगुल (noise); आरोप = दोष (guilt); कारावास = जेल (prison); दीर्घ = लंबा (long); स्मृति = याद (memory); पटल = पट, तख्ता (screen); व्यस्त = तल्लीन (busy); कदाचित् = शायद (perhaps); स्तंभित = चकित (surprise); विषाद = दु:ख (sorrow)।

श्रुतलेख (Dictation)

क्षण, प्रगाढ़, दीर्घ, समृति, व्यस्त्, कदाचित्, स्तंभित, विषाद

अभ्यास (Exercises)

मौखिक (Oral)

- **इन प्रश्नों के उत्तर दो—**

(क) छोटी बच्ची का क्या नाम था?

(ख) काबुली वाले को पुलिस क्यों पकड़ कर ले गई?

(ग) काबुलीवाला कहाँ का रहने वाला था?

(घ) लेखक ने काबुलीवाले को पैसे देकर कहाँ जाने के लिए कहा?

लिखित (Written)

1. इन प्रश्नों के उत्तर लिखो—

(क) काबुलीवाले से पायल की मित्रता कैसे हुई?

____

(ख) काबुलीवाला पायल के पिता से मेवे के दाम क्यों नहीं लेता था?

____

(ग) काबुलीवाला अपनी बेटी के हाथों की छापवाला कागज अपने पास क्यों रखता था?

____

(घ) पायल के विवाह के दिन काबुलीवाला क्यों उदास हो रहा था?

____

2. सही उत्तर के सामने सही का निशान (✓) लगाओ—

(क) यह कहानी किसने लिखी है?

काबुलीवाले ने ☐ रवीन्द्रनाथ टैगोर ने ☐ पायल ने ☐

(ख) लेखक उपन्यास का कौन-सा अध्याय लिख रहा था?

25वाँ ☐ 16वाँ ☐ 17वाँ ☐

(ग) काबुलीवाले के थैले में क्या भरा होता था?

किशमिश और बादाम ☐ गुब्बारे और खिलौने ☐ बर्फी और मिठाई ☐

(घ) काबुलीवाले ने अपने कुरते से पायल के पिताजी को क्या दिखाया?

किशमिश और बादाम ☐ कुछ पैसे ☐ कागज का टुकड़ा ☐

3. वाक्यों को पूरा कीजिए—

(क) यदि पायल बहुत देर तक चुप रहे तो बड़ा ________ लगता है।

(ख) वह डरकर ________ के पास भाग गई।

(ग) उनके बीच ________ मजाक होते थे।

(घ) मेरी बेटी पायल भी अपने ________ को भूल गई।

(ङ) मैं ________ से भर उठा।

4. स्तंभ 'अ' को स्तंभ 'ब' से मिलाओ—

	स्तंभ 'अ'		स्तंभ 'ब'
(क)	सेब	(i)	सूखे मेवे
(ख)	काजू	(ii)	फूल
(ग)	हाथी	(iii)	मिठाई
(घ)	रसगुल्ला	(iv)	फल
(ङ)	चमेली	(v)	जानवर

5. सही कथन के सामने (✓) तथा गलत कथन के सामने (✗) लगाओ—

(क) पायल एक क्षण भी चुप नहीं रह सकती थी। ☐

(ख) दोनों की मित्रता टूट गई। ☐

(ग) मैं उसे चीजों के बदले में पैसे देने लगा। ☐

(घ) पायल बिना लज्जा दुल्हन बनी खड़ी रही। ☐

भाषा-ज्ञान (Language Knowledge)

1. कठिन शब्दों को दो-दो बार लिखकर अभ्यास कीजिए—

(क) अस्वाभाविक — ________ ________

(ख) क्रोध — ________ ________

(ग) प्राणघातक — ________ ________

(घ) दृष्टि — ________ ________

(ङ) अलौकिक — ________ ________

2. किसी नाम या संज्ञा के स्थान पर प्रयोग किए जाने वाले शब्द को सर्वनाम कहते हैं। जैसे- वह, तुम, इत्यादि।

- पाठ से पाँच सर्वनाम शब्द चुनकर लिखिए—

(क) ______

(ख) ______

(ग) ______

(घ) ______

(ङ) ______

जिस शब्द से किसी काम का होना प्रकट हो, उसे **क्रिया** कहते हैं।

जैसे— पढ़ता है, खाता है, भागता है, आदि।

3. काबुलीवाला कैसा व्यक्ति था, उसके विषय में पाँच वाक्य लिखिए—

(क) ______

(ख) ______

(ग) ______

(घ) ______

(ङ) ______

आलोचनात्मक सोच (Critical Thinking)

- आपका सच्चा मित्र कौन है? उनके बारे में कुछ लिखिए।

समूह कार्य (Group Discussion)

- 'हमें जरूरत मंद लोगों की मदद करनी चाहिए।' इस विषय पर कक्षा में चर्चा कीजिए।

रचनात्मक गतिविधि

- क्या आप अपने माता-पिता से स्नेह करते हैं? यदि हाँ, तो उनके बारे में कुछ पंक्तियाँ लिखिए।

3 लोनपोगार

(कहानी)

लोनपोगार तिब्बत के बत्तीसवें राजा सौनगवसैन गापो के मंत्री थे। वे अपनी चालाकी और हाज़िरजवाबी के लिए दूर-दूर तक मशहूर थे। कोई उनके सामने टिकता न था। चैन से ज़िंदगी चल रही थी। मगर जब से उनका बेटा बड़ा हुआ था उनके लिए चिंता का विषय बना हुआ था। कारण यह था कि वह बहुत भोला था। होशियारी उसे छू कर भी नहीं गई थी। लोनपोगार ने सोचा – 'मेरा बेटा बहुत सीधा-सादा है। मेरे बाद इसका काम कैसे चलेगा!' ऐसा सोचते हुए उसने अपने बेटे की परीक्षा लेनी चाही।

एक दिन लोनपोगार ने अपने बेटे को सौ भेड़ें देते हुए कहा – ''तुम इन्हें लेकर शहर जाओ। मगर इन्हें मारना या बेचना नहीं। इन्हें वापस लाना सौ, जौ से भरे बोरों के साथ। वरना मैं तुम्हें घर में घुसने नहीं दूँगा।'' इसके बाद उन्होंने बेटे को शहर की तरफ़ रवाना किया।

लोनपोगार का बेटा शहर पहुँच गया। मगर इतने बोरे जौ खरीदने के लिए उसके पास रुपये ही कहाँ थे? वह इस समस्या पर सोचने-विचारने के लिए सड़क किनारे बैठ गया। मगर कोई हल उसकी समझ में नहीं आ रहा था। वह बहुत दुखी था। तभी एक लड़की उसके सामने आकर खड़ी हुई। ''क्या बात है तुम इतने दुखी क्यों हो?'' लोनपोगार के बेटे ने अपना हाल कह सुनाया। ''इसमें इतना दुखी होने की कोई बात नहीं । मैं इसका हल निकाल देती हूँ।''

इतना कहकर लड़की ने भेड़ों के बाल उतारे और उन्हें बाज़ार में बेच दिया। जो रुपये मिले उनसे जौ के सौ बोरे खरीदकर उसे घर वापस भेज दिया।

लोनपोगार के बेटे को लगा कि

उसके पिता बहुत खुश होंगे। मगर उसकी आप बीती पर उन्होंने ध्यान नहीं दिया। वे उठकर कमरे से बाहर चले गए। दूसरे दिन उन्होंने अपने बेटे को बुलाकर कहा – " पिछली बार भेड़ों के बाल उतारकर बेचना मुझे ज़रा भी पसंद नहीं आया। अब तुम दोबारा उन्हीं भेड़ों को लेकर जाओ। उनके साथ जौ के सौ बोरे ही लेकर लौटना।

एक बार फिर निराश लोनपोगार का बेटा शहर में उसी जगह जा बैठा। न जाने क्या उसे यकीन था कि वह लड़की उसकी मदद के लिए ज़रूर आएगी। और हुआ भी कुछ ऐसा ही, वह लड़की आई। उससे उसने अपनी मुश्किल कह डाली, "अब तो जौ के सौ बोरों के बिना मेरे पिता मुझे घर में नहीं घुसने देंगे।" लड़की सोचकर बोली – "एक तरीका है।" उसने भेड़ों के सींग काट लिए। उन्हें बेचकर जो रुपये मिले उसने सौ बोरे जौ खरीदे। बोरे लोनपोगार के बेटे को सौंपकर लड़की ने उसे घर भेज दिया।

भेड़ें और जौ के बोरे पिता के हवाले करते हुए लोनपोगार का बेटा खुश था। उसने विजयी भाव से सारी कहानी कह सुनाई। सुनकर लोनपोगार बोले – "उस लड़की से कहो कि हमें नौ हाथ लंबी राख की रस्सी बनाकर दे।" उनके बेटे ने लड़की के पास जाकर पिता का संदेश दोहरा दिया। लड़की ने एक शर्त रखी, "मैं रस्सी बना तो दूँगी। मगर तुम्हारे पिता को वह रस्सी गले में पहननी होगी।" लोनपोगार ने सोचा कि ऐसी रस्सी बनाना ही असंभव है। इसलिए लड़की की शर्त मंजूर कर ली।

अगले दिन लड़की ने नौ हाथ लंबी रस्सी ली। उसे पत्थर के सिल पर रखा और जला दिया। रस्सी तो जल गई, मगर रस्सी के आकार की राख बच गई। इसे वह सिल समेत लोनपोगार के पास ले गई और उसे पहनने के लिए कहा। लोनपोगार रस्सी देखकर चकित रह गए। वे जानते थे कि राख की रस्सी को पहनना तो दूर, उठाना भी मुश्किल है। हाथ लगाते ही वह टूट जाएगी।

लड़की की समझदारी के सामने उनकी अपनी चालाकी धरी रह गई। बिना वक्त गँवाए लोनपोगार ने अपने बेटे की शादी का प्रस्ताव लड़की के सामने रख दिया। इस प्रस्ताव को लड़की ने मंजूरी दे दी। अब उन दोनों की धूमधाम से शादी हो गई।

शब्द-पिटारा (Word-Meanings)

चालाकी = चतुराई (cunning); मशहूर = प्रसिद्ध (famous); चैन = आराम (rest); मगर = लेकिन (but); सीधा-सादा = साधारण (simple); पसंद = अच्छा (like); यकीन = भरोसा (faith); असंभव = जो संभव न हो (impossible); संदेश = समाचार (message); मदद = सहायता (help); चकित = हैरान (astonish); मुश्किल = कठिन (difficult); दोहराना = दोबारा करना (repeat); आकार = शक्ल (shape)।

श्रुतलेख (Dictation)

चालाकी, असंभव, संदेश, मुश्किल, मशहूर, चैन, गँवाए, मंजूरी

अभ्यास (Exercises)

मौखिक (Oral)

इन प्रश्नों के उत्तर दो—

(क) लोनपोगार का बेटा भेड़ों को लेकर कहाँ पहुँचा?

(ख) वह अपनी समस्या को सोचने-विचारने के लिए किसके किनारे बैठ गया?

(ग) लोनपोगार का बेटा समस्या को लेकर बहुत क्या था?

(घ) लोनपोगार के बेटे की समस्या की मदद के लिए कौन आया?

(ङ) लोनपोगार किससे चिंतित था?

लिखित (Written)

1. इन प्रश्नों के उत्तर लिखो—

(क) लोनपोगार का बेटा जब बहुत दुखी था तो उसके सामने क्या घटना घटी?

(ख) दूसरी बार बेटे को क्या विश्वास था?

(ग) लोनपोगार के बेटे ने लड़की को क्या संदेश सुनाया?

(घ) लोनपोगार के सामने लड़की ने क्या शर्त रखी?

2. सही उत्तर के सामने सही का निशान (✓) लगाओ—

(क) सौनगवसैन गापो तिब्बत के कौन-से राजा थे?

इकतीसवें राजा के   बत्तीसवें राजा के   तैंतीसवें राजा के

(ख) लोनपोगार का बेटा कैसा था?

होशियार   चालाक   सीधा-सादा

(ग) लोनपोगार ने अपने बेटे को कितनी भेड़ें दीं?

सौ   पचास   इक्कीस

(घ) लोनपोगार दूर-दूर तक किसके लिए प्रसिद्ध थे?

चालाकी के लिए   हाज़िरजवाबी के लिए   इन दोनों के लिए

3. सही शब्द चुनकर रिक्त स्थान भरिए—

(क) लोनपोगार का बेटा भेड़ लेकर ______ पहुँच गया।

(ख) वह इस ______ पर सोचने-विचारने के लिए सड़क के किनारे बैठ गया।

(ग) तभी एक ______ उसके सामने आकर खड़ी हो गई।

(घ) ______ से उन दोनों की शादी हो गई।

(ङ) ______ की रस्सी गले में पहनना तो दूर, उठाना भी मुश्किल है।

4. स्तंभ 'अ' को स्तंभ 'ब' से मिलाओ—

	स्तंभ 'अ'		स्तंभ 'ब'
(क)	मंत्री	(i)	राख
(ख)	लड़का	(ii)	चालाक
(ग)	लड़की	(iii)	भोला
(घ)	राजा	(iv)	होशियार
(ङ)	रस्सी	(v)	सौनगवसैन गापो

भाषा-ज्ञान (Language Knowledge)

1. नीचे कहानी के कुछ वाक्य दिए जा रहे हैं। इन बातों को आप और किस ढंग से कह सकते हो?

(क) चैन से ज़िंदगी चल रही थी। ______

(ख) मैं इसका हल निकाल देती हूँ। ______

(ग) उनकी अपनी चालाकी धरी रह गई। ______

(घ) होशियारी उसे छू कर भी नहीं गई थी। ______

(ङ) उसने विजयी भाव से सारी कहानी कह सुनाई। ______

2. पढ़िए, समझिए और लिखिए–

- **'गेहूँ' और 'जौ' अनाज के नाम हैं। ये तीनों शब्द संज्ञा हैं। 'गेहूँ' और 'जौ' अलग-अलग किस्म के अनाजों के नाम हैं; इसलिए ये दोनों व्यक्तिवाचक संज्ञा हैं और 'अनाज' जातिवाचक संज्ञा है। इसी प्रकार 'हिन्दुस्तान' व्यक्तिवाचक संज्ञा है और 'समाचार-पत्र' जातिवाचक संज्ञा है।**

अब आप दी गई संज्ञाओं को छाँटकर उनके उचित स्थान पर लिखिए–

लोहा	धातु	शेरवानी	भोजन
ताँबा	खिचड़ी	शहर	वेशभूषा

व्यक्तिवाचक संज्ञा – ______

जातिवाचक संज्ञा – ______

3. दिए गए शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए—

शब्द	पर्यायवाची 1	पर्यायवाची 2
हाथ		
बेटा		
पिता		
मशहूर		
समस्या		
चकित		

आलोचनात्मक सोच (Critical Thinking)

- **इस कहानी से आपको क्या शिक्षा मिलती है?**

समूह कार्य (Group Discussion)

- **क्या आपने कभी किसी की मदद की है? इसकी चर्चा अपने सहपाठी से करें।**

रचनात्मक गतिविधि

- **इस लड़की का सब लोहा मान गए। था न सचमुच नहले पर दहला। तुम्हें भी यही करना होगा।**

  तुम ऐसा कोई काम ढूँढ़ो जिसे करने के लिए सूझबूझ की ज़रूरत हो। उसे एक कागज़ की परची पर लिखो और तुम सभी अपनी-अपनी परची को एक डिब्बे में डाल दो। डिब्बे को बीच में रखकर उसके चारों ओर गोलाई में बैठ जाओ। अब एक-एक करके आओ, उस डिब्बे से एक परची निकालकर पढ़ो और उसके लिए उपाय सुझाओ। जिस बच्चे ने सबसे ज़्यादा उपाय सुझाए वह तुम्हारी कक्षा का 'बीरबल' होगा।

4 जीवनदायक
(कहानी)

दो अक्षरों का यह शब्द 'वायु' अदृश्य ही तो है। क्या तुम देख सकते हो? फिर भी हम इस शब्द का प्रयोग दैनिक जीवन में सदा से करते आए हैं। केवल इस एकमात्र शब्द से ही तो सभी जीवित वस्तुओं के जीवन सूत्र बँधे हुए हैं।

हवा, पवन, वायु, समीर और न जाने कितने ही इसके पर्याय हैं, चाहे कोई विज्ञान का हो अथवा साहित्य का कवि या लेखक यह सभी के अध्ययन का विषय रही है। वायु कई प्रकार के गैसों का मिश्रण है। इन गैसों में ऑक्सीजन, कार्बन डाइ-ऑक्साइड, नाइट्रोजन और हाइड्रोजन प्रमुख हैं। इन सभी गैसों का अपना-अपना अलग महत्त्व है। सभी आवश्यक गैसें हैं जो किसी-न-किसी कार्य मैं अवश्य सहायक होती हैं।

ऑक्सीजन हमारे जीवन के लिए सबसे आवश्यक प्राणदायक गैस है, किंतु इसका अर्थ यह नहीं है कि हमारी नाक से जो वायु साँस लेते समय भीतर जाती है, वह केवल ऑक्सीजन ही है।

ऑक्सीजन की सहायता से ही शरीर की कोशिकाएँ नियमित रूप से निरंतर कार्य करती हैं। ऑक्सीजन ही भोजन को पकाने में सहायक होती है। इसके अलावा आग जलाने में भी हवा का यह भाग सहायक होता है।

सभी जीवित प्राणी साँस लेते हैं। इसी प्रकार पेड़-पौधे भी जीवित प्राणियों

में गिने जाते हैं, अर्थात् वे भी श्वास लेते हैं, किंतु श्वास लेने की प्रक्रिया में उन्हें वायु में विद्यमान ऑक्सीजन की नहीं, कार्बन डाइ-ऑक्साइड की आवश्यकता होती है। जीवित प्राणियों में एक वे ही हैं, जो कार्बन डाइ-ऑक्साइड का प्रयोग करते हैं तथा ऑक्सीजन बाहर छोड़ते हैं। इस प्रक्रिया से ऑक्सीजन निरंतर वायु में मिलती रहती है तथा वायु में हमारे एवं अन्य प्राणियों के साँस लेने के बावज़ूद ऑक्सीजन की कमी नहीं होती, अन्यथा यदि सभी ऑक्सीजन ही लेते तो वायु में से ऑक्सीजन की उपस्थिति बहुत पहले ही खत्म हो चुकी होती, वायु का शुद्ध तथा स्वच्छ होना भी अत्यंत आवश्यक है। इस दिशा में पेड़-पौधे महत्त्वपूर्ण योगदान देते है।

ऑक्सीजन को छोड़कर तथा हमारे लिए हानिकारक कार्बन डाइ-ऑक्साइड को भीतर लेकर वे वायु तथा वातावरण को स्वच्छ करने का कार्य करते हैं।

यही कारण है कि आज सभी समझदार व्यक्ति इस बात पर ज़ोर देते हुए दिखाई देते हैं कि अधिक-से-अधिक पेड़ लगाएँ तथा कम-से-कम पेड़ काटे जाएँ। इन प्रकृति प्रेमियों का यह नारा है – ''एक बच्चा, एक वृक्ष।'' 'वन महोत्सव' का पर्व भी वर्ष में एक बार इसी उद्देश्य की पूर्ति करने तथा मानव को इस संबंध में जागरूक करने के लिए मनाया जाता है।

वायु में उपस्थित नाइट्रोजन वृक्षों को श्वास देने के अतिरिक्त खेतों में उगी विशेष फसलों; जैसे कि दालों के पौधों के लिए खाद का काम भी करती हैं।

वायु में विद्यमान हाइड्रोजन गैस को ग़ुब्बारे में भरकर हवा में उड़ाने के काम में लाया जाता है। कई साहसी लोगों ने तो हवा के ग़ुब्बारों में बैठकर पृथ्वी के चक्कर भी लगाए हैं।

दुःख की बात यह है कि प्रदूषण के कारण हवा का स्वरूप आज बहुत बिगड़ गया है। सड़कों पर अंधाधुंध चलती अनेक गाड़ियों, दोपहिया वाहनों के अतिरिक्त अनेक फ़ैक्टरियों से निकलता ज़हरीला धुआँ हवा में निरंतर विष घोल रहा है। प्रदूषण के कारण वायु में सल्फर डाइ-ऑक्साइड तथा नाइट्रोजन डाइ-ऑक्साइड की मात्रा इतनी बढ़ गई है कि तेजाबी वर्षा से अपना बचाव करने के तरीके भी लोगों को सिखाए जाने लगे हैं।

इस दुर्दशा से छुटकारा पाया जा सकता है, प्रदूषण नियंत्रण के तरीकों का पालन करके तथा अधिक-से-अधिक मात्रा में वृक्ष लगाकर और उनकी सही तरीके से देखभाल करके। आप सब बच्चों पर भी इसका दायित्व कुछ कम नहीं है। वायु को स्वच्छ और निर्मल रखने में सहयोग करें।

शब्द-पिटारा (Word-Meanings)

अदृश्य = दिखाई न देने वाला (invisible); प्रक्रिया = कार्य करने का तरीका (method); एकमात्र = अकेला (lonely); खत्म = समाप्त (end); पर्याय = दूसरा नाम (other name); स्वच्छ = साफ़ (pure); प्रमुख = मुख्य (main); उद्देश्य = लक्ष्य (aim); सहायक = मददगार (helper); जागरूक = चेतन (alert); निरंतर = लगातार (continue); विद्यमान = मौज़ूद (presence); दुर्दशा = बुरी दशा (bad condition); नियंत्रण = वश में रखना (control); दायित्व = ज़िम्मेदारी (liability); प्राणदायक = प्राण देने वाली (giver of life)।

श्रुतलेख (Dictation)

अदृश्य, प्रक्रिया, दुर्दशा, जागरूक, निरंतर, नियंत्रण, दायित्व

अभ्यास (Exercises)

मौखिक (Oral)

- **इन प्रश्नों के उत्तर दो—**

(क) क्या तुम हवा को देख सकते हो?

(ख) 'हवा' शब्द का एक पर्याय लिखिए।

(ग) प्राणदायक हवा कौन-सी गैस कहलाती है?

(घ) सभी जीवित प्राणी क्या लेते हैं?

(ङ) वायु शुद्ध करने में किसका महत्त्वपूर्ण योगदान है?

लिखित (Written)

1. इन प्रश्नों के उत्तर लिखो—

(क) हवा शब्द का प्रयोग हम किसमें सदा करते आए हैं?

____

(ख) किससे सभी जीवित के वस्तुओं अथवा प्राणियों के जीवन एक सूत्र से बँधे हुए हैं?

____

(ग) पेड़-पौधों द्वारा साँस में कौन-सी गैस ली जाती है?

____

(घ) हवा को किन-किन नामों से पुकारा जाता है?

____

(ङ) हवा में कौन-कौन सी प्रमुख गैसे हैं?

____

2. सही उत्तर के सामने सही का निशान (✓) लगाओ—

(क) हवा कैसी होती है?

दृश्य ☐ अदृश्य ☐ दोनों प्रकार की ☐

(ख) प्राणदायक गैस कौन-सी कहलाती है?

ऑक्सीजन ☐ नाइट्रोजन ☐ कार्बन डाइ-ऑक्साइड ☐

(ग) पेड़-पौधे श्वास लेने की प्रक्रिया में कौन-सी गैस लेते हैं?

नाइट्रोजन ☐ हाइड्रोजन ☐ कार्बन डाइ-ऑक्साइड ☐

(घ) हवा कितनी गैसों का मिश्रण है?

केवल एक ही गैस का ☐ दो गैसों का ☐ अनेक गैसों का ☐

3. सही शब्द चुनकर रिक्त स्थान भरिए—

(क) हवा कई प्रकार के ______________ का मिश्रण है।

(ख) हवा को शुद्ध करने में ______________ का महत्त्वपूर्ण योगदान है।

(ग) ______________ गैस विशेष फ़सलों के लिए खाद का काम करती हैं।

(घ) प्रदूषण के कारण हवा में ______________ तथा ______________ की मात्रा इतनी बढ़ गई है।

(ङ) ______________ ही भोजन को पकाने में भी सहायक होती है।

4. स्तंभ 'अ' को स्तंभ 'ब' से मिलाओ—

स्तंभ 'अ'	स्तंभ 'ब'
(क) प्रक्रिया	(i) साफ़
(ख) अदृश्य	(ii) कार्य करने का तरीका
(ग) प्रमुख	(iii) न दिखाई देने वाला
(घ) जागरूक	(iv) मुख्य
(ङ) निरंतर	(v) चेतन
(च) स्वच्छ	(vi) लगातार

भाषा-ज्ञान (Language Knowledge)

1. पढ़िए, समझिए और कीजिए-

- **ऐसे शब्द जो संज्ञा या सर्वनाम के साथ प्रयोग किए जाते हैं, उन्हें कारक कहते हैं; जैसे—**

— यह राहुल की कलम है।

— विशाल ने दीक्षा को पत्र लिखा।

— लड़का चाकू से फल काट रहा है।

— मेज़ पर तुम्हारी पुस्तक रखी है।

— रामू यह रुपये ज़ेब में रख लो।

- ऐसे शब्द-चिह्न जो संज्ञा या सर्वनाम शब्दों का संबंध दूसरे से कराते हैं, वे कारक-चिह्न या विभक्ति कहलाते हैं।
- अब आप दिए गए वाक्यों में कारक-चिह्नों को रेखांकित कीजिए-

(क) आग जलाने में भी हवा का यह भाग ही सहायक होता है।

(ख) कई साहसी लोगों ने तो हवा के गुब्बारों में बैठकर पृथ्वी के चक्कर लगाए हैं।

(ग) आप सब पर भी इसका दायित्व कुछ कम नहीं है।

(घ) तेजाबी वर्षा से अपना बचाव करने के तरीके भी लोगों को सिखाए जाने लगे हैं।

(ङ) वायु का शुद्ध तथा स्वच्छ होना भी अत्यंत आवश्यक है।

2. दिए गए शब्दों को अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए—

(क) अदृश्य — ______________________

(ख) सूत्र — ______________________

(ग) प्रक्रिया — ______________________

(घ) प्रदूषण — ______________________

आलोचनात्मक सोच (Critical Thinking)

- इस कहानी से आपको क्या शिक्षा मिलती है?

समूह कार्य (Group Discussion)

- अपने माता-पिता से चर्चा कीजिए कि हमें वृक्ष क्यों लगाने चाहिए।

रचनात्मक गतिविधि

- 'वन-महोत्सव' पर अपनी अभ्यास-पुस्तिका पर एक अनुच्छेद लिखकर अपने शिक्षक/शिक्षिका को दिखाइए।

परिश्रम का फल 5

(कहानी)

एक गरीब किसान भगवान की पूजा बड़ी श्रद्धा-भक्ति के साथ किया करता था। उसकी भक्ति देखकर भगवान उस पर प्रसन्न हुए। एक दिन उन्होंने प्रकट होकर किसान से कहा – ''वत्स, तुम्हें जो वरदान चाहिए, माँग लो।''

एकाएक भगवान को यों खड़ा देखकर किसान हक्का-बक्का रह गया। उसकी समझ में नहीं आया कि वह क्या माँगे।

तब मुस्कुराकर भगवान कहने लगे – ''संकोच न करो, जो चाहिए माँगो। लेकिन इतना ध्यान रखना कि जो कुछ मैं तुम्हें दूँगा, वह तुम्हारे गाँव वालों को भी बिना माँगे मिल जाएगा।''

किसान में हिम्मत आई। उसने हाथ जोड़कर प्रार्थना की – ''हे भगवान, मेरे मन में किसी के लिए ईर्ष्या-द्वेष नहीं है। यह तो बड़ी खुशी की बात है कि जो मुझे मिले, वह मेरे गाँव वालों को भी मिल जाए।''

भगवान बहुत प्रसन्न हुए, कहने लगे – ''तुम बड़े नेक हो, अब तुम्हें जो चाहिए, वह माँग लो। लेकिन ठहरो, क्या यह ठीक नहीं रहेगा कि इस मामले में तुम अपनी पत्नी से भी सलाह कर लो।''

''ठीक है, प्रभो!'' किसान ने उत्तर दिया – ''मैं अपनी पत्नी से पूछकर ही आपको बताऊँगा। लेकिन क्या आप मुझे कल तक का समय दे सकेंगे?''

'' अवश्य, तुम कल तक निर्णय ले लो।'' इतना कहकर भगवान अंतर्ध्यान हो गए।

किसान ने घर पहुँचकर अपनी पत्नी से भगवान के वरदान की चर्चा की। दोनों ने खूब सोच-विचार किया कि भगवान से आखिर क्या माँगा जाए। कुछ देर बाद वे इस निर्णय पर पहुँचे कि जिस चीज़ की कमी हमारे घर में है, वही माँग ली जाए।

दूसरे दिन किसान ने भगवान का ध्यान किया। भगवान प्रकट हुए और पूछने लगे – ''क्यों भाई, क्या निर्णय किया तुमने?''

''हे करुणा के अवतार! मुझ पर अप्रसन्न न होना। मैं एक गरीब किसान हूँ। पत्नी से सलाह करके कुछ सोचा तो है।'' किसान ने बात शुरू की।

''हाँ-हाँ, कहो। जो माँगोगे, वही तुम्हें मिलेगा। लेकिन मेरी शर्त याद है न? जो चीज़ तुम्हें मिलेगी, वह गाँव वालों को भी मिल जाएगी।''

''दयानिधे, सब याद है। आप मुझे ऐसा वरदान दीजिए कि मेरा संदूक रुपयों से भर जाए। मैं उसमें से चाहे जितना निकालूँ, वह कभी खाली न हो।'' किसान ने अपनी इच्छा प्रकट की।

भगवान कुछ रुके, बोले – ''भाई, फिर से अच्छी तरह सोच लो।''

लेकिन किसान ने आग्रह किया कि उसे यही वरदान चाहिए।

''ऐसा ही होगा।'' कहकर भगवान अंतर्ध्यान हो गए।

किसान ने घर जाकर अपना संदूक खोला तो उसे रुपयों से खचाखच भरा पाया।

दूसरे दिन किसान ने संदूक से खूब

सारे रुपये निकाल लिए। संदूक फिर ज्यों-का-त्यों रुपयों से भर गया। यह देखकर किसान खुश हो गया। वह परिवार के लिए कपड़े खरीदने बाज़ार चल दिया।

रास्ते में उसे जितने भी लोग मिले, सब बहुत खुश नज़र आ रहे थे।

किसान कपड़े की एक दुकान पर पहुँचा और दुकानदार से बोला – ''कुछ बढ़िया धोती-कुरते दिखलाओ।''

''क्या दोगे?'' दुकानदार ने किसान से पूछा।

''तुम जो दाम माँगोगे, वह तुम्हें मिल जाएगा। बस तुम जल्दी से कपड़े निकालो।'' किसान ने उत्तर दिया।

लेकिन दुकानदार पर किसान की बातों का कोई असर न हुआ। वह कहने लगा – ''दाम? हमें रुपया-पैसा नहीं चाहिए। रुपये-पैसों की अब कोई कीमत नहीं रही। वह तो सबके पास भरा पड़ा है। मुझे तो यह बताओ कि कपड़ों के बदले तुम मुझे कितना अनाज दे सकते हो?''

''रुपयों की कोई कीमत नहीं रही! यह कैसे हो सकता है?'' किसान ने अचरज में पड़कर पूछा। उसे लगा, शायद दुकानदार उससे मज़ाक कर रहा है।

दुकानदार ने उत्तर दिया – ''भाई मेरे, हर एक के पास इतना ज़्यादा रूपया-पैसा हो गया है कि किसी को अब उसकी ज़रूरत नहीं रही। इसलिए उसकी कीमत भी गिर गई है।''

किसान कुछ समझा नहीं। दुकानदार ने उसे फिर समझाया, मगर किसान की समझ में यह बात नहीं आई।

वह वहाँ से दूसरी, दूसरी से तीसरी, इस प्रकार कई दुकानों पर गया, लेकिन सबका एक ही उत्तर था – ''गेहूँ, चावल, दाल, चना कुछ भी लाओ, पर रुपया हमें नहीं चाहिए।''

बेचारा किसान परेशान हो गया। जब कोई चीज़ खरीदने जाता, उसके सामने यही कठिनाई आती। सब पैसा लेने से इनकार कर देते।

आखिर उसने फिर भगवान का ध्यान किया। भगवान मुस्कुराते हुए प्रकट हुए। किसान ने शिकायत की – ''हे प्रभो! आपने तो मुझे बड़ा धोखा दिया। ऐसे वरदान को लेकर मैं क्या करूँगा।''

भगवान ने कहा – ''भाई, मैंने तुम्हें कोई धोखा नहीं दिया। तुमने स्वयं अपने को धोखे में डाला है।''

लेकिन प्रभो, अब हम क्या करें? किसान ने गिड़गिड़ाकर कहा।

''तो क्या मैं अपना वरदान वापस ले लूँ?

भगवान ने किसान से पूछा।

किसान की जान में जान आ गई। कहने लगा – ''हाँ, भगवान, मुझे नहीं चाहिए ऐसा वरदान। मैं हमेशा की तरह अपनी मेहनत पर ही जीना चाहता हूँ।''

भगवान हँसते हुए बोले – ''यही ठीक बात है। तुम भी मेहनत करके जिओ और दूसरे लोग भी मेहनत करें। इसी में दुनिया की भलाई है।''

शब्द-पिटारा (Word-Meanings)

संकोच = हिचक, असमंजस (hesitation); हिम्मत = साहस (courage); ईर्ष्या = जलन (jealousy); अंतर्ध्यान = लोप हो जाना (sabotage); द्वेष = बैर, शत्रुता (enemy); करुणा = दया (pity); निर्णय = फ़ैसला (decision); इच्छा = चाह (desire); आग्रह = अनुरोध (request); दाम = कीमत (price); मगर = लेकिन (but); कठिनाई = समस्या (problem); मेहनत = परिश्रम (labour); इनकार = मना (refuse)।

श्रुतलेख (Dictation)

संकोच, ईर्ष्या, अंतर्ध्यान, द्वेष, निर्णय, अनुरोध, कठिनाई, हिम्मत

अभ्यास (Exercises)

मौखिक (Oral)

- **इन प्रश्नों के उत्तर दो—**

(क) किसान की भक्ति देखकर भगवान किसान पर क्या हुए?

(ख) भगवान ने वरदान देने के साथ एक क्या रख दी?

(ग) किसान के मन में किसी के लिए क्या नहीं है?

(घ) भगवान ने किसान को कैसा इंसान बताया?

(ङ) किसान ने वरदान किससे पूछकर माँगा?

लिखित (Written)

1. इन प्रश्नों के उत्तर लिखो—

(क) किसान ने भगवान से क्या वरदान माँगा?

____

(ख) भगवान ने वरदान देने की क्या शर्त लगाई?

____

(ग) सभी लोग प्रसन्न क्यों थे?

____

(घ) किसान ने भगवान से क्या शिकायत की?

____

(ङ) किसान की जान में जान कब आई?

____

2. सही उत्तर के सामने सही का निशान (✓) लगाओ—

(क) गरीब किसान भगवान की पूजा क्यों करता था?

लोभ-लालच से ☐ वरदान माँगने के लिए ☐ केवल श्रद्धा-भक्ति से ☐

(ख) भगवान ने किसान से क्या माँगने के लिए कहा?

जो चाहे वह ☐ रुपया-पैसा ☐ गाँव वालों के लिए वरदान ☐

(ग) भगवान ने किसान को सोचने के लिए कितने दिन का समय दिया?

एक दिन का ☐ तीन दिन का ☐ सप्ताह भर का ☐

(घ) किसान कैसा आदमी था?

गरीब किंतु नेक ☐ मेहनती और पत्नी भक्त ☐ श्रद्धालु किंतु ईर्ष्यालु ☐

3. सही शब्द चुनकर रिक्त स्थान भरिए—

(क) दुकानदार ने कहा — "अब रुपयों की कोई ________ नहीं रही।"

(ख) किसान भगवान की पूजा बड़ी ________ के साथ करता था।

(ग) भगवान ने किसान की पत्नी से ________ लेने के लिए कहा।

(घ) किसान का संदूक रुपयों से ________ भरा हुआ था।

(ङ) भगवान को खड़ा देखकर ________ अचंभे में पड़ गया।

4. स्तंभ 'अ' को स्तंभ 'ब' से मिलाओ—

स्तंभ 'अ'	स्तंभ 'ब'
(क) संकोच	(i) साहस
(ख) ईर्ष्या	(ii) हिचक
(ग) द्वेष	(iii) जलन
(घ) आग्रह	(iv) बैर
(ङ) करुणा	(v) अनुरोध
(च) हिम्मत	(vi) दया

5. निम्नलिखित कथन किसने, किससे कहे?

कथन	किसने कहा?	किससे कहा?
(क) "मेरे मन में किसी के लिए ईर्ष्या-द्वेष नहीं है।"	________	________
(ख) "तुम कल तक अपना निर्णय ले लो।"	________	________
(ग) "कुछ बढ़िया धोती-कुरते दिखलाओ।"	________	________
(घ) "हमें रुपया-पैसा नहीं चाहिए।"	________	________
(ङ) "मैं हमेशा की तरह अपनी मेहनत पर ही जीना चाहता हूँ।"	________	________

भाषा-ज्ञान (Language Knowledge)

1. दिए गए वाक्यों को योजक (समुच्चयबोधक) शब्द लगाकर लिखिए—

(क) उसकी समझ में नहीं आया। वह क्या माँगे।

____

(ख) किसान ने भगवान का ध्यान किया। भगवान प्रकट हो गए।

____

(ग) किसान कपड़े की दुकान पर गया। किसान दुकानदार से बोला।

____

(घ) दुकानदार ने किसान को बहुत समझाया। किसान को बात समझ नहीं आई।

____

2. दिए गए वाक्यों को उचित मुहावरों से पूरा कीजिए—

कानों पर जूँ न रेंगना, जान में जान आना, चेहरा खिल उठना, अपने पाँव पर आप कुल्हाड़ी मारना, आँखें चमकना

(क) किसान की ____________।

(ख) वरदान माँगकर किसान ने ____________ ली।

(ग) रुपयों से भरा संदूक देखकर किसान की ____________ लगीं।

(घ) भगवान को अपने सामने देखकर किसान का ____________।

(ङ) किसान ने दुकानदारों को ढेर सारा रुपया देना चाहा मगर दुकानदारों के ____________

आलोचनात्मक सोच (Critical Thinking)

- **इस कहानी से आपको क्या शिक्षा मिलती है?**

समूह कार्य (Group Discussion)

- **अगर आपको कभी भगवान से वरदान माँगने का मौका मिले तो आप क्या माँगोगे? अपने माता-पिता से चर्चा करें।**

रचनात्मक गतिविधि

- **दिन-प्रतिदिन मँहगाई बढ़ती जा रही है। इस बात की ओर ध्यान दिलाते हुए अपने पिताजी को जेबखर्च बढ़ाने के लिए एक पत्र लिखिए।**

6 चेतक
(कविता)

रण-बीच चौकड़ी भर-भरकर,
चेतक बन गया निराला था।
राणा प्रताप के घोड़े से,
पड़ गया हवा का पाला था।।

गिरता न कभी चेतक तन पर,
राणा प्रताप का कोड़ा था।
वह दौड़ रहा अरि-मस्तक पर,
या आसमान पर घोड़ा था।।

जो तनिक हवा से बाग हिली,
लेकर सवार उड़ जाता था।
राणा की पुतली फिरी नहीं,
तब तक चेतक मुड़ जाता था।।

कौशल दिखलाया चालों में,
उड़ गया भयानक भालों में।
निर्भीक गया व ढालों में,
सरपट दौड़ा करवालों में।।

हय यहीं रहा, अब यहाँ नहीं,
वह वहीं रहा, है वहाँ नहीं।
थी जगह न कोई जहाँ नहीं,
किस अरि-मस्तक पर कहाँ नहीं।।

बढ़ते नद-सा वह लहर गया,
वह गया, गया फिर ठहर गया।
विकराल वज्रमय बादल सा,
अरि की सेना पर घहर गया।।

भाला गिर गया, गिरा निषंग,
हय टापों से खन गया अंग।
बैरी समाज रह गया दंग,
घोड़े का ऐसा देख रंग।।

—श्री श्यामनारायण पांडेय

शब्द-पिटारा (Word-Meanings)

रण = युद्ध (battle); बाग = घोड़े की लगाम (bridle); चौकड़ी = छलाँग (bounce); निर्भीक = निडर (fearless); पाला = मुकाबला (confront); करवालों = तलवारों (swords); निराला = अनोखा (unique); हय = घोड़ा (horse); तन = शरीर (body); नद = नदी (river); अरि-मस्तक = शत्रु के माथे (forehead to enemy); विकराल = भयंकर (dreadful); आसमान = आकाश (sky); वज्रमय = बिजली की गड़गड़ाहट के साथ (with thunder); तनिक = थोड़ा-सा (little); घहर = छाना (rumbling); निषंग = तरकश (quiver); खन = घायल (wound); अंग = हिस्सा, भाग (parts); दंग = हैरान (astonish)।

श्रुतलेख (Dictation)

रण, चौकड़ी, निर्भीक, वज्रमय, निषंग, अरि-मस्तक, विकराल

अभ्यास (Exercises)

मौखिक (Oral)

- **इन प्रश्नों के उत्तर दो—**

(क) चेतक किसके बीच चौकड़ी भरता था?

(ख) एक बार घोड़े का किससे पाला पड़ गया था?

(ग) शरीर किसकी टापों से घायल हो गया था?

(घ) घोड़ा किसकी सेना पर छा जाता था?

(ङ) चेतक तलवारों के बीच कैसे दौड़ता चला जाता था?

लिखित (Written)

1. इन प्रश्नों के उत्तर लिखो—

(क) 'चेतक' कविता के रचयिता का नाम लिखिए।

____

(ख) चेतक को देखकर बैरी समाज की क्या दशा हुई?

____

(ग) चेतक के कौन-कौन से नाम कविता में कहे गए हैं?

____

(घ) चेतक की चार विशेषताएँ लिखिए।

____

(ङ) 'निषंग' शब्द से आप क्या समझते हैं?

____

2. सही उत्तर के सामने सही का निशान (✓) लगाओ—

(क) घोड़े का क्या नाम था?

चेतक ☐ सुलतान ☐ चेतन ☐

(ख) घोड़ा किसका था?

बाबा भारती का ☐ महाराणा प्रताप का ☐ सुदर्शन का ☐

(ग) घोड़ा किस पर दौड़ रहा था?

आसमान पर ☐ अरि-मस्तक पर ☐ दोनों पर ☐

3. कविता की पंक्तियाँ पूरी कीजिए—

(क) बढ़ते ____________ वह लहर गया,
वह गया, गया फिर ____________ गया।
____________ वज्रमय बादल सा,
____________ की सेना पर घहर गया।

(ख) गिरता न कभी ____________ तन पर,
राणा प्रताप का ____________ था।
वह दौड़ रहा ____________ पर,
या ____________ पर घोड़ा था।

4. दी गई पंक्तियों का भावार्थ लिखिए—

(क) जो तनिक हवा से बाग हिली,
लेकर सवार उड़ जाता था।
राणा की पुतली फिरी नहीं,
तब तक चेतक मुड़ जाता था।।

(ख) भाला गिर गया, गिरा निषंग,
हय टापों से खन गया अंग।
बैरी समाज रह गया दंग,
घोड़े का ऐसा देख रंग।।

5. स्तंभ 'अ' को स्तंभ 'ब' से मिलाओ—

स्तंभ 'अ'		स्तंभ 'ब'	
(क)	निषंग	(i)	निडर
(ख)	नद	(ii)	तरकश
(ग)	बाग	(iii)	नदी
(घ)	हय	(iv)	लगाम
(ङ)	निर्भीक	(v)	घोड़ा

भाषा-ज्ञान (Language Knowledge)

1. दिए गए शब्दों को अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए—

(क) हय — ______________________

(ख) निर्भीक — ______________________

(ग) आसमान — ______________________

(घ) हवा — ______________________

2. दिए गए शब्दों का अर्थ समझते हुए वाक्यों में प्रयोग कीजिए—

(क) बाग़ (बग़ीचा) — ______________________

बाग (घोड़े की लगान) — ______________________

(ख) हय (घोड़ा) — ______________________

हय (घृणा) — ______________________

आलोचनात्मक सोच (Critical Thinking)

- अगर चेतक घोड़ा आपको मिल जाए, तो आप कहाँ जाना पसंद करेंगे।

समूह कार्य (Group Discussion)

- कक्षा में इस कविता पर चर्चा कीजिए।

रचनात्मक गतिविधि

- घोड़े पर एक लेख लिखकर अपने शिक्षक/शिक्षिका को दिखाइए।

प्राथमिक चिकित्सा 7
(कहानी)

छुट्टी का दिन था। बरसात का मौसम था। रिमझिम-रिमझिम बूँदें पड़ रही थीं। सुरेश कुछ दोस्तों के साथ मेरे घर आया। कहने लगा—"आज हम सबने पास के पहाड़ पर जाने का निश्चय किया है। तुम भी चलो!" ऐसे सुहावने समय में कौन सैर को न जाना चाहेगा? मैं भी उनके साथ चल दिया। हम कुल मिलाकर छह लड़के थे। सुरेश हमारी टुकड़ी का नायक था। वह एक थैला कंधे पर लटकाए हुए था। हम सब खाली हाथ थे। सुरेश के थैले का हमने बहुत मजाक उड़ाया। एक साथी ने तो उसे 'लद्दू' का ही खिताब दे दिया।

कूदते-फाँदते हम सब पहाड़ पर जा पहुँचे। वहाँ चारों तरफ हरियाली थी। कहीं फूल खिल रहे थे, कहीं झरने बह रहे थे। एक तो पहाड़, दूसरे बरसात का मौसम और इस पर हल्की-हल्की बूँदों की फुहारें। हमारा मन खुशी से नाच उठा।

इधर-उधर घूमकर हम खाने बैठे। खा-पीकर हम खेल-कूद में लग गए। अचानक आकाश का पाँव फिसल गया और वह बुरी तरह से जख्मी हो गया। उसके हाथ-पाँव गहरे छिल गए थे। खून बह रहा था।

वहाँ डॉक्टर कहाँ? हम सब तो फिक्र में पड़ गए, मगर सुरेश ने कहा—"घबराओ मत? मुझ लद्दू का थैला कब काम आएगा।"

उसने अपना थैला खोला। एक बोतल में से एक चीनी

की प्याली में थोड़ी दवा डाली। उसने रुई डुबोई और छिले-फटे घुटनों और हाथों को साफ करना शुरू कर दिया।

धीरे-धीरे सब जख्म साफ हो गए। फिर दूसरी बोतल में से दवा निकाली। उसमें कपड़े के टुकड़ों को भिगोया, एक—एक टुकड़ा चोट पर रखा और दोनों घुटनों पर पट्टी बाँध दी। इस तरह से प्राथमिक चिकित्सा कर दी। फिर वहाँ से चलकर हम लोग किसी तरह आकाश को लेकर सड़क के मोड़ तक आ गए।

इतने में एक सज्जन, जो मोटर से पहाड़ की सैर को आए थे, उधर से होकर गुजर रहे थे। उन्होंने एक लड़के के घुटनों पर पट्टी बँधी देखी, तो वे उसे अपनी मोटर में शहर ले जाने को तैयार हो गए। हमने आकाश और सुरेश को मोटर में भेज दिया और बाकी सब पैदल लौटे।

सुरेश आकाश को सीधा अस्पताल ले गया। डॉक्टर ने जख्मों की पट्टीयाँ खोलीं, जख्म देखे। उन्होंने पूछा—''घावों की प्राथमिक चिकित्सा किसने की?'' सुरेश ने बताया कि मैं अपने थैले में प्राथमिक चिकित्सा का जरूरी सामान रखता हूँ। उनकी मदद से ही यह सब किया है।

डॉक्टर साहब बहुत खुश हुए और उन्होंने सुरेश की पीठ ठोंकी। शाबाश! वे कहने लगे— ''यदि तुम तुरंत प्राथमिक चिकित्सा नहीं करते, तो तुम्हारे मित्र के जख्म खराब हो जाते और काफी दिनों तक तकलीफ का सामना करना पड़ता। अब उसके घाव छह-सात दिन में ठीक हो जाएँगे।''

आकाश जब घर पहुँचा तो उसके माता-पिता ने भी सुरेश को खूब शाबाशी दी। हम सब आज भी सुरेश की प्रशंसा करते हुए नहीं थकते हैं।

शब्द-पिटारा (Word-Meanings)

निश्चय = तय (fixed); सुहावना = सुखद (pleasant); टुकड़ी = दल (group); नायक = नेता (leader); खिताब = उपाधि, पदवी (honour); जख्मी = घायल (injured); फिक्र = चिंता (worry); जख्म — घाव (wound); चिकित्सा = उपचार (treatment); सज्जन = भला आदमी (gentleman); पीठ ठोंकना = शाबाशी देना (to encourage); तकलीफ = पीड़ा (pain); प्रशंसा = बड़ाई (praise)।

श्रुतलेख (Dictation)

लद्दू, जख्मी, पट्टी, प्राथमिक, चिकित्सा, प्रशंसा, शाबाशी, तकलीफ, सज्जन, पैदल

अभ्यास (Exercises)

मौखिक (Oral)

- **इन प्रश्नों के उत्तर दो—**

(क) सुरेश के दोस्तों ने कहाँ जाने का निश्चय किया?

(ख) टुकड़ी का नायक कौन था?

(ग) कौन घायल हो गया?

(घ) प्राथमिक चिकित्सा किसने की?

लिखित (Written)

1. इन प्रश्नों के उत्तर लिखो—

(क) प्राथमिक चिकित्सा से आप क्या समझते हैं?

(ख) सुरेश और उसके दोस्तों ने घूमने के लिए कौन-सा स्थान चुना?

(ग) सुरेश को लद्दू का खिताब क्यों दिया गया?

(घ) सुरेश ने आकाश की प्राथमिक चिकित्सा कैसे की?

(ङ) यदि सुरेश आकाश की प्राथमिक चिकित्सा नहीं करता, तो क्या होता?

2. सही उत्तर के सामने सही का निशान (✓) लगाओ—

(क) छुट्टी के समय कैसा मौसम था?

जाड़े का ☐ गर्मी का ☐ बरसात का ☐

(ख) सैर करने के लिए कितने लड़के गए?

छह ☐ चार ☐ पाँच ☐

(ग) इस टुकड़ी का नायक कौन था?

सुरेश ☐ अमित ☐ आकाश ☐

(घ) सुरेश को उसके साथियों में से एक ने किसका खिताब दिया?

बुद्धू का ☐ लद्दू का ☐ समझदार का ☐

3. सही शब्द चुनकर रिक्त स्थान भरिए—

(क) सुरेश हमारी ________ का नायक था।

(ख) ________ हम सब पहाड़ पर जा पहुँचे।

(ग) हमारा ________ खुशी से नाच उठा।

(घ) ________ के हाथ-पाँव गहरे छिल गए।

(ङ) हम सब तो ________ में पड़ गए।

4. स्तंभ 'अ' को स्तंभ 'ब' से मिलाओ—

स्तंभ 'अ'	स्तंभ 'ब'
(क) सुरेश आकाश को	(i) छिल गए थे और खून बह रहा था।
(ख) सुरेश अपने थैले में	(ii) सीधे अस्पताल ले गया।
(ग) डॉक्टर साहब ने खुश होकर	(iii) प्राथमिक उपचार के लिए जरूरी सामान रखता था।
(घ) हम सब आज भी सुरेश की	(iv) सुरेश की पीठ ठोंकी।
(ङ) आकाश के हाथ-पाँव गहरे	(v) प्रशंसा करते नहीं थकते हैं।

5. सही कथन के सामने (✓) तथा गलत कथन के सामने (✗) लगाओ—

(क) आकाश सुरेश का सबसे बड़ा दुश्मन था। ☐

(ख) छुट्टी के दिन बरसात का मौसम था। ☐

(ग) सुरेश के थैले में प्राथमिक चिकित्सा का सामान था। ☐

(घ) हम सबने आगरे का ताजमहल देखने का कार्यक्रम बनाया। ☐

(ङ) हम कुल मिलाकर छह लड़के सैर पर गए। ☐

भाषा-ज्ञान (Language Knowledge)

1. निम्नलिखित शब्दों के वर्ण-विच्छेद कीजिए—

(क) प्राथमिक — ____ + ____ + ____ + ____ + ____ + ____ + ____ + ____ + ____

(ख) चिकित्सा — ____ + ____ + ____ + ____ + ____ + ____ + ____ + ____

(ग) रिमझिम — ____ + ____ + ____ + ____ + ____ + ____ + ____ + ____

(घ) प्रशंसा — ____ + ____ + ____ + ____ + ____ + ____ + ____

(ङ) घबराओ — ____ + ____ + ____ + ____ + ____ + ____ + ____ + ____

2. पढ़िए, समझिए और लिखिए–

उदाहरण– सब पहाड़ पर जाने की तैयारी कर रहे हैं।

सबने पहाड़ पर जाने की तैयारी की।

(क) आकाश और सुरेश खाना खा रहे हैं।

____

(ख) सुरेश अपने थैले से दवाई निकाल रहा है।

____

(ग) माता-पिता सुरेश को शाबाशी दे रहे हैं।

____

आलोचनात्मक सोच (Critical Thinking)

- हमें पहाड़ों पर जाते समय किन सावधानियों का ध्यान रखना चाहिए।

समूह कार्य (Group Discussion)

- स्कूल के चिकित्सा-कक्ष में से प्राथमिक चिकित्सा-बॉक्स लाकर कक्षा में सबके सामने देखिए और चर्चा कीजिए कि कौन-सी चीज कब काम आती है।
- सामान की सूची बनाकर एक प्राथमिक उपचार पेटी का चित्र बनाइए।

रचनात्मक गतिविधि

- अपने मित्र को इस पाठ के विषय में पत्र लिखिए और बताइए कि आपने इससे क्या सीखा?

केवल पठन हेतु

बीरबल की बुद्धिमानी

अकबर ने तुरंत एक सैनिक बीरबल के घर भेजा।
आपको महाराज ने अभी दरबार में बुलाया है।
क्यों? ऐसी क्या जरूरत आ पड़ी है?
तब सैनिक ने सारी बात बीरबल को बता दी।
ठीक है, मैं अभी चलता हूँ।
बीरबल ने कुछ देर सोचा और कौड़ियाँ लेकर दरबार की ओर चल दिए।
बीरबल! ये महाशय अपनी पहेली का जवाब चाहते हैं।
जी, हुजूर! आप निश्चिन्त रहिए।
बीरबल ने दूत के सामने कौड़ियाँ बिखेर दीं।

अब दूत बीरबल के सामने बाजरे के दाने बिखेरता है।
बीरबल तुरंत एक मुरगी मँगवाते हैं। मुरगी तुरंत सारे दाने चुग जाती है।
दूत चुपचाप सिर झुकाकर दरबार से चला जाता है। तब बादशाह बीरबल से पूछते हैं—
बीरबल! यह सब क्या था?
हुजूर! वह आपके सिंहासन के चारों ओर रेखा खींचकर यह बताना चाहता था कि उसका राजा हमारे राज्य को घेरना चाहता है।
पर तुमने कौड़ियाँ क्यों फैलाईं?
मेरा मतलब था कि बैठकर कौड़ियाँ खेलो, ऐसा साहस भी मत करना।

पर बीरबल! उसने बाजरे के दाने क्यों फैलाए?
जहाँपनाह! दाने फैलाकर वह कहना चाहता था कि हमारे पास हजारों सैनिक हैं।
तो तुमने मुरगी मँगवाकर दाने क्यों चुगवाए?
मेरा मतलब था कि हम भी कम नहीं हैं। हम तुम्हारे सैनिकों को ऐसे ही मार देंगे, जैसे ये मुरगी सारे दाने चुग गई।
बादशाह और सभी दरबारियों ने बीरबल की प्रशंसा की। बादशाह ने उन्हें प्रसन्न होकर कुछ अशर्फियाँ इनाम में दीं।
वाह! बीरबल! तुमने कमाल कर दिया।

भैंस के आगे बीन बजाना 8

(कहानी)

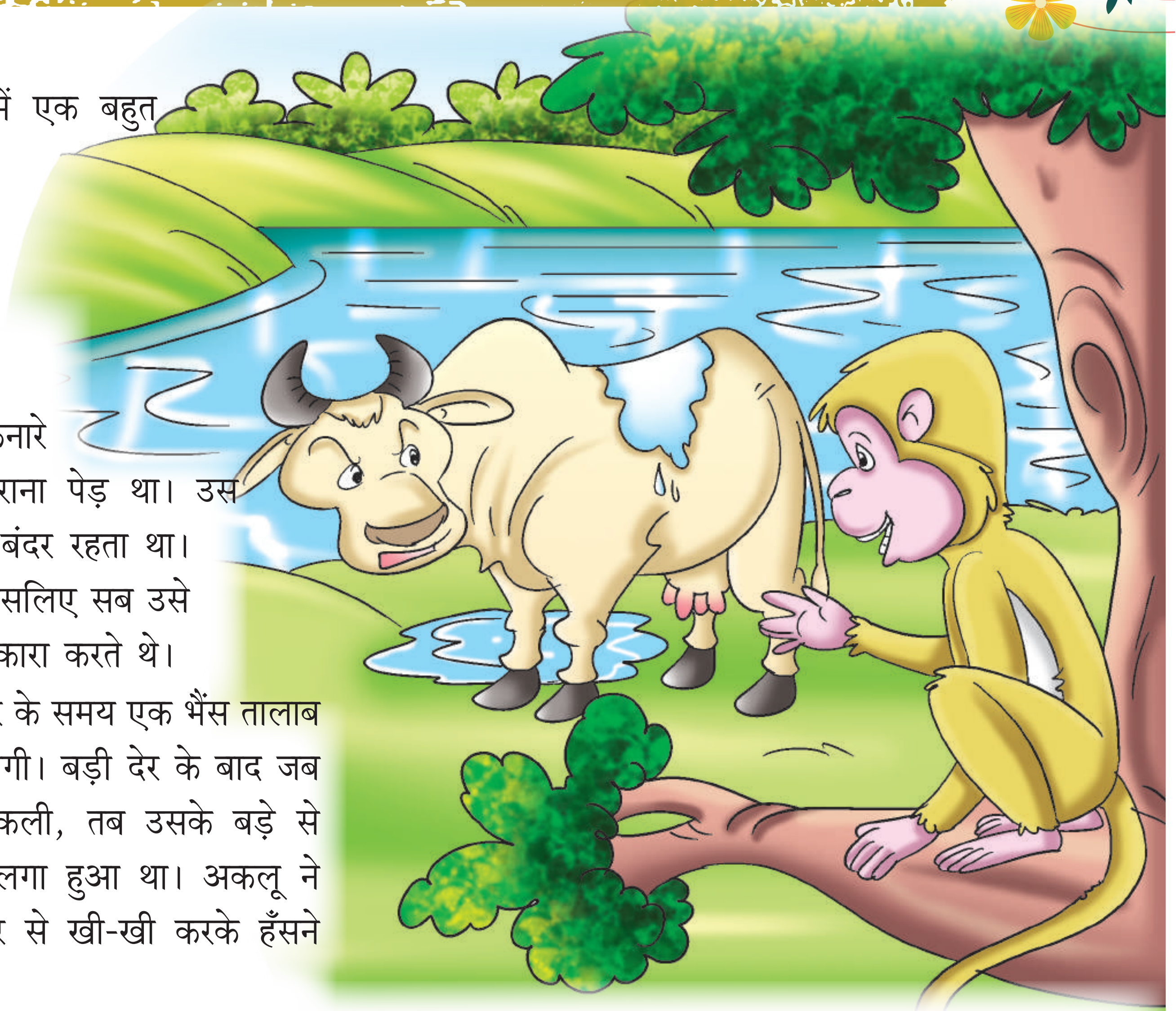

किसी जंगल में एक बहुत बड़ा तालाब था। जंगल के सभी जानवर इसी तालाब पर पानी पीने आते थे। तालाब के किनारे बरगद का एक पुराना पेड़ था। उस पर एक अक्लमंद बंदर रहता था। वह अक्लमंद था इसलिए सब उसे 'अकलू' कहकर पुकारा करते थे।

एक दिन दोपहर के समय एक भैंस तालाब में घुसकर नहाने लगी। बड़ी देर के बाद जब वह तालाब से निकली, तब उसके बड़े से शरीर पर कीचड़ लगा हुआ था। अकलू ने उसे देखा, तो ज़ोर से खी-खी करके हँसने लगा।

भैंस तो आखिर भैंस ही ठहरी। बिगड़ गई। गुस्से में बोली– "तुझे शर्म नहीं आती, अपने से बड़ों पर हँसते हुए।"

अकलू और ज़ोर से हँसा और बोला– "अरे, तो ऐसा भी क्या नहाना कि देह पर कीचड़-मिट्टी लगी रहे। इससे अच्छा तो यही था कि नहाने ही न जाती। तूने तालाब का पानी भी गंदा कर दिया और खुद भी गंदी ही रही। ऐसे नहाने का क्या फ़ायदा!"

"जा-जा, बड़ा आया," भैंस ने धमकाया– "ज़रा नीचे आ, अभी तेरी हड्डी-पसली एक कर दूँ। आया मुझे समझाने।"

"अरी जा, अपना काम कर। चली है अपनी ताकत दिखाने। इतना बड़ा शरीर है, पर अक्ल रत्ती-भर भी नहीं।" अकलू ने ताना मारा।

भैंस और अकलू की गरमागरम बातें जंगल में आग की तरह फैल गई। सभी जानवर इस झगड़े के बारे में बातें करने लगे। अंत में सबने तय किया कि किसी-न-किसी तरह इस झगड़े को ठंडा करना ही चाहिए।

शाम हुई जंगल में सभी जानवर तालाब के किनारे एकत्रित हुए। सबकी राय से यह तय हुआ कि जो इस तालाब को बीचों-बीच से पार कर जाएगा, वही बड़ा है। इस प्रतियोगिता के निर्णायक बने राजा शेर और सहायिका लोमड़ी रानी।

जंगल के सभी जानवर यह मज़ेदार तमाशा देखने के लिए उत्सुक थे। आधे तालाब के इस पार और आधे उस पार आकर जम गए।

अकलू और भैंस भी प्रतियोगिता वाले स्थान पर निश्चित समय पर पहुँच गए। अकलू बहुत परेशान था। उसे तैरना तो आता ही न था। लेकिन इज़्ज़त का सवाल था। अपनी परेशानी किसी दूसरे को बताता तो 'अक्लमंद' कैसे कहलाता? बिना प्रयत्न किए हार मानना उसे मंजूर नहीं था। इसलिए उसने चेहरे पर परेशानी का कोई भाव नहीं आने दिया। इधर भैंस मन-ही-मन बहुत खुश हो रही थी। उसे अपने बड़े शरीर और ताकत पर बहुत घमंड था। तालाब पार करना तो उसके बाएँ हाथ का खेल था। वह अपनी मस्ती में झूम रही थी।

अब सारी तैयारियाँ पूरी हो गई थीं, तब लोमड़ी ने दोनों को सावधान किया। उसके 'एक-दो-तीन' कहने पर दोनों को तालाब में तैरना शुरू कर देना था। अकलू की परेशानी बढ़ गई। दिल धड़कने लगा। घबराहट के कारण उसे कुछ नहीं सूझ रहा था। उसे लगा कि आज वह जंगल के सभी जानवरों के सामने मूर्ख साबित हो जाएगा।

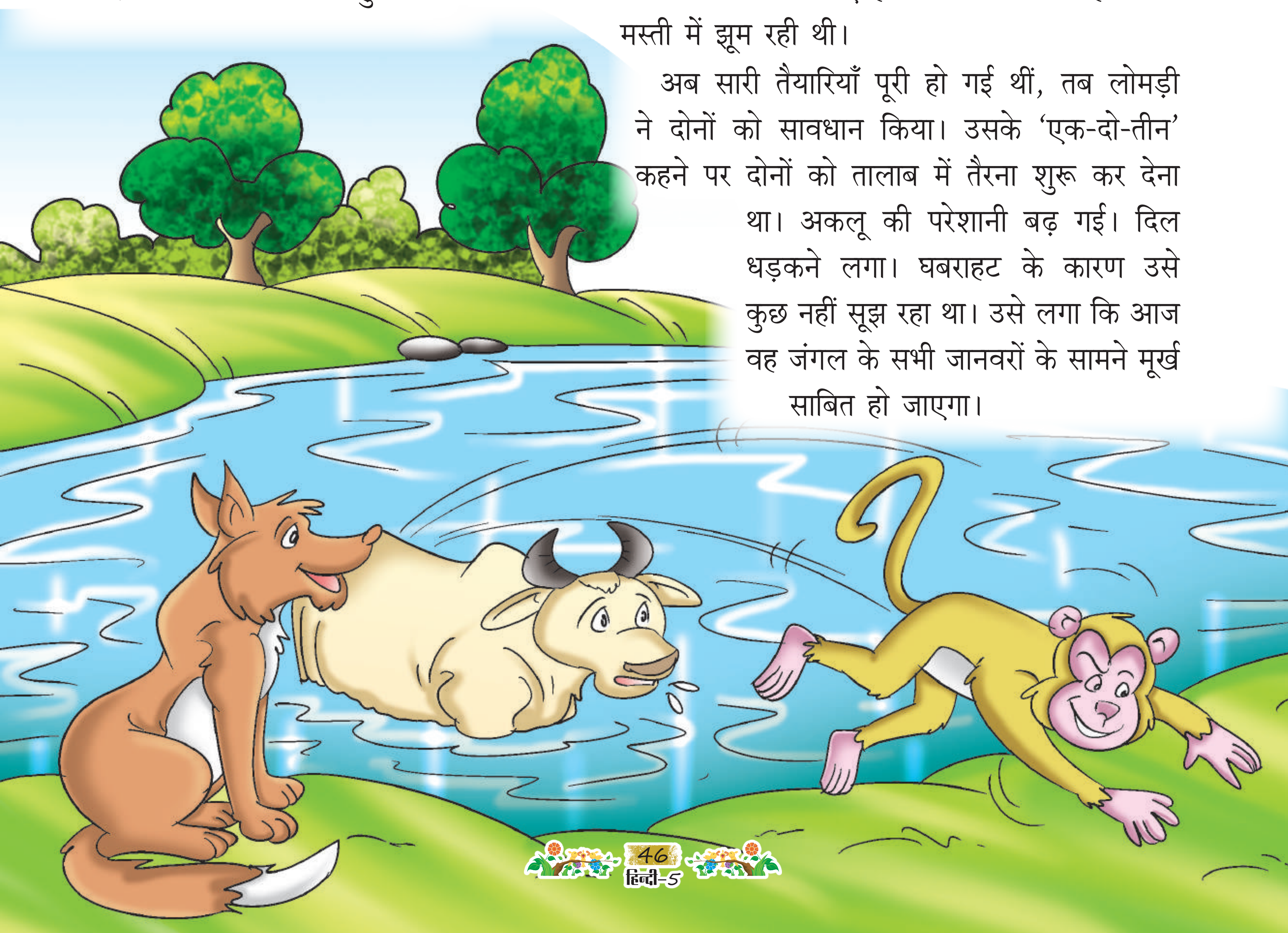

लोमड़ी के 'एक-दो-तीन' कहते ही प्रतियोगिता के लिए तैयार खड़ी भैंस तालाब में उतर गई। अकलू ने भी थोड़ी हिम्मत बाँधी और अक्ल लगाई। अचानक उसे एक तरकीब सूझ गई।

अकलू खुशी से उछल पड़ा। उसने इस डाली से उस डाली पर दो-चार छलाँगें लगाईं और तालाब की तरफ़ झुकी हुई डाल पर जा पहुँचा। भैंस अभी किनारे पर ही थी।

बस अकलू वहीं से कूद पड़ा। धम्म से भैंस के सींग पकड़ कर उसकी पीठ पर सवार हो गया। भैंस ने उसे गिराने के लिए एक-दो बार अपनी पूँछ चलाई, पर अकलू ने उसे भी पकड़ लिया।

जंगल के जानवर अकलू की चतुराई देखकर चकित रह गए। पर अभी हार-जीत का फैसला बाकी था। वे यह देखने के लिए उत्सुक हो गए कि देखें कौन जीतता है। भैंस तालाब के दूसरे किनारे से कुछ दूर ही थी कि अकलू ज़ोर-से उछलकर किनारे पर आकर खुशी से नाचने लगा। सारे जानवर अकलू की अक्लमंदी और जीत पर खुशी से चिल्ला उठे।

इधर भैंस बेचारी धीरे-धीरे पानी के बाहर निकली। शेर ने अपना निर्णय सुनाया– "अक्लमंद अकलू यह प्रतियोगिता जीत गया। उस दिन से लोगों को कहावत 'अक्ल बड़ी या भैंस' का जवाब भी मिल गया।

शब्द-पिटारा (Word-Meanings)

अक्लमंद = बुद्धिमान (intellgent); निर्णायक = निर्णय करने वाला (judge); बिगड़ना = गुस्सा होना (to be angry); उत्सुक = जानने की इच्छा (desire to know); देह = शरीर (body); प्रयत्न = कोशिश (effort); रत्ती–भर = . जरा–सा (few); तरकीब = उपाय (plan); प्रतियोगिता = होड़ (competition); साबित = सिद्ध (prove); मंजूर = स्वीकार (accept); शर्म = लज्जा (shame)।

श्रुतलेख (Dictation)

अंक्लमंद, निर्णायक, उत्सुक, हिम्मत, छलाँगें, सींग, प्रतियोगिता, कहावत

अभ्यास (Exercises)

मौखिक (Oral)

- **इन प्रश्नों के उत्तर दो—**

(क) जंगल में एक बहुत बड़ा क्या था?

(ख) तालाब के किनारे किसका पेड़ था?

(ग) भैंस किस समय तालाब में नहाने लगी?

लिखित (Written)

1. इन प्रश्नों के उत्तर लिखो—

(क) बंदर कहाँ रहता था?

____

(ख) बंदर का नाम अकलू कैसे पड़ा?

____

(ग) बंदर क्या देखकर खी-खी करके हँसने लगा?

____

2. सही उत्तर के सामने सही का निशान (✓) लगाओ—

(क) तालाब पर पानी पीने कौन आता था?

भैंस ☐ बंदर ☐ सभी जानवर ☐

(ख) अकलू क्या देखकर हँसने लगा?

भैंस को देखकर ☐ भैंस की देह पर लगी कीचड़ देखकर ☐

शेर को देखकर ☐

(ग) अकलू ने नदी कैसे पार की?

तैरकर ☐ भैंस पर चढ़कर ☐ टहनी के सहारे ☐

3. सही शब्द चुनकर रिक्त स्थान भरिए

(क) बंदर के लिए _______ का सवाल था।

(ख) बंदर का नाम अकलू उसकी _______ पर पड़ा।

(ग) भैंस ने _______ का पानी गंदा कर दिया।

(घ) भैंस _______ धीरे-धीरे पानी से बाहर निकली।

4. स्तंभ 'अ' को स्तंभ 'ब' से मिलाओ—

स्तंभ 'अ'	स्तंभ 'ब'
(क) बड़ा	(i) हिम्मत
(ख) अक्लमंद	(ii) तालाब
(ग) पुराना	(iii) बंदर
(घ) गरमागरम	(iv) पेड़
(ङ) थोड़ी	(v) बातें

भाषा-ज्ञान (Language Knowledge)

1. दिए गए वाक्यों में विस्मयादिबोधक अव्यय जोड़कर वाक्य पुनः लिखिए—

(क) मैं गिर गई। — ______________________

(ख) तुम परीक्षा में पास हो गई। — ______________________

(ग) आज माँ ने खीर पकाई है। — ______________________

(घ) तुम कितने गंदे हो। — ______________________

2. दिए गए शब्दों को अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए—

(क) धमकाना — ______________________

(ख) रत्ती भर — ______________________

(ग) निर्णायक — ______________________

(घ) चकित — ______________________

आलोचनात्मक सोच (Critical Thinking)

- **इस कहानी से आपको क्या शिक्षा मिलती है?**

समूह कार्य (Group Discussion)

- **'अक्ल बड़ी या भैंस' का क्या मतलब होता है?**

रचनात्मक गतिविधि

- **नीचे संकेत के रूप में कुछ वाक्य दिए जा रहे हैं। इन वाक्यों से आप कहानी की रचना कीजिए-**

- सुबह उठी। मेरी नज़र खिड़की पर पड़ी। मुझे बाघ की पूँछ दिखाई दी।
- एक बिल में सात मोटे चूहे रहते थे।
- कल रात हुई बारिश में मेरे कपड़े भीग गए।

दोहावली 9

(दोहे)

विद्या धन उद्यम बिना, कहो जु पावै कौन।
बिना डुलाए ना मिलै, ज्यों पंखा की पौन।।1।।

अति का भला न बोलना, अति की भली न चूप।
अति का भला न बरसना, अति की भली न धूप।।2।।

वृक्ष कबहुँ नहिं फल भखैं, नदी न संचै नीर।
परमारथ के करने, साधुन धरा सरीर।।3।।

बोली एक अमोल है, जो कोई बोलै जानि।
हिये तराजू तोल के, तब मुख बाहर आनि।।4।।

जो रहीम उत्तम प्रकृति, का करि सकत कुसंग।
चंदन विष व्याप्त नहीं, लिपटे रहत भुजंग।।5।।

काल करै सो आज कर, आज करै सो अब।
पल में परलै होयगी, बहुरि करैगा कब।।6।।

करत-करत अभ्यास के, जड़मति होत सुजान।
रसरी आवत-जात से, सिल पर परत निसान।।7।।

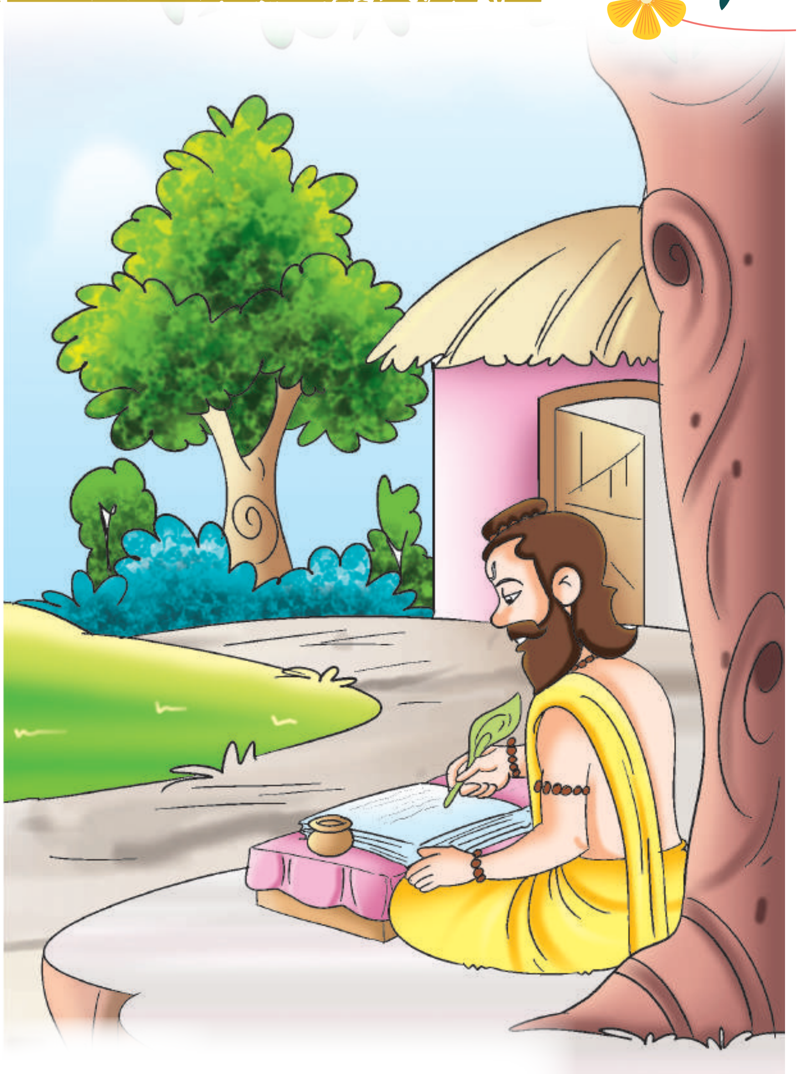

शब्द-पिटारा (Word-Meanings)

उद्यम = मेहनत (labour); उत्तम = सबसे अच्छा (best); डुलाए = झुलाना (swing); प्रकृति = स्वभाव (habit); पौन = हवा (air); कुसंग = बुरी संगति (bad company); अति = बहुत (more); विष = ज़हर (poison); भला = अच्छा (good); व्यापत = फैलना (spread); वृक्ष = पेड़ (tree); भुजंग = साँप (snake); भखैं = खाते हैं (eat); परलै = नाश (destory); संचै = इकट्ठा (collect); करत-करत = करते-करते (doing); नीर = पानी (water); जड़मति = मूर्ख (foolish); परमारथ = दूसरों की भलाई (beneficial of others); सुजान = चतुर (clever); हिये = हृदय (heart); रसरी = रस्सी (rope); तोल के = तौलकर (after balance); सिल = पत्थर (stone)।

श्रुतलेख (Dictation)

उद्यम, कबहुँ, कुसंग, व्याप्त, प्रकृति, भुजंग, बहुरि, जड़मति

अभ्यास (Exercises)

मौखिक (Oral)

- **इन प्रश्नों के उत्तर दो—**

(क) विद्या धन किसके द्वारा प्राप्त किया जा सकता है?

(ख) साँप किस पेड़ से लिपटे रहते हैं?

(ग) रस्सी के आने-जाने से किस पर निशान पड़ जाते हैं?

लिखित (Written)

1. इन प्रश्नों के उत्तर लिखो—

(क) आज का काम कल पर क्यों नहीं छोड़ना चाहिए?

____

(ख) बोलते समय किस चीज़ का ध्यान रखना चाहिए?

____

(ग) अभ्यास करते रहने से मूर्ख क्या बन जाता है?

____

2. सही उत्तर के सामने सही का निशान (✓) लगाओ—

(क) सज्जन लोग संपत्ति का संग्रह करते हैं—

अपनी भलाई के लिए ☐ दूसरों की भलाई के लिए ☐ मनोरंजन के लिए ☐

(ख) किस वृक्ष पर ज़हरीले साँप लिपटे रहते हैं?

पीपल के ☐ आम के ☐ चंदन के ☐

(ग) हमें आज का काम कब करना चाहिए?

कल ☐ आज ही ☐ कभी भी ☐

(घ) 'जड़मति' शब्द से क्या आशय है?

मूर्ख ☐ चतुर ☐ निपुण ☐

3. दोहों को पूरा कीजिए-

(क) बोली एक अमोल है, ____________________।

____________________, तब मुख बाहर आनि।।

4. स्तंभ 'अ' को स्तंभ 'ब' से मिलाओ—

स्तंभ 'अ'		स्तंभ 'ब'	
(क)	सुजान	(i)	हवा
(ख)	परलै	(ii)	चतुर
(ग)	प्रकृति	(iii)	नाश
(घ)	नीर	(iv)	स्वभाव
(ङ)	पौन	(v)	पानी

भाषा-ज्ञान (Language Knowledge)

1. दिए गए शब्दों के मानक रूप लिखिए—

(क) सरीर — ____________ (घ) अब — ____________

(ख) पौन — ____________ (ङ) निसान — ____________

(ग) रसरी — ____________ (च) कब — ____________

2. दिए गए शब्दों के तीन-तीन पर्यायवाची शब्द लिखिए-

(क) वृक्ष — ____________ ____________ ____________

(ख) नदी — ____________ ____________ ____________

(ग) पानी — ____________ ____________ ____________

(घ) हवा — ____________ ____________ ____________

आलोचनात्मक सोच (Critical Thinking)

- पाठ में लिखे दूसरे दोहे का मतलब अपने शब्दों में लिखिए।

समूह कार्य (Group Discussion)

- पाठ से अलग कबीरदास के दोहे अपनी कक्षा में सुनाइए।

रचनात्मक गतिविधि

- कबीर, रहीम और तुलसीदास के जो दोहे आपको अच्छे लगते हैं; उनका एक-एक दोहा दिए गए स्थान पर लिखिए।

कबीरदास — ____

रहीमदास — ____

तुलसीदास — ____

10 अकबर और बीरबल

(कहानी)

कई सौ वर्ष पहले की बात है, जब भारत में अकबर नाम का बादशाह राज करता था। वह बड़ा प्रतापी और बुद्धिमान था। वह विद्वानों, बुद्धिमानों और कलाकारों का बहुत आदर करता था। उसके दरबार में कई विद्वान थे। दरबार के नौ प्रमुख विद्वानों को 'नवरत्न' कहा जाता था। सभी विद्वान अपनी-अपनी विद्याओं और कलाओं में निपुण थे। इन नवरत्नों में से बादशाह अकबर को बीरबल बहुत प्रिय थे। बीरबल की सूझ-बूझ, चतुराई, विवेक, ज्ञान, व्यवहार, कुशलता, दूरदर्शिता आदि गुणों ने उसे बादशाह अकबर का चहेता बना दिया था।

बीरबल की चतुराई और सूझ-बूझ की अनेक कहानियाँ प्रसिद्ध हैं। यह कहानी उस समय की है जब बीरबल अकबर के दरबारी नहीं थे। आयु भी उनकी 16-17 वर्ष की थी। वे किले के निकट पान की दुकान पर काम करते थे। एक दिन बीरबल पान लगा रहा था। तभी किले का एक कर्मचारी उनकी दुकान पर आया। उसने बीरबल से पाव भर भीगा हुआ चूना माँगा।

बीरबल ने पूछा-"इतने चूने का तुम क्या करोगे?"

कर्मचारी बोला-"आपके पास कितना चूना है?"

"होने को तो मेरे पास तीन सेर चूना है। परंतु इतने चूने का तुम करोगे क्या?" बीरबल ने जिज्ञासा से पूछा।

क्या बताऊँ! बादशाह सलामत नहाकर जब बाहर आए तो मैंने उन्हें पान पेश किया उसे खाते-खाते वे एक कुरसी पर बैठ गए और हुक्म दिया कि पाव भर चूना ले आओ।"

"अरे चूने के साथ अपने लिए एक कफ़न भी लेते जाना।" बीरबल बोले।

"अरे! यह आप क्या कह रहे हैं?" राजकर्मचारी सहमते हुए बोला।

"तुम बादशाह के लिए पान लगाते हो।"

"जी।"

"कितने दिनों से।"

"कोई पंद्रह साल हो गए।"

"आप ऐसा कह सकते हैं? पान लगाने की कला में चतुर होने के कारण ही तो मुझे यह नौकरी मिली है।"

लेकिन आज पान में ज़्यादा चूना लग गया है। चूने से बादशाह की जीभ कट गई है। तुम्हें सबक सिखाने के लिए बादशाह ने इतना चूना मँगाया है, जो सारा-का-सारा तुम्हें खिलाया जाएगा।"

"इतना चूना एक साथ खाने से तो मैं मर जाऊँगा। क्या कोई बचने का भी उपाय है?" राजकर्मचारी घिघियाते हुए बोला। उसे अपनी मौत सामने दिखाई पड़ रही थी।

घबराओ मत। धीरज से काम लो। मैंने अपने घर के लिए एक सेर घी खरीदा था। इसे ले जाकर थोड़ा-थोड़ा करके सब पी जाओ। इससे न तो तुम्हारी जीभ कटेगी और न ही पेट को कोई हानि होगी। फिर बिना डर चूना लेकर बादशाह के पास जाओ।" बीरबल ने सलाह दी।

राजकर्मचारी घी पीकर बादशाह के सामने आया। उसे देखते ही बादशाह ने पूछा– "चूना लाए हो?"

"जी हाँ! हुज़ूर!" राजकर्मचारी ने उत्तर दिया।

"यहीं बैठकर सब खा जाओ।" बादशाह ने हुक्म दिया। राजकर्मचारी को वहीं बैठे-बैठे ही सारा चूना एक साथ खाना पड़ा।

अगले दिन जब उसी राजकर्मचारी ने बादशाह को पान पेश किया तो बादशाह ने अचंभे से पूछा- "इतना चूना खाकर भी तुम मरे नहीं।" राजकर्मचारी ने बीरबल द्वारा दी गई घी खाने की सलाह की सारी बातें बादशाह को बता दीं। इस प्रकार, बादशाह अकबर पर बीरबल की सूझ-बूझ, दूरदर्शिता और बुद्धिमानी का इतना प्रभाव पड़ा कि उन्होंने बीरबल को तुरंत बुलाकर अपना दरबारी बना लिया। इस प्रकार बीरबल अकबर के दरबार के नवरत्नों में शामिल हो गए।

शब्द-पिटारा (Word-Meanings)

प्रतापी = पराक्रमी (vigorous); बुद्धिमान = होशियार (intelligent); निपुण = चतुर (clever); प्रिय = प्यारे (lovely); सूझ-बूझ = समझ (sense); जिज्ञासा = चाह (desire); हुक्म = आज्ञा (order); हानि = नुकसान (loss); सलाह = राय (advice); अचंभा = आश्चर्य (astonish); कफ़न = मुर्दे के ऊपर डाला जाने वाला कपड़ा (shroud)।

श्रुतलेख (Dictation)

प्रतापी, घिघियाते, हुक्म, अचंभा, जिज्ञासा, निपुण, दूरदर्शिता

अभ्यास (Exercises)

मौखिक (Oral)

- **इन प्रश्नों के उत्तर दो—**

(क) राजकर्मचारी किसके पास आया?

(ख) राजकर्मचारी ने कितना चूना माँगा?

(ग) नौ प्रमुख विद्वानों को क्या कहा जाता था?

(घ) नवरत्नों में बादशाह अकबर के खास प्रिय कौन थे?

(ङ) बीरबल किसकी दुकान पर काम करते थे?

लिखित (Written)

1. इन प्रश्नों के उत्तर लिखो—

(क) बीरबल किसका चहेता बन गया था?

____

(ख) कैसी कहानियाँ प्रसिद्ध हैं?

____

(ग) बीरबल ने राजकर्मचारी से क्या पूछा?

____

(घ) बीरबल की दुकान किसके निकट थी?

____

(ङ) बीरबल ने अपने पास कितना चूना बताया?

____

2. सही उत्तर के सामने सही का निशान (✓) लगाओ—

(क) बादशाह अकबर थे—

प्रतापी ☐ बुद्धिमान ☐ प्रतापी और बुद्धिमान ☐

(ख) बादशाह अकबर के दरबार में थे—

नवरत्न ☐ अष्टरत्न ☐ सप्तरत्न ☐

(ग) बीरबल को अकबर का चहेता बना दिया था—

बीरबल के गुणों ने ☐ बीरबल की मूर्खता ने ☐ बीरबल की दिव्य दृष्टि ने ☐

(घ) बीरबल जब नवरत्न नहीं थे, तब वह काम करते थे—

पान की दुकान पर ☐ कपड़े की दुकान पर ☐ सुनार की दुकान पर ☐

(ङ) 'विवेक' शब्द का पाठ में क्या अर्थ लिया गया है?

साथी ☐ बुद्धि ☐ सहपाठी ☐

3. सही शब्द चुनकर रिक्त स्थान भरिए—

(क) भारत में __________ नाम का बादशाह राज करता था।

(ख) बादशाह बहुत __________ और __________ था।

(ग) __________ प्रमुख विद्वानों को __________ कहा जाता था।

(घ) __________ की चतुराई की अनेक कहानियाँ __________ है।

(ङ) __________ एक __________ की दुकान पर काम करते थे।

4. स्तंभ 'अ' को स्तंभ 'ब' से मिलाओ—

स्तंभ 'अ'	स्तंभ 'ब'
(क) नौ प्रमुख विद्वान	(i) बादशाह
(ख) अकबर	(ii) नवरत्न
(ग) प्रसिद्ध	(iii) बीरबल
(घ) सहमता	(iv) कहानियाँ
(ङ) सलाह	(v) कर्मचारी

भाषा-ज्ञान (Language Knowledge)

1. दिए गए शब्दों को अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए—

(क) जिज्ञासा — ____________

(ख) प्रिय — ____________

(ग) सलाह — ____________

(घ) निपुण — ____________

(ङ) हुक्म — ____________

2. दिए गए शब्दों से भाववाचक संज्ञा बनाइए—

(क) निर्मल — ________ (ख) चतुर — ________

(ग) अपना — ________ (घ) इतिहास — ________

(ङ) मानव — ________ (च) भूगोल — ________

3. दिए गए शब्दों के समानार्थी शब्द लिखिए—

(क) आदर — ________ (ख) दिन — ________

(ग) विवेक — ________ (घ) कहानी — ________

(ङ) निकट — ________ (च) जिज्ञासा — ________

आलोचनात्मक सोच (Critical Thinking)

- इस कहानी से आपको क्या शिक्षा मिलती है?

समूह कार्य (Group Discussion)

- अकबर और बीरबल कौन थे? इसे विस्तार से पढ़ के अपने शब्दों में लिखिए।

रचनात्मक गतिविधि

- अपने विद्यालय के पुस्तकालयों से कहानियों की पुस्तक लेकर अकबर-बीरबल की कहानियाँ पढ़िए और कक्षा में उसका वाचन कीजिए।

11 समय का हेर-फेर
(व्यंग्य)

एक गरीब मजदूर सारा दिन लहू-पसीना एक कर देने वाली मेहनत करने के बाद, शाम के समय दो आने पैसे, अपनी फटी-पुरानी चादर के कोने में बाँधकर शहर से निकला और मजदूरों की बस्ती की ओर चला। बहुत दूर उसने अपने कच्चे झोंपड़े के धुएँ को आकाश में चक्कर काटते देखा और देखते ही समझ गया कि उसकी माँ उसके लिए खाना पका रही है।

वह नंगे सिर, नंगे पाँव जा रहा था। उसके घर में उसकी बूढ़ी माँ के सिवाय और कोई सगा-संबंधी न था। उसके घर में एक चूल्हा और दो-चार बर्तनों के अलावा और अन्य कोई साज-सामान न था। मगर फिर भी वह खुश था, उसकी चादर में दो आने पैसे बँधे थे। उसके दिल में आशा थी।

सामने से एक बारात आ रही थी। मजदूर ने उसे देखा और उसे ख्याल आया—हो सकता है, कभी मेरा भी विवाह हो और मैं भी बारात लेकर विवाह करने जाऊँ। उस समय मैं कितना खुश होऊँगा, मेरे साथ-साथ बाजे बज रहे होंगे और बारात के आगे चलने वाले नौकरों ने उससे कहा—"एक तरफ हट जा लड़के।"

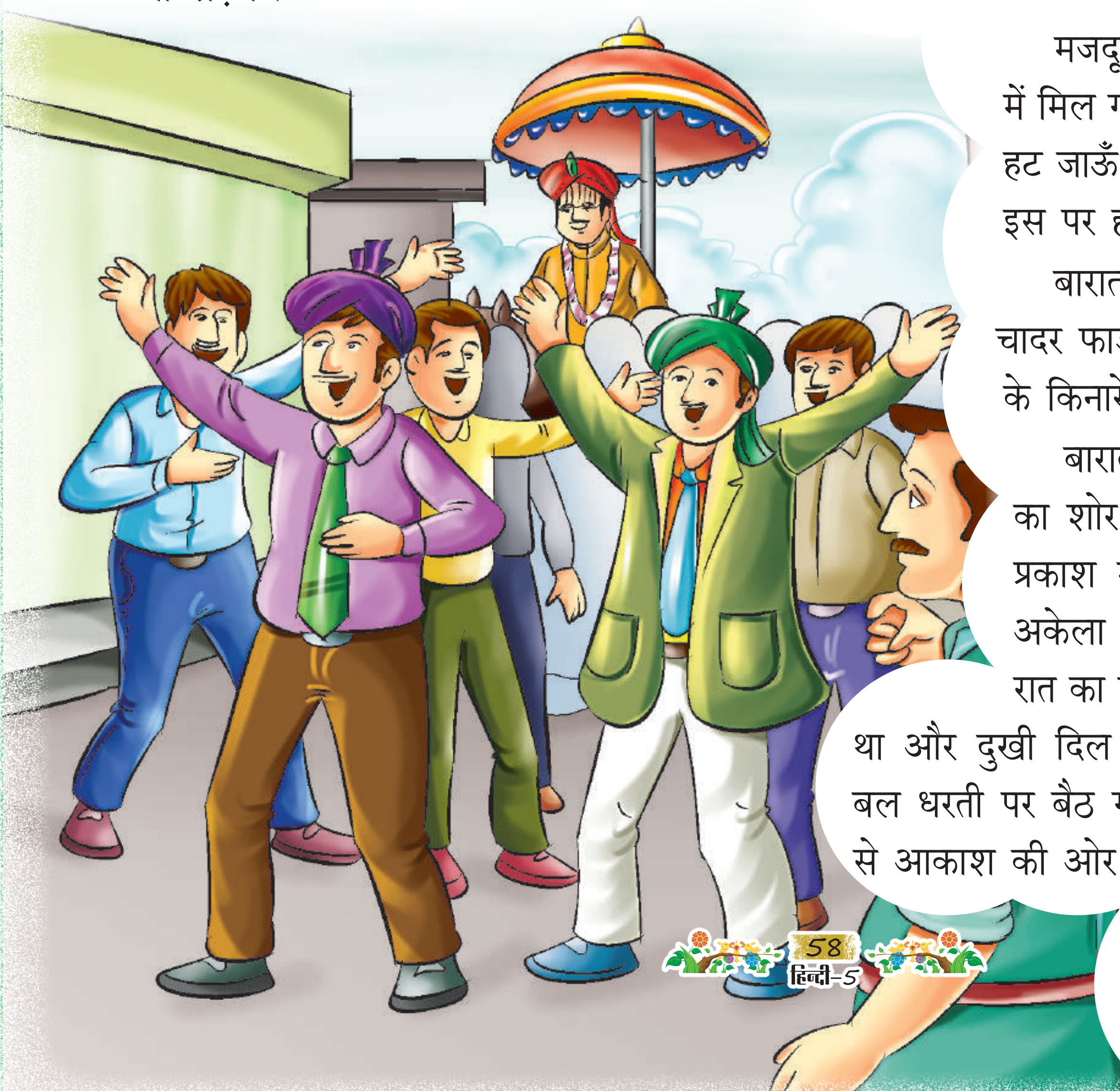

मजदूर के विवाह की कल्पना मिट्टी में मिल गई। वह जोर से बोला—"क्यों हट जाऊँ? सड़क सिर्फ तुम्हारी नहीं है। इस पर हम भी चल सकते हैं।"

बारात वालों ने उसे पीटा, उसकी चादर फाड़ दी और उसे उठाकर सड़क के किनारे झाड़ियों में फेंक दिया।

बारात चली गई। बारात के बाजों का शोर धीरे-धीरे दूर जाकर शहर के प्रकाश में गायब हो गया। अब वहाँ अकेला मजदूर था। उसके चारों तरफ़ रात का सन्नाटा था, निराशा का अँधेरा था और दुखी दिल की आहें थीं। वह घुटनों के बल धरती पर बैठ गया और अपनी दुःखी आँखों से आकाश की ओर उठकर बोला—

"हे प्रभु! हमारे पास न धन-दौलत है, न महल-अटारियाँ, न नौकर-चाकर। फिर तूने हमें क्यों पैदा किया? क्या सिर्फ इसलिए कि अमीरों के नौकर आएँ और हमें मार-पीट कर सड़क के किनारे फेंक दें। आखिर दुनिया को हमारी क्या जरूरत है?"

कई वर्ष बीत गए।

मजदूर ने दिन-रात काम किया। दिन का आराम बेचा, रात की नींद बेच दी, शतरंज की चालें चलीं, छल, कपट, धोखे से धन पाया और धनी बन गया।

अब वह मजदूर न था, अपने नगर का नामी रईस था। उसके संदूकों में रुपए और मोहरें थीं। उसके रहने के लिए एक विशाल महल था। उसकी सेवा करने को दास-दासियाँ थीं। उसकी सवारी के लिए घोड़े और पालकियाँ थीं और लोग उसके सामने सिर झुकाकर आते थे।

एक दिन शाम के समय वह पालकी पर सवार अपने घर लौट रहा था कि अचानक उसकी पालकी रुक गई। उसने पूछा—"क्या है?"

नौकर—"सरकार! मजदूरों की बारात आ रही है।"

धनी- "उन्हें कहो, एक ओर हट जाएँ।"

नौकर—"वे कहते हैं, सड़क सिर्फ तुम्हारे लिए नहीं है। इस पर हम भी चल सकते हैं।"

धनी-"मजदूरों को डंडे मारकर भगा दो। ये हमारा रास्ता क्यों रोकते हैं?"

डंडे बरसने लगे। मजदूर चीखें मारते हुए इधर-उधर भागने लगे। थोड़ी देर में वहाँ एक भी मजदूर न था। मगर उनकी चीखों से अमीर पालकी-सवार का दिमाग खराब हो गया। उसने कहा—"मुझे पालकी से उतार दो। मैं आराम करूँगा।"

नौकरों ने सड़क के किनारे कालीन बिछा दिए और अपने मालिक को आराम से बैठा दिया। उसे ऐसा मालूम हुआ जैसे वह यहाँ कभी पहले भी बैठ चुका था। शायद कई वर्ष पहले। शायद किसी पिछले जन्म में।

इस समय उसका शरीर अपनी ड्रेस में गरम था, उसके सामने उसके नौकर हाथ बाँधे खड़े थे और शहर में उसके राजसी महल का द्वार उसके लिए खुला था।

वह नरम गलीचे पर पालथी मारकर बैठ गया और अपनी आँखें आकाश की ओर उठाकर बोला—"हे प्रभो! इन अभागे मजदूरों के पास न धन-दौलत, न ही महल-अटारियाँ और न ही नौकर-चाकर हैं, फिर तूने इन्हें क्यों पैदा किया है? क्या सिर्फ इसलिए कि ये हम लोगों के रास्ते में आ खड़े हों और हमारा समय नष्ट करें। आखिर दुनिया को इनकी क्या जरूरत है?"

शब्द-पिटारा (Word-Meanings)

अटारी = घर के ऊपर का कमरा, अट्टालिका (second building); खीझना = झुंझलाना, चिढ़ना (angry); सन्नाटा = चुप्पी (silent); कल्पना = नई बात सोचना (imagine); आह = दु:ख, पीड़ा, कष्ट (sorrow); छल = धोखा (cheater); कपट = धोखा (cheater); नामी = प्रसिद्ध, मशहूर (famous); गलीचा = कालीन, चटाई (mat); पालथी = जमीन पर बैठने का एक ढंग (squat); जरूरत = आवश्यक (necessary); सिवाय = अलावा (only); रईस = धनी, धनवान (rich); मोहरें = सोने के सिक्के (gold coins); लहू-पसीना एक करना = कठिन परिश्रम करना (difficult work); दिल = हृदय, मन (heart); मेहनत = परिश्रम (hard work); आशा = चाह, इच्छा (hope); प्रकाश = रोशनी (light); गायब = छिपना, अंतर्ध्यान (hide); तरफ = ओर (side); दुनिया = संसार, विश्व (world); जी-जान से काम करना = मन लगाकर काम करना (to work hard); पोशाक = ड्रेस, पहनावा (uniform/dress); राजसी = राजा की तरह (as king/kingdom); द्वार = दरवाजे (gate)।

श्रुतलेख (Dictation)

गरीब, आकाश, मेहनत, साँझ, कल्पना, प्रकाश, सन्नाटा, शतरंज, विशाल, पालथी

अभ्यास (Exercises)

मौखिक (Oral)

- **इन प्रश्नों के उत्तर दो—**

(क) नए रईस ने मजदूरों की बारात देखकर अपने नौकरों से क्या कहा?

(ख) मजदूर अमीर कैसे बना?

(ग) रईस बन चुका मजदूर जब रास्ते से गुजर रहा था, तो उसकी पालकी क्यों रुक गई थी?

(घ) इस व्यंग्य से लेखक क्या बताना चाहता है?

लिखित (Written)

1. इन प्रश्नों के उत्तर लिखो—

(क) मजदूर खुश क्यों था?

(ख) मजदूर की कल्पना मिट्टी में क्यों मिल गई?

(ग) रईस की पालकी क्यों रुक गई?

(घ) पालकी से उतरकर रईस आराम क्यों करना चाहता था?

---

2. सही उत्तर के सामने सही का निशान (✓) लगाओ—

(क) मजदूर को रास्ते में क्या मिला था?

जुलूस ☐ बारात ☐ राजसी सवारी ☐

(ख) मजदूर की चादर में कितने पैसे बँधे थे?

चार आने ☐ छह आने ☐ दो आने ☐

(ग) बारात वालों ने मजदूर के साथ कैसा व्यवहार किया?

उसे पीटा ☐ उसकी चादर फाड़ दी ☐ ये सभी व्यवहार ☐

(घ) मजदूर ने अमीर बनने के लिए क्या किया?

जी-तोड़ मेहनत ☐ छल-कपट ☐ ये सभी ☐

3. सही शब्द चुनकर रिक्त स्थान भरिए—

(क) उसके चारों तरफ दुखी दिल की ______ थीं।

(ख) मजदूर ______ मारते हुए इधर-उधर भागने लगे।

(ग) उसकी ______ के लिए घोड़े और पालकियाँ थीं।

(घ) ______ पैसे अपनी फटी चादर में बाँधकर मजदूर शहर से निकला।

(ङ) लोग अब मजदूर ______ के सामने सिर झुकाकर जाते थे।

4. स्तंभ 'अ' को स्तंभ 'ब' से मिलाओ—

स्तंभ 'अ'	स्तंभ 'ब'
(क) मेहनत	(i) उजाला
(ख) गरीब	(ii) परिश्रम
(ग) प्रकाश	(iii) निर्धन

5. सही कथन के सामने (✓) तथा गलत कथन के सामने (✗) लगाओ—

(क) मजदूर ने दिन-रात एक किए, शतरंज की चालें, छल आदि किया और धनी बन गया। ☐

(ख) गरीब मजदूर के घर में उसकी बूढ़ी माँ के अलावा और कोई सगा-संबंधी भी था। ☐

(ग) गरीब मजदूर सुबह के समय दो आने पैसे लेकर निकला।

(घ) बारात वालों ने मजदूर को पीटा, उसकी चादर फाड़ दी और उसे उठाकर सड़क के किनारे झाड़ियों में फेंक दिया।

(ङ) वह नरम गलीचे पर पालथी मारकर बैठ गया और अपनी आँखों से आकाश की ओर देखने लगा।

6. दिए गए संकेतो को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए—

प्रश्न 1 —बाजों का शोर किसमें गायब हो गया था?

प्रश्न 2 —चारों ओर किसका अँधेरा था और किसकी आहें थीं?

प्रश्न 3 —"आखिर दुनिया को हमारी जरूरत क्या है?" किसने कहा?

प्रश्न 4 —मजदूर ने भगवान से क्या शिकायत की थी?

प्रश्न 5 —'सिर्फ' और 'गायब' शब्दों को अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

भाषा-ज्ञान (Language Knowledge)

1. निम्नलिखित मुहावरों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए—

(क) जी-जान से काम करना — ____________

(ख) दिमाग खराब होना — ____________

(ग) हाथ बाँधे खड़े रहना — ____________

(घ) समय नष्ट करना — ____________

(ङ) लहू-पसीना एक करना — ____________

2. नीचे दिए गए वाक्यों में से सर्वनाम और विशेषण अलग-अलग करके लिखिए—

वाक्य		सर्वनाम	विशेषण
(क) वह एक गरीब मजदूर था।	—	________	________
(ख) घर में उसके सिवाय बूढ़ी माँ थी।	—	________	________
(ग) उसे ख्याल आया कि मैं भी सुंदर बारात निकालूँगा।	—	________	________
(घ) वह सजल आँखें आकाश की ओर करके बोला।	—	________	________
(ङ) वह नरम गलीचे पर पालथी मारकर बैठ गया।	—	________	________

3. नीचे दिए गए वाक्यों में कारक बताइए—

(क) माँ उसके लिए खाना पका रही हैं। ____________

(ख) वह घर में था। ____________

(ग) वह धरती पर बैठ गया। ____________

(घ) मजदूर ने उसे देखा। ____________________

(ङ) उसने मजदूर को पीटा। ____________________

4. सही स्थान पर सही विराम-चिह्न लगाकर वाक्य को पुनः लिखिए—

(क) वह बोला हे प्रभु इन अभागों को तूने क्यों पैदा किया

____

(ख) उसने कहा मुझे पालकी से उतार दो मैं आराम करूँगा

____

(ग) बारात के आगे चलने वाले नौकरों ने उससे कहा एक तरफ हट जा छोकरे

____

5. निम्नलिखित अपठित गद्यांश को पढ़कर नीचे पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए—

वार्तालाप में हमको व्यापारिक बातचीत और निजी बातचीत में थोड़ा अंतर करना होगा। व्यापारिक बातचीत भी अशिष्ट नहीं होनी चाहिए, किंतु वह नपी-तुली हो सकती है। निजी संबंध की बातचीत में आत्मीयता का अभाव नहीं रहना चाहिए और थोड़ा-सा कष्ट उठाकर बात को पूरी तौर से समझा देना अपना कर्तव्य हो जाता है। कुछ लोग सबके साथ निजी संबंध की तरह ही वार्तालाप करते हैं। यह बुरा नहीं है, किंतु बात उतनी ही कही जाए, जितनी निभाई जा सके।

प्रश्न (क)—किन-किन बातों में अंतर करना चाहिए?

प्रश्न (ख)—कैसी बातचीत अशिष्ट नहीं होनी चाहिए?

प्रश्न (ग)—निजी बातचीत में किसका अभाव नहीं रहना चाहिए?

प्रश्न (घ)—कुछ लोग वार्तालाप कैसे करते हैं?

प्रश्न (ङ)—'वार्तालाप' और 'आत्मीयता' शब्द का अर्थ लिखकर वाक्य में प्रयोग कीजिए।

आलोचनात्मक सोच (Critical Thinking)

- **श्री प्रेमचंद द्वारा लिखित कहानी 'नशा' पढ़िए और उसकी इस कहानी से तुलना कीजिए।**

समूह कार्य (Group Discussion)

- **क्या आपने किसी गरीब या असहाय को अपमानित होते हुए देखा है? यदि हाँ, तो उस समय उसके मन में क्या प्रतिक्रियाएँ उभरी होंगी, इस बारे में अपने सहपाठियों से चर्चा कीजिए।**

रचनात्मक गतिविधि

- **हमें 'अमीर हो या गरीब' सभी का सम्मान करना चाहिए। इस विषय पर पाँच से छः पंक्तियाँ लिखें।**

फूलचंद और पंखुरी 12

(कहानी)

चारों भाई गायब ..... कहाँ चले गए? पहले तो किसी को कानों कान खबर तक न हुई। छोटी रानी, सुमित्रा ने अपनी दासी से एक बार यूँ ही पूछ लिया था – ''अरे चैती, शत्रुघ्न ने दूध पिया कि नहीं? दूध के नाम भर से ही तो उसे बुखार चढ़ जाता है।''

''मैं भी तो सबसे छोटे भैया को ही ढूँढ़ रही हूँ।'' चैती परेशान हो गई।'' ''अरे होगा यहीं-कहीं देख तो सही।'' कहते हुए सुमित्रा बाहर निकली, महारानी कौशल्या गृह देवता की पूजा कर लौट रही थीं। उधर कैकेयी स्वयं बाग़ में पौधों की देखभाल कर रही थीं। माली फूलचंद से कह रही थीं – ''अरे, स्वर्णमंजरी की इस डाली को काट दो। तभी तो इसमें फूल खिलेंगे। अभी कार्तिक का महीना है। बस, अगले महीने से कलियाँ खिलनी आरंभ हो जाएँगी। अरे, तेरे हाथ में लाल-पीले धागे किसलिए रे?''

''आज भैयादूज है न! हम पेड़ों की डाल पर इन धागों को बाँधते हैं। हमारा उनसे जन्म-जन्म का नाता है।'' सकुचाते हुए माली फूलचंद ने कहा।

सुमित्रा ने कौशल्या को रोका – ''दीदी, सब बच्चे कहाँ चले गए हैं?''

''यहीं-कहीं होंगे।'' कौशल्या मुस्कुराई। ''कैकेयी, तुमने राजकुमारों को बाग़ों में कहीं देखा है?''

''नहीं तो।'' कैकेयी उनके साथ चलने लगी, ''जब मैं कमरे से निकली थी, तब भरत और राम तो आचार्य जी के पास बैठे हुए थे।

''और लक्ष्मण?'' सुमित्रा चौंकी। ''देखो न दीदी, सब बच्चे कहाँ चले गए हैं? शत्रुघ्न ने तो दूध भी नहीं पिया।''

''अरे घबराओ मत,'' कौशल्या समझाने लगी – ''आज भैयादूज है। आचार्य ने उन्हें जल्दी छुट्टी दे दी होगी। चारों भाई कहीं खेल रहे होंगे।''

जाते-जाते कैकयी बोली – ''राम है तो चिंता की कोई बात नहीं। मेरा बेटा अपने भाइयों पर ठीक नजर रखेगा। चल, भीतर देख तो सही।''

प्रासाद की सीढ़ी चढ़ते हुए कैकयी कुछ उदास होकर बोली – ''आज भैयादूज का दिन है। मुझे अपने दोनों भाइयों की बहुत याद आ रही है। उन्हें टीका लगाए कितने दिन हो चुके हैं। उसका गला शायद कुछ भारी होने लगा था।

कौशल्या उसके कंधों पर हाथ फेरने लगी – ''लड़कियों का जीवन ही ऐसा है – कैकेयी! मायके की चौखट पार कर ससुराल पहुँची नहीं कि बस वहीं की होकर रह जाती हैं। नैहर तो बस याद बनकर मन में बसता रहता है।''

सुमित्रा कह रही थी – ''मैं तो बड़े भैया का नाम लेकर दरवाज़े पर ही टीका लगा देती हूँ और क्या कर सकती हूँ।''

कौशल्या ने पेड़ों की ओर इशारा किया – ''कई लोग आज के दिन पेड़ों पर धागा बाँधते हैं। उनके दान के बदले हम इतना ही तो कर सकते हैं। क्यों? है न!''

तीनों इधर-उधर देखने लगीं। दासियाँ कमरे से आँगन तक दौड़ने लगीं। कैकेयी की दासी मंथरा आँचल से आँख मल रही थी और बेवजह सबको डाँट रही थी – ''अरे! इतना बड़ा घर, नौकर-चाकर, दरवाज़े पर पहरेदार-मगर किसी को नहीं पता कि चारों भाई गए कहाँ? सबकी नाक के दोनों ओर आँखें हैं कि अंडे?''

बेचारे जलद के ऊपर राजकुमारों की देखभाल की जिम्मेदारी है। कौशल्या उसी से कहने लगी – ''जलद, बच्चों पर ध्यान तो रखना चाहिए। छत पर जाकर तो देख।''

बेचारा जलद! जल्दी-जल्दी सीढ़ी चढ़ने लगा। आपाधापी में उसकी तोंद पर पसीने की बूँदें चमकने लगीं।

पर छत पर भी कोई नहीं था। तो फिर चारों के चारों भाई कहाँ गए?

छोटी रानी सुमित्रा की आँखों में आँसू आ गए। वह सोच रही थी – 'सचमुच, कितने दिनों के बाद कितना कुछ करके – कितनी मनौतियाँ मानकर संतान प्राप्त हुई और आज! हे भगवान! चारों बेटों में से किसी पर भी कोई आँच न आने पाए।'

तीनों माताएँ अब स्वयं बच्चों को ढूँढ़ने चल पड़ीं। इधर-उधर देखकर पहुँची प्रासाद के पीछे – बग़ीचे में जिधर फूलचंद माली रहता है।

उसकी कुटिया के ऊपर कोहड़े की लता है। उसके ठीक सामने नींबू का एक पेड़ है। उसी समय कुटिया के सामने फूलचंद की बेटी पंखुरी अपने भाई नीलकंज को टीका लगाने के लिए बैठी थी। पास में

ही एक दीया जल रहा था। एक छोटी-सी मिट्टी की थाली में दूध, धान, फूल और चंदन रखे थे। नहा-धोकर एक साफ़ धोती पहनकर नीलकंज बैठा हुआ था। पंखुरी भी आँखों में काजल और बालों में फूल लगाए, खूब उछल रही थी।

मंथरा ने दूर से ही आवाज़ लगाई – ''अरे ओ फूलचंद!''

फूलचंद बाहर निकल आया। तीनों रानियों को देखकर उसके कदम ठिठक गए – ''क्या बात है, बड़ी माँ?''

''चारों राजकुमार कहाँ गए? सभी जगह ढूँढ़ रही हूँ। कहीं दिखते ही नहीं।'' कौशल्या काफ़ी चिंतित होकर पूछ रही थी।

''राजकुमार लोग?'' फूलचंद मुस्कुराने लगा।

''अरे मुआ, इधर हमारी जान जा रही है, और तू हँस रहा है?'' मंथरा गरम तेल में पकौड़ी की तरह फड़फड़ाने लगी।

''मेरे साथ आइए, और वह देखिए'' उसने झाड़ियों के पीछे, नींबू के पेड़ के नीचे इशारा किया।

तीनों रानियाँ ठगी-सी चकित खड़ी रह गईं। राम, भरत, लक्ष्मण और शत्रुघ्न-चारों भाई नींबू के पेड़ के नीचे एक पत्थर पर चुपचाप बैठे देख रहे हैं कि कैसे पंखुरी अपने भाई नीलकंज को भैयादूज का टीका लगा रही है। उसने

नीलकंज की आरती उतारी, नीलकंज ने उसका सिर चूम लिया। चारों राजकुमारों की निगाहों में उदासी छलक आई।

कौशल्या ने आकर चुपचाप राम के सिर पर अपना हाथ रखा – ''क्या बात है मेरे लाल?''

''माँ, हमारी एक भी बहन क्यों नहीं है?''

भरत ने कैकेयी की ओर देखा – ''हम चारों भाइयों के अगर एक बहन होती, तो वह भी पंखुरी की तरह हमें टीका लगाती, है कि नहीं माँ?''

लक्ष्मण बोल पड़ा – ''शत्रुघ्न भाई न होकर बहन होती तो कुछ काम बनता।''

''हूँ।'' शत्रुघ्न के पौरुष को ठेस पहुँची।

सब एक बार तो हँस दिए, फिर तुरंत उदास हो गए।

कौशल्या बोली – ''बहन नहीं है तो क्या हुआ? तुम चारों भाई तो हम तीनों रानियों के जन्म-जन्म की तपस्या का फल हो। सपनों से जो तारे हमारे आँचल में आ गिरे – तुम चारों वही फूल हो।''

राम मानो कुछ भी नहीं सुन रहा था। उसकी दृष्टि खोई-खोई सी थी।

तभी पंखुरी ने जाकर तीनों माताओं को प्रणाम किया – ''एक बात पूछूँ, रानी माँ?''

''क्या है बेटी?'' कौशल्या ने हँसकर पूछा।

''आज मैं इन चारों राजकुमारों को टीका लगा सकती हूँ?''

कैकेयी मुस्कुराने लगी – ''क्यों नहीं?''

मंथरा फिर झनझना उठी – ''माली की लड़की और राजकुमारों को टीका लगाएगी?''

कैकेयी ने डाँटा – ''तो क्या हुआ?''

लक्ष्मण अपनी नाक के पास हाथ हिला-हिला कर चिढ़ाने लगे – ''बुढ़िया, ज़हर की पुड़िया।''

''सुन रही हो छोटी रानी?'' मंथरा शिकायत करने लगी – ''मैं बुढ़िया हूँ?''

''नहीं, तू तो सिर्फ़ सोलह वर्ष की है।'' सुमित्रा भी हँसने लगी।

पंखुरी एक बार फिर से थाली सजाकर लाई, चारों भाई पंखुरी से भैयादूज का टीका लगवाने लगे।

कौशल्या की आँखों में आँसू भर आए। वह मन-ही-मन चारों बेटों से कह रही थी – 'तुमने एक बहन से भैयादूज का टीका लगवाया है, इसकी लाज रखना।'

शब्द-पिटारा (Word-Meanings)

बुखार = ज्वर (fever); स्वर्णमंजरी = एक पेड़ का नाम (a name of tree); चिंता = परेशानी (problem); उदास = दुखी (sad); पहरेदार = चौकीदार (watchman); प्रासाद = महल (palace); ठिठकना = रुकना (stop); चुपचाप = शांत (silent); दृष्टि = नज़र (sight); लाज = इज़्ज़त (respect)।

श्रुतलेख (Dictation)

कार्तिक, स्वर्णमंजरी, पंखुरी, भैयादूज, चिंतित, टीका, मुस्कुराने, फड़फड़ाने

अभ्यास (Exercises)

मौखिक (Oral)

- **इन प्रश्नों के उत्तर दो—**

(क) दूध पीने के नाम पर बुखार किसे चढ़ जाता था?

(ख) कौशल्या के बेटे का नाम बताइए।

(ग) कैकेयी ने फूलचंद से किसकी डाली काटने को कहा था?

(घ) फूलचंद माली के हाथ में कैसे रंग के धागे थे?

(ङ) पाठ में किस त्योहार का जिक्र किया गया है?

लिखित (Written)

1. इन प्रश्नों के उत्तर लिखो—

(क) सुमित्रा ने अपनी दासी से क्या पूछा?

____

(ख) महारानी कौशल्या कहाँ से लौट रही थीं?

____

(ग) बाग़ में पौधों की देखभाल कौन कर रही थी?

____

(घ) फूलचंद ने सकुचाते हुए क्या कहा?

____

(ङ) सुमित्रा ने कौशल्या को रोककर क्या कहा?

____

2. सही उत्तर के सामने सही का निशान (✓) लगाओ—

(क) छोटी रानी का क्या नाम था?

कौशल्या ☐ कैकेयी ☐ सुमित्रा ☐

(ख) कैकेयी की दासी की नाम क्या था?

मंथरा ☐ स्वर्णमंजरी ☐ पंखुरी ☐

(ग) गृह-देवता की पूजा करके कौन लौट रही थी?

कौशल्या ☐ पंखुरी ☐ कैकेयी ☐

(घ) शत्रुघ्न को दूध पीने के नाम पर क्या होने लगता है?

बुखार चढ़ जाता है ☐ उलटी आने लगती है ☐ पेचिश लग जाती है ☐

(ङ) सुमित्रा की दासी का क्या नाम था?

चैती ☐ फूलकुमारी ☐ मंथरा ☐

3. स्तंभ 'अ' को स्तंभ 'ब' से मिलाओ—

स्तंभ 'अ'	स्तंभ 'ब'
(क) कौशल्या	(i) नीलकंज की बहन
(ख) चैती	(ii) महारानी
(ग) मंथरा	(iii) सुमित्रा की दासी
(घ) फूलचंद	(iv) कैकेयी की दासी
(ङ) नीलकंज	(v) बाग़ का माली
(च) पंखुरी	(vi) फूलचंद का बेटा

4. सही शब्द चुनकर रिक्त स्थान भरिए—

(क) मैं भी तो ____________ भैया को ही ढूँढ़ रही हूँ।

(ख) महारानी ____________ गृह-देवता की पूजा कर लौट रही थीं।

(ग) ____________ स्वयं बाग़ में पौधों की देखभाल कर रही थी।

(घ) फूलचंद ____________ की इस डाली को काट दो।

(ङ) अगले महीने से ____________ खिलनी आरंभ हो जाएँगी।

भाषा-ज्ञान (Language Knowledge)

1. दिए गए वाक्यों को निर्देशानुसार बदलकर लिखिए—

(क) सबकी नाक के दोनों ओर आँखें हैं। (भूतकाल)

____

(ख) पंखुरी बालों में फूल लगाए खूब उछल रही थी। (भविष्यत् काल)

(ग) तीनों रानियाँ चारों भाइयों को देख चकित रह गईं। (वर्तमान काल)

(घ) पंखुरी ने चारों भाइयों को भैयादूज का टीका किया। (निषेधात्मक वाक्य)

2. दिए गए शब्दों के अर्थों को समझते हुए अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए—

(क) राजी (खुशी)

राज़ी (सहमत)

(ख) गज (माप)

गज (हाथी)

(ग) ज़रा (थोड़ा-सा)

जरा (बुढ़ापा)

आलोचनात्मक सोच (Critical Thinking)

- **दशरथ पुत्रों के बचपन की जानकारियाँ इकट्ठा करके अपने शब्दों में लिखिए।**

समूह कार्य (Group Discussion)

- **भैयादूज क्यों मनाया जाता है? अपने माता-पिता से चर्चा कीजिए।**

रचनात्मक गतिविधि

- **तुम अपने भाई अथवा बहन से बहुत प्यार करते होंगे। अपना यह प्यार तुम कैसे दर्शाते हो?**

बाजरे की रोटियाँ 13
(संवाद)

पात्र-परिचय

रोहित	–	आठ साल का एक बर्मी लड़का, कुछ मोटा।
मोहित	–	नौ साल का बर्मी लड़का, रोहित का दोस्त।
शोभित	–	आठ साल का बर्मी लड़का, रोहित का दोस्त।
स्वाति	–	सात साल की बर्मी लड़की, रोहित की दोस्त।
रामदीन	–	जनता की दुकान का प्रबंधक। (इसका अभिनय कोई लंबे कद का लड़का नकली मूँछें और चश्मा लगाकर कर सकता है।)

(पंछियों के चहचहाने के साथ-साथ पर्दा उठता है। दूर कहीं मुर्गा बाँग देता है। कुत्ता भौंकता है। कहीं प्रार्थना की घंटियाँ बजती हैं। रोहित आता है, जम्हाई लेकर अपने को सीधा करता है।)

रोहित – माता-पिता धान लगाने खेतों मे चले गए हैं। जब तक माँ खाना बनाने के लिए लौट कर नहीं आती, मुझे घर की देखभाल करनी है। देखता हूँ, माँ ने मेरे लिए नाश्ते में क्या बनाकर रखा है।

(वह अलमारी की तरफ़ जाता है और उसे खोलकर देखता है। एक तश्तरी निकालते हुए देखता है कि उसमें बाजरे की चार रोटियाँ हैं। वह होठों पर जीभ फेरता है और मुस्कुराता है।)

रोहित – आहा... मज़ा आ गया। बाजरे की रोटियाँ मेरी मनपसंद चीज़।

(वह पेट मलता हुआ रोटियों को मेज़ पर रखता है और बैठ जाता है।)

रोहित – आज तो डटकर नाश्ता होगा।

(वह एक रोटी उठाकर मुँह में डालने लगता है, तभी कोई दरवाज़े पर दस्तक देता है।)

मोहित – रोहित.. ए रोहित! दरवाज़ा खोलो। मैं हूँ मोहित।

रोहित – गजब हो गया। यह तो भुक्खड़ मोहित है। उसकी नज़र में रोटियाँ पड़ीं तो ज़रूर माँगेगा। मैं इन्हें छिपा देता हूँ।

मोहित – दरवाज़ा खोलो रोहित, तुम क्या कर रहे हो? इतनी देर लगा दी।

रोहित – मैं इन्हें कहाँ छिपाऊँ? (रेडियो की तरफ़ देखकर) मैं तश्तरी रेडियो के पीछे छिपा दूँगा। (ज़ोर-से) अभी आता हूँ मोहित... ज़रा रुको।

(दरवाज़ा खोलता है।)

रोहित – आओ, मोहित। अंदर आ जाओ। (मोहित अंदर आता है।)

मोहित – दरवाज़ा खोलने में इतनी देर क्यों लगाई?

रोहित – कुछ खास नहीं... मैंने अभी-अभी नाश्ता किया और मुँह धोने लगा था। बोलो, सुबह-सुबह कैसे आना हुआ?

मोहित – क्या? यह मत कहना कि तुम भूल गए थे। परीक्षा के बारे में रेडियो पर खास सूचना आने वाली है।

रोहित – लेकिन तुम्हारे घर भी तो रेडियो है।

मोहित – वह खराब है। इसीलिए सोचा कि तुम्हारे रेडियो पर सुनूँगा।

(मोहित गोल मेज़ के पास बैठ जाता है।)

मोहित – रेडियो उठाकर यहीं ले आओ ताकि हम आराम से लेटे-लेटे सुन सकें।

रोहित – मोहित, हमारे रेडियो में भी कुछ खराबी है।

मोहित – आओ, कोशिश करके देखें। मैं उठाकर ले आता हूँ।

(मोहित अलमारी की तरफ़ जाने लगता है।)

रोहित – नहीं, नहीं। मोहित, इसे मत छूना। छुओगे तो करंट लगेगा। (मोहित रुक जाता है।)

मोहित – मैंने तो इस छू ही लिया था। भई, मैं वह खबर ज़रूर सुनना चाहता हूँ। तिन सू के घर जाता हूँ। तुम आओगे।

रोहित – नहीं। अच्छा, फिर मिलेंगे।

(मोहित तेज़ी से बाहर निकल जाता है।)

रोहित – (गहरी साँस लेकर) बाल-बाल बचे। अब चलकर नाश्ता किया जाए। मेरे पेटे में चूहे दौड़ने लगे हैं।

(रोहित तश्तरी उठाकर मेज़ के पास आता है। एक रोटी उठाकर खाने लगता है, तभी दरवाज़े पर दस्तक सुनाई पड़ती है।)

रोहित – (तश्तरी नीचे रखकर) जाने अब कौन आ टपका।

स्वाति – रोहित, दरवाज़ा खोलो। मैं हूँ स्वाति।

रोहित – बाप रे! यह तो स्वाति है। उसे बाजरे की रोटियाँ मेरी ही तरह बहुत अच्छी लगती हैं और वह हमेशा भूखी रहती है। मुझे रोटियाँ छिपा देनी चाहिए। लेकिन कहाँ? वह तो कुछ खाने की चीज़ ढूँढ़ने के लिए सारे कमरे की तलाशी लेगी।

स्वाति – (फिर दरवाज़ा खटखटाकर) रोहित, दरवाजा खोलो न...इतनी देर क्यों लगा रहे हो?

रोहित – कहाँ छिपाऊँ? कहाँ छिपाऊँ? कमरे के चारों तरफ़ देखकर ठीक, इसे फूलदान के अंदर छिपा देता हूँ।

(रोहित फूलदान में तश्तरी रखकर दरवाज़ा खोलता है। स्वाति कागज़ में लिपटा बंडल उठाए कमरे में आती है।)

स्वाति – दरवाज़ा खोलने में इतनी देर क्यों लगा दी?

रोहित – मैंने अभी-अभी नाश्ता किया था और मुँह धोने लगा था। आओ, बैठो।

(रोहित और स्वाति मेज़ के इर्द-गिर्द बैठ जाते हैं।)

स्वाति – मुझे अभी-अभी तुम्हारे माता-पिता मिले थे। तुम्हारी माता जी ने कहा कि तुम्हारे लिए बाजरे की कुछ रोटियाँ रखी हैं। मैंने सोचा...

रोहित – बाजरे की रोटियाँ? हाँ, थीं तो। लेकिन मैंने सब खा लीं।

स्वाति – एक भी नहीं बची?

रोहित – सॉरी स्वाति, मैंने सब खा लीं। (हाथ से पेट को मलते हुए) पेट एकदम भर गया है। लगता है आज तो दोपहर का खाना भी नहीं खाया जाएगा।

स्वाति – बहुत बुरी बात है। माँ ने दाल के पापड़ बनाए थे। मैंने सोचा तुम्हारे साथ बाँटकर खाऊँगी। मैं चार पापड़ लाई हूँ। दो तुम्हारे लिए, दो अपने लिए सोचा था तुम्हारी बाजरे की रोटियाँ और मोटे पापड़, दोनों का बढ़िया नाश्ता होगा।

(स्वाति कागज़ का बंडल खोलती है और पापड़ निकालती है। वह उन्हें एक तश्तरी में रखकर मेज़ पर रखती है।)

स्वाति – गरमागरम हैं और स्वादिष्ट भी। तुम्हारी भी क्या बदकिस्मती है कि तुम्हारा पेट बिलकुल भरा हुआ है। लेकिन मैं समझता हूँ कि वह चारों पापड़ तो खा नहीं सकती। शायद दो मेरे लिए छोड़ जाए।

स्वाति – (एक पापड़ उठाकर) क्या इन्हें निगलने के लिए चाय है?

रोहित – हाँ-हाँ, अलमारी पर है। मैं ले आता हूँ।

(रोहित चाय की केतली और दो कप उठा लाता है। स्वाति एक कप में चाय डालती है।)

स्वाति – तुम तो चाय पिओगे नहीं। पेट भरा होगा।

रोहित – मेरा पेट भूख से गुड़-गुड़ कर रहा है। भगवान करे स्वाति को यह गुड़-गुड़ न सुनाई दे।

स्वाति – (पापड़ खाते हुए) यह कैसी आवाज़ है?

रोहित – आवाज़? कैसी आवाज़?

स्वाति – हल्की-सी गड़गड़ाने की आवाज़। यह फिर हुई। सुना तुमने?

रोहित – यह....? हमारे घर में चूहा घुस आया है। वही यह आवाज़ करता है। (दरवाज़े पर दस्तक)

रोहित – कौन?

शोभित – मैं हूँ शोभित।

(रोहित उठने लगता है।)

स्वाति – तुम बैठे रहो। आराम करो। तुम्हारा पेट बहुत भरा हुआ है। मैं खोलती हूँ।

(स्वाति दरवाज़ा खोलती है। शोभित गेंदे के फूलों का गुच्छा लिए आता है।)

शोभित – आहा! स्वाति भी यहाँ है।

स्वाति – आओ शोभित।

शोभित – (मेज़ के पास जाकर) हैलो रोहित! क्या बात है? तुम्हारी तबियत ठीक नहीं है क्या?

रोहित – हैलो शोभित।

(स्वाति और शोभित मेज़ के पास बैठते हैं।)

स्वाति – (शोभित से) वह ठीक है। बस, नाश्ते में बाजरे की रोटियाँ ज़्यादा खा ली हैं।

शोभित – (दाल के पापड़ों की तरफ़ देखकर) आहा! दाल के पापड़।

स्वाति – मैं रोहित के लिए भी लाई थी। लेकिन चूँकि उसका पेट एकदम भरा हुआ है। तुम इन्हें खत्म करने में मेरी मदद करो।

शोभित – नेकी और पूछ-पूछ? तुम्हारी माँ गाँव में सबसे बढ़िया पापड़ बनाती है। (शोभित एक पापड़ उठाकर खाने लगता है। स्वाति उसके लिए कप में चाय डालती है।)

स्वाति – (कप देकर) यह लो चाय के साथ खाओ।

शोभित – (चाय की चुस्की लेकर होंठों पर जीभ फिराकर) बहुत बढ़िया चाय है। मेरी खुश किस्मती जो इस वक्त यहाँ आ गया।

रोहित – तुम्हारी खुशकिस्मती और मेरी बदकिस्मती।

(स्वाति और शोभित एक-एक पापड़ खा लेते हैं और स्वाति दूसरा उठाती है।)

स्वाति – यह लो शोभित। एक और खाओ।

शोभित – नहीं, मेरे लिए तो एक ही काफ़ी है।

स्वाति – आधा तो ले लो। दूसरा आधा मैं खा लूँगी। एक रोहित के लिए रहा। शाम को खा लेगा।

शोभित – तुम ज़ोर डालती हो तो ले लेता हूँ।

रोहित – चलो, एक तो मेरे लिए छोड़ रहे हैं। मैं भूख से मरा जा रहा हूँ।

शोभित – यह आवाज़ कैसी है?

स्वाति – यहाँ एक बड़ा चूहा घुस आया है। रोहित कहता है, वही यह आवाज़ करता है।

शोभित – ऐसा लगता है कि किसी का पेट भूख से गुड़गुड़ा रहा है।

(शोभित और स्वाति पापड़ खाकर खत्म करते हैं।)

स्वाति – अच्छा, ये फूल कैसे हैं?

शोभित – ओह! मैं तो भूल ही गया था। मेरी माँ ने कहा है कि रोहित की माँ ने कल दुकान से एक फूलदान खरीदा था। उन्होंने ये फूल उस फूलदान में रखने के लिए भेजे हैं। (इधर-उधर देखता है। उसे अलमारी के ऊपर फूलदान दिखाई देता है।) वह रहा फूलदान अलमारी पर।

स्वाति – मुझे दो। यह फूलों का गुच्छा फूलदान में मैं रख देती हूँ।

(शोभित उसके हाथ में फूल देता है। वह उठने लगती है।)

रोहित – नहीं, नहीं, स्वाति।

स्वाति – तुमने तो मुझे डरा ही दिया। क्या बात है?

रोहित – ये फूल... ये फूल। मेरी माँ को इस फूल से एलर्जी है। जब भी वह यह फूल देखती हैं, उनके जिस्म में फुँसियाँ निकल आती हैं।

शोभित – ओह, मुझे इस बात का पता नहीं था। खैर मैं इन फूलों को वापस ले जाऊँगा।

रोहित – (चैन की साँस लेकर) मुझे अपनी रोटियों को बचाने के लिए कितने झूठ बोलने पड़े।

(दरवाज़े पर दस्तक)

रोहित – कौन?

रामदीन – मैं हूँ दुकान का मैनेज़र रामदीन।

स्वाति – (रोहित से) तुम मत उठो रोहित। मैं खोलती हूँ दरवाज़ा।
(ज़ोर से) अभी आई रामदीन चाचा।
(रामदीन हरा फूलदान लिए आता है।)

—गुंजन वर्मा

शब्द-पिटारा (Word-Meanings)

पंछियों = पक्षियों (birds); दस्तक देना = खटखटाना (knock); भुक्खड़ = बहुत भूखी (very hungry); खास-सूचना = विशेष संदेश (special message); खबर = समाचार (news); ईद-गिर्द = इधर-उधर (here & there); स्वादिष्ट = जायकेदार (delicious); बदकिस्मती = बुरा भाग्य (bad fate); शायद = कदाचित् (perhaps); आराम = विश्राम (rest); खत्म = समाप्त (end); मदद = सहायता (help); खुशकिस्मती = अच्छा भाग्य (good fate); जिस्म = शरीर (body)।

श्रुतलेख (Dictation)

पंछियों, भुक्खड़, ईद-गिर्द, स्वादिष्ट, बदकिस्मती, जिस्म, खुशकिस्मती

अभ्यास (Exercises)

मौखिक (Oral)

- **इन प्रश्नों के उत्तर दो—**

(क) रोहित की माँ ने किसकी रोटियाँ बनाईं?

(ख) शोभित क्या लेकर रोहित के घर आया?

(ग) स्वाति की माँ ने किस चीज़ के पापड़ बनाए थे?

(घ) दुकान का मैनेज़र कौन था?

(ङ) भूख से रोहित का पेट क्या कर रहा था?

लिखित (Written)

1. **इन प्रश्नों के उत्तर लिखो—**

(क) रामदीन किस रंग का फूलदान लेकर रोहित के घर आया था?

____

(ख) रोहित अलमारी खोलकर क्या निकाल रहा था?

____

(ग) स्वाति के हाथ में कागज़ के बंडल में क्या था?

(घ) रोहित के पेट में भूख के कारण क्या दौड़ रहे हैं?

(ङ) स्वाति को भी किसकी रोटियाँ पसंद थीं?

---

2. सही उत्तर के सामने सही का निशान (✓) लगाओ—

(क) रोहित कितने वर्ष का लड़का था?

आठ ☐ दस ☐ बारह ☐

(ख) घंटियाँ किसकी बजती हैं?

बैलों की ☐ प्रार्थना की ☐ साथियों की ☐

(ग) पंछियों के चहचहाने के साथ-साथ क्या उठता है?

अँधेरा ☐ उजाला ☐ पर्दा ☐

(घ) जम्हाई लेकर अपने को कौन सीधा करता है?

रोहित ☐ स्वाति ☐ शोभित ☐

3. सही शब्द चुनकर रिक्त स्थान भरिए

(क) माता-पिता ____________ लगाने खेत में चले गए हैं।

(ख) आज मैं डटकर ____________ करूँगा।

(ग) ____________ उठाकर यहीं ले आओ।

(घ) मोहित ____________ की तरफ़ जाने लगता है।

(ङ) इसे मत छूना, इसे छुओगे तो ____________ लगेगा।

4. स्तंभ 'अ' को स्तंभ 'ब' से मिलाओ—

स्तंभ 'अ'	स्तंभ 'ब'
(क) अलमारी	(i) रोटियाँ
(ख) बाजरा	(ii) तश्तरी
(ग) दाल	(iii) फूलदान
(घ) शोभित	(iv) पापड़
(ङ) रामदीन	(v) फूल

भाषा-ज्ञान (Language Knowledge)

1. दिए गए अवतरण को उचित परसर्ग या कारक-चिह्न ये भरकर पूरा कीजिए—

अनारकली एक लड़की है। घर __________ लोग उसे अन्नो कहते हैं। अन्नो नाम छोटा जो है, सो उस __________ हुक्म चलाना आसान होता है। अन्नो, पानी ले आ, अन्नो धूप __________ मत जाना। अन्नो बाहर अँधेरा है, कहीं मत जाना। बारिश __________ भीगना मत, अन्नो! कोई शहर __________ घर __________ आए तो घरवाले कहेंगे कि ये हमारी अनारकली है, प्यार __________ हम इसे अन्नो कहते हैं। प्यार __________ हुँ..ह..ह।

2. दिए गए शब्दों के हिंदी पर्याय लिखिए—

(क) तबियत	— __________	(घ) मदद	— __________
(ख) जिस्म	— __________	(ङ) दस्तक देना	— __________
(ग) खत्म	— __________	(च) खबर	— __________

आलोचनात्मक सोच (Critical Thinking)

- **इस कहानी से आपको क्या शिक्षा मिलती है?**

समूह कार्य (Group Discussion)

- **हमे अपनी चीजों को मिल बाँटकर खाना चाहिए। इसकी चर्चा अपने मित्रों के साथ कीजिए।**

रचनात्मक गतिविधि

- **क्या कभी आपने कोई चीज़ या बात दूसरों से छिपाई है या छिपाने की कोशिश की है, उस समय क्या-क्या हुआ था? सोचिए और अपने शिक्षक/शिक्षिका को लिखकर दिखाइए।**

अभ्यास का महत्त्व

(कहानी)

14

बात उन दिनों की है जब लोग अपने बच्चों को विद्या प्राप्त करने के लिए गुरुओं के आश्रम में भेजा करते थे। बालक वरदराज जब पाँच वर्ष का हुआ तो उसके पिता ने भी उसे शिक्षा ग्रहण करने के लिए आश्रम में भेजा।

आश्रम में गुरु जी ने अन्य बालकों के समान ही वरदराज को भी पढ़ाना प्रारंभ किया। वरदराज आश्रम में रह तो रहा था लेकिन उसका मन पढ़ाई में नही लगता था। गुरु जी ने उसे तरह-तरह से पढ़ाना और समझाना चाहा लेकिन उसे कुछ भी समझ न आता था। गुरु जी जो कुछ पढ़ाते, उसे वह याद ही नहीं रख पाता था। उसकी ऐसी स्थिति देखकर आश्रमवासी बच्चे उसे 'मंदबुद्‌धि' कहकर चिढ़ाने लगे। इसी प्रकार पाँच वर्ष बीत गए। धीरे-धीरे उसके सहपाठी उससे आगे बढ़ते गए पर वरदराज वहीं का वहीं!

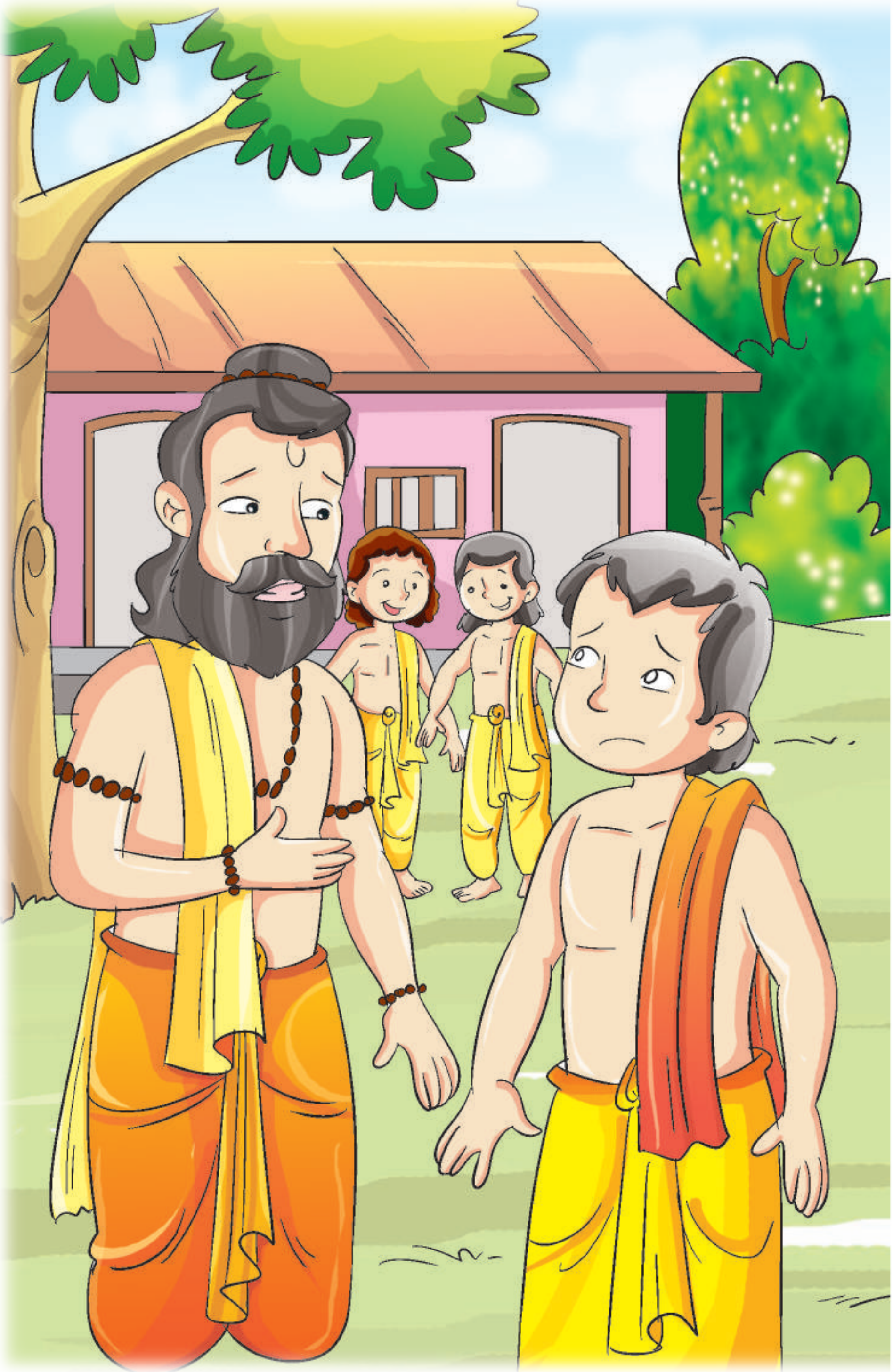

वह कुछ भी विशेष न सीख सका था। उसके साथ जो पढ़ने आए थे, वे तो आगे बढ़ गए, जो बाद में आए, वे भी उसे पीछे छोड़ आगे निकल गए।

एक दिन गुरु जी भी हार मान गए। निराश होकर उन्होने वरदराज से कहा," बेटा वरदराज! मैं समझता हूँ कि पढ़ना-लिखना तुम्हारे वश की बात नहीं है। जितना प्रयत्न मुझे करना था, उतना मैंने किया। पर, मुझे लगता है कि विद्याधन तुम्हारे भाग्य में नही है। इससे अच्छा तो यही है कि तुम अपने घर जाओ और वहाँ का काम-काज देखो।"

वरदराज असमंजस में पड़ गया। गुरु जी के मना करने के कारण उसे अपना भविष्य अंधकारमय लगने लगा। उसे यह चिंता भी सताने लगी कि घर लौटने पर उसके पिता क्या सोचेंगे। गाँव के लोग भी उसे 'मूर्ख-महामूर्ख' कहकर दुत्कारेंगे। वरदराज करता भी तो क्या! उसने अपना सामान समेटा, गुरु जी के चरण छुए, और भारी मन से विदा हुआ। वह उदास होकर अनमने भाव से चला जा रहा था। घर वापस जाने का उसका ज़रा भी मन नहीं था पर कोई और ठिकाना भी तो नहीं था। कहाँ जाए, क्या करे, उसकी समझ में कुछ भी नहीं आ रहा था।

वह सवेरे चला था और अब दोपहर हो आई थी। रास्ते में खाने के लिए गुरु जी ने उसे थोड़ा सत्तू दिया था। उसे भूख-प्यास भी लग आई थी। चलते-चलते उसे एक कुआँ दिखाई दिया। वह पानी पीने के लिए कुएँ पर पहुँचा। वहाँ उसने देखा कि पानी खींचने की रस्सी की रगड़ से कुएँ की जगत पर निशान पड़ गए हैं और मिट्टी के घड़ों को रखने से जमीन पर गड्ढे पड़ गए हैं। यह दृश्य वरदराज के मस्तिष्क में बिजली की तरह कौंध गया। उसने विचार किया कि जब रस्सी की बार-बार रगड़ खाने से कठोर पत्थर पर निशान पड़ सकते हैं तो क्या लगातार परिश्रम करने से मैं विद्वान नहीं बन सकता!

बस! फिर क्या था- वरदराज के मन में आशा की किरण जगी। वह बुदबुदाने लगा, "मैं भी लगातार परिश्रम करूँगा। अपने पाठों को मन लगाकर बार-बार पढ़ूँगा और उन्हें याद करूँगा। फिर देखता हूँ कि मुझे विद्या कैसे नहीं आती !'

वरदाराज ने कुएँ पर हाथ-मुँह धोया और गहरी साँस लेकर आगे की ओर बढ़ा। अब वह सभी प्रकार कि चिंताओं से मुक्त था। इतना कि उसे भूख-प्यास की भी चिंता नहीं रही थी। वह तेज़ कदमों से चल रहा था। अब वह दूसरी ही तरह का वरदराज लग रहा था। वह घर की ओर नहीं बल्कि आश्रम की ओर लौट चला था।

सूर्यास्त होने को था। गुरु जी आश्रम की वाटिका में टहल रहे थे। तभी उन्होने वरदराज को आते हुए देखा। उन्हें लगा कि शायद आश्रम में कुछ छूट गया हो जिसे लेने वह लौटा है।

वरदराज ने गुरु जी के पास पहुँचकर उनके चरण स्पर्श किए। गुरु जी ने प्यार से पूछा, ''क्या बात है बेटा! क्या तुम्हारा कुछ सामान छूट गया जिसे लेने तुम्हें लौटना पड़ा?''

वरदराज नम्रतापूर्वक बोला, ''हाँ गुरु जी! मेरी विद्या यहीं छूट गई है जिसे इस बार मैं अवश्य लेकर जाऊँगा। अब मेरी आँखें खुल गई हैं। मैंने निश्चय किया है कि पूरी लगन और परिश्रम से पढ़ूँगा। अब कभी आपको निराश होने का अवसर नही दूँगा।''

गुरु जी का दिल पसीज गया। उन्होंने वरदराज को गौर से देखा। उसकी आँख में चमक थी। गुरु जी ने इतनाभर ही कहा, ''तुम जो कुछ कह रहे हो, यदि उसे कर दिखाओगे तो मुझे बड़ी प्रसन्नता होगी।''

वरदराज ने पढ़ाई प्रारंभ की। अब तो उसकी भूख और नींद, पता नहीं गुम हो गई थी! वह देर रात तक पढ़ता और प्रातः सबसे पहले उठ जाता। वह अपना एक क्षण भी व्यर्थ न गँवाता।

उसने दिन-रात एक कर दिए। इसका प्रभाव यह हुआ कि जो पाठ याद करना उसे पहाड़ पर चढ़ने के समान कठिन लगता था, अब वही सरल लगने लगा था। गुरु जी और अन्य बालक वरदराज में आए इस परिवर्तन को देख आश्चर्यचकित रह गए।

अब वरदराज की गिनती प्रतिभावान बच्चों में होने लगी। यह उसकी लगन और कठोर परिश्रम का ही चमत्कार था।

जानते हो, यही वरदराज आगे चलकर संस्कृत के महान विद्वान बने। संस्कृत के सबसे बड़े विद्वान पाणिनी के बाद वरदराज का ही नाम आता है।

शब्द-पिटारा (Word-Meanings)

आश्रमवासी = आश्रम में रहने वाला (ashram resident); मंदबुद्धि = कम बुद्धिवाला, जो किसी चीज़ को जल्दी सीख न सके (bluntness); सहपाठी = साथ पढ़ने वाला (classmate); प्रयत्न = कोशिश (try); असमंजस = उलझन (confusion); अनमना = बिना मन के (mirthless); जगत = कुएँ का किनारा (edge of the well); कौंधना = विचार आना (thoughts); मुक्त = आज़ाद (free); स्पर्श करना = छूना (to touch); अवसर = मौका (chance); दिल पसीजना = दया आना (exude heart); गौर = ध्यान (consider); क्षण = पल (moment); व्यर्थ = बेकार (waste); परिवर्तन = बदलाव (change); प्रतिभावान = होनहार (talented)।

श्रुतलेख (Dictation)

शिक्षा, ग्रहण, आश्रमवासी, वरदराज, मंदबुद्धि, पढ़ाई, प्रसन्नता, परिवर्तन, मस्तिष्क

अभ्यास (Exercises)

मौखिक (Oral)

- **इन प्रश्नों के उत्तर दो—**

(क) गुरु जी ने वरदराज को क्या सलाह दी?

(ख) वरदराज ने कुएँ के पास पहुँचने पर क्या देखा?

(ग) वरदराज को लौटकर आता देख गुरु जी ने क्या सोचा?

(घ) संस्कृत के सबसे बड़े विद्वान का नाम बताओ।

लिखित (Written)

1. इन प्रश्नों के उत्तर लिखो—

(क) बालक वरदराज के पिता ने उसे पढ़ने के लिए कहाँ भेजा था ?

____

(ख) आश्रम में रहने वाले बच्चे वरदराज को 'मंदबुद्धि' कहकर क्यों चिढ़ाने लगे?

____

(ग) वरदराज को किस बात की चिंता सताने लगी?

____

(घ) कुएँ की जगत पर पड़े निशान को देखकर वरदराज ने क्या विचार किया ?

____

(ङ) कुएँ पर से लौटकर वरदराज कहाँ गया?

____

2. सही उत्तर के सामने सही का निशान (✓) लगाओ—

(क) बालक वरदराज को आश्रम में भेजा गया था ताकि वह वहाँ?

कुछ काम कर सके ☐ पढ़ाई कर सके ☐ खेलकूद कर सके ☐

(ख) जब वरदराज कुएँ पर पहुँचा तब

रात हो गई थी ☐ शाम हो गयी थी ☐ दोपहर हो गयी थी ☐

(ग) वरदराज ने गुरु जी को बताया कि आश्रम में

उसका सामान छूट गया है ☐

उसकी विद्या छूट गई है ☐

उसके पैसे छूट गए हैं। ☐

3. सही शब्द चुनकर रिक्त स्थान भरिए—

(क) ____________ आश्रम में रह तो रहा था लेकिन उसका मन पढ़ाई में नहीं लगता था।

(ख) गुरु जी आश्रम की ____________ में टहल रहे थे।

(ग) वह अपना एक ____________ भी व्यर्थ न गँवाता था।

(घ) रास्ते में खाने के लिए गुरु जी ने उसे थोड़ा ____________ दिया था।

(ङ) यह दृश्य वरदराज के मस्तिष्क में ____________ की तरह कौंध गया।

(च) वरदराज की गिनती ____________ बच्चों में होने लगी।

4. स्तंभ 'अ' को स्तंभ 'ब' से मिलाओ—

स्तंभ 'अ'	स्तंभ 'ब'
(क) सूर्यास्त	(i) कुशाग्र
(ख) मंदबुद्धि	(ii) शिष्य
(ग) गुरु	(iii) सूर्योदय
(घ) सरल	(iv) आलस
(ङ) परिश्रम	(v) कठिन

5. सही कथन के सामने (✓) तथा गलत कथन के सामने (✗) लगाओ—

(क) आश्रम में बच्चे वरदराज को मंदबुद्धि बालक मानते थे। ☐

(ख) गुरु जी ने रास्ते मे खाने के लिए वरदराज को थोड़े चावल दिए थे। ☐

(ग) वरदराज पानी पीने के लिए कुएँ पर पहुँचा। ☐

(घ) सूर्यास्त के समय गुरु जी जंगल में टहल रहे थे। ☐

(ङ) वरदराज मन लगाकर पढ़ने लगा। ☐

(च) वरदराज का दृढ़-निश्चय देखकर गुरु जी का दिल पसीज गया। ☐

भाषा-ज्ञान (Language Knowledge)

शब्द के जिस रूप से उसके स्त्री या पुरुष जाति के होने के बारे में पता चलता है, उसे लिंग कहा जाता है।

कुछ शब्द पुरुष जाति का बोध कराते हैं, वे पुल्लिंग शब्द कहलाते हैं। जैसे—पुत्र।

कुछ शब्द स्त्री जाति का बोध कराते हैं, वे स्त्रीलिंग शब्द कहलाते हैं। जैसे—पुत्री।

वाक्यों में मोटे छपे शब्दों का लिंग बदलकर वाक्यों को पुनः लिखो—

(क) हमारी **अध्यापिका** अंग्रेजी पढ़ाती है।

____

(ख) मेरी **चाची जी** देहरादून में रहती हैं।

____

(ग) मेरे **भाई** का स्वभाव बहुत अच्छा है।

____

(घ) मेरे **पिताजी** आए हैं।

____

(ङ) मेरी **बहन** रोज मेरे साथ मंदिर में जाती है।

____

आलोचनात्मक सोच (Critical Thinking)

- **इस कहानी से आपको क्या शिक्षा मिलती है?**

समूह कार्य (Group Discussion)

- **पाणिनी के व्यक्तित्व पर कक्षा में चर्चा कीजिए।**

रचनात्मक गतिविधि

- **पाणिनी के विषय में पाँच वाक्य लिखिए।**

____

____

____

____

____

15 सभी धर्म समान

(संस्मरण)

मैं एक किसान का लड़का हूँ, मगर मैंने खुद कभी हल नहीं चलाया। मेरे पिता संस्कृत के बड़े पंडित थे और खेती का काम अच्छी तरह से जानते थे। हमारे घर के पास एक मुसलमान भाई रहते थे। उनका नाम इब्राहीम था। वह जाति से जुलाहे थे, पर खेती से अपना गुजारा करते थे। हमारे और उनके खेत पास-पास थे। इसकी वजह से उनके साथ हमारा अच्छा मेल-जोल हो गया था। मेरे पिता उनको अपने भाई की तरह मानते थे। हम सब उन्हें इब्राहीम चाचा कहते थे।

इब्राहीम चाचा हमारे साथ अपने बच्चों जैसा बर्ताव करते थे। वे एक नेक मुसलमान थे और हमारी धार्मिक बातों का हमसे ज्यादा ख्याल रखते थे। उनका मानना था कि हर एक आदमी को अपने धर्म पर चलने का पूरा हक है। अक्सर फसल के दिनों में मेरे पिता और इब्राहीम चाचा दोनों बारी-बारी से फसल की रखवाली करते और इस तरह पैसा और वक्त दोनों बचा लिया करते।

जब कभी हम अपने खेतों पर जाते, तो दूर से ही चिल्लाकर पुकारते— ''इब्राहीम चाचा! कैसे हो? सो रहे हो या जाग रहे हो?'' वे खेत में से जवाब देते— ''आओ बेटा, आओ! आज मैंने बहुत अच्छी-अच्छी ककड़ियाँ और मीठे-मीठे खरबूजे तोड़े हैं। आओ, ये ले जाओ।'' और वे हमारी झोलियाँ भर देते। मेरे पिताजी भी अपने खेत के अच्छे-से-अच्छे खरबूजे तुड़वाकर चाचा के घर भिजवाते। हम कभी इब्राहीम चाचा के हाथ का छुआ न खाते, न चाचा हमें कभी भूले-चूके भी खाने देते। फिर भी हम में किसी को भी यह ख्याल न आता कि हम हिंदू हैं और वे मुसलमान।

हम चार भाई थे। मैं सबसे छोटा था। इसीलिए इब्राहीम चाचा मुझे अधिक प्यार करते थे। आम के मौसम में टपके का सबसे पहला आम इब्राहीम चाचा खुद उतारते, बहुत हिफाजत के साथ कपड़े में

लपेटकर लाते और चुपचाप मेरी जेब में डाल देते। मैं उसे सूँघता और उसकी मीठी 'खुशबू' में मस्त होकर मारे खुशी से बोल उठता— ''चाचा, आप तो इस आम से भी ज्यादा मीठे हैं।''

चाचा को गुड़ बहुत पसंद था और उनकी बोली भी बहुत मीठी थी। इसीलिए हम सब हँसी में उन्हें मीठे चाचा कहते थे। यह सुनकर वे चिढ़ते और हमें मारने दौड़ते। हम भाग जाते और कभी उनके हाथ न आते।

अक्सर इब्राहीम चाचा अपनी रकाबी में रोटी रखकर हमारे घर आते और मुझे आवाज देकर कहते— ''बेटा, जरा देखो तो तुम्हारे घर में कोई साग-तरकारी बनी है?'' मैं दौड़ा-दौड़ा माँ के पास जाता और तरकारी, अचार तथा दूसरी अच्छी-अच्छी खाने की चीजें थाली में ले आता और उनकी रकाबी में रख देता। चाचा वहीं बैठकर बड़े मजे से खाते। उन्हें परोसी हुई चीजें खत्म भी न होने पातीं कि मैं और ले आता तथा उनके मना करने पर भी रकाबी में परोस देता। मेरे इस बर्ताव से अक्सर उनकी आँखों में मुहब्बत के आँसू छलछला आते। वे बहुत चाहते कि मुझे अपनी छाती से लगा लें, मगर कभी न लगाते। शायद इसीलिए कि मैं पंडित का लड़का था और वे मुसलमान थे।

इस प्रकार मेल-मुहब्बत में कई साल बीत गए और दोनों परिवारों में आपसी मुहब्बत बढ़ती गई। इस बीच मेरे पिताजी गुजर गए। अब तो इब्राहीम चाचा हमें पहले से भी ज्यादा प्यार करने लगे। मेरे बड़े भाई हमेशा उनकी सलाह से काम करते और चाचा भी उन्हें सच्ची व सही सलाह देते।

एक बार का किस्सा है— हिंदुओं की कुछ गायें और भैंसें चरवाहों की लापरवाही से मुसलमानों के कब्रिस्तान में घुस गईं। बहुत-से नए पेड़-पौधे चर गईं। मुसलमानों को यह बात बहुत बुरी मालूम हुई। गाँव के मुसलमानों ने चरवाहों की खासी मरम्मत कर दी और जानवरों

को काँजीहौस ले जाने लगे। चरवाहों ने यह खबर गाँव में पहुँचाई। जानवरों के मालिक अपनी लाठियाँ संभालकर मौके पर पहुँच गए। बात बिजली की तरह सारे गाँव में फैल गई और आस-पास के तमाम हिंदू और मुसलमान एक-दूसरे से लड़ने के लिए मैदान में जमा होने लगे। घंटों तू-तू, मैं-मैं होती रही और लाठियाँ चलने की पूरी तैयारी हो गई। समझौते की सब कोशिशें बेकार साबित हुईं, मुसलमानों ने कहा— ''चरवाहों के लड़के हमेशा ऐसा करते हैं।'' उन्होंने लाठी, पत्थर, ईंट जो भी चीजें मिलीं, जमा कर लीं। वे लड़ने और मरने-मारने पर तुल गए।

इब्राहीम चाचा भी अपने बेटों और पोतों के साथ मौजूद थे। उन्होंने झगड़ा निपटाने की बहुत कोशिश की, मगर किसी ने एक न सुनी। उन मवेशियों में हमारे मवेशी भी थे, इसलिए मेरे भाई भी वहाँ पहुँच गए थे। औरतों और बच्चों को छोड़कर सारा गाँव जमा हो गया था। औरतें बेचारी हैरान थीं और सोचती थीं कि मर्दों का क्या होगा ?

मैं मदरसे से आया, तो देखा, घर के सब दरवाजे और खिड़कियाँ बंद थीं। मुझे भी झगड़े का पता चल गया। मैंने किताबें एक कोने में पटकीं। माँ मना करती रही, मगर मैं मैदान की तरफ चल दिया और तेजी से उस जगह पहुँच गया, जहाँ लोगों की भीड़ थी। देखा, तो मालूम हुआ कि इब्राहीम चाचा अपने बेटों और पोतों के साथ सामने वाले दल में सबसे आगे खड़े हैं। मैंने उनसे पूछा— ''इब्राहीम चाचा, आप किस तरफ हैं?''

इब्राहीम चाचा ने फौरन अपने बेटे के हाथ से लाठी छीन ली और वे मेरे पास आ खड़े हुए। उन्होंने अपने बेटों से कहा—"इसका बाप जिंदा नहीं है। इसलिए मैं इसके साथ रहकर लड़ूँगा। तुम उस तरफ रहो।"

इब्राहीम चाचा को दूसरी तरफ जाता देखकर सब दंग रह गए। कुछ देर तक वहाँ सन्नाटा छाया रहा। सब शर्मिंदा हो गए और बिना कुछ बोले अपने-अपने घरों की ओर चल पड़े। इब्राहीम चाचा के साथ-साथ हम भी अपने घरों को लौट गए।

उस दिन तो मैं समझ ही न पाया था कि इतना बड़ा झगड़ा एकदम क्यों ठंडा पड़ गया? लेकिन आज समझता हूँ।

इब्राहीम चाचा अब इस दुनिया में नहीं रहे, लेकिन मैं उन्हें कभी न भूलूँगा। मैं उनकी कब्र को अच्छी तरह जानता हूँ, उसे देखकर मैंने कई बार आँसू बहाए हैं। जब कभी कब्रिस्तान की ओर से निकलता हूँ, तो उनकी कब्र को देखकर बच्चों की तरह बरबस यह पूछ बैठता हूँ—"इब्राहीम चाचा, सोते हो या जागते हो?" मैं मान ही नहीं सकता कि वे सोते हैं— वे तो जागते हुए ही सोते हैं।

–महादेव देसाई

शब्द-पिटारा (Word-Meanings)

वजह = कारण (reason); बर्ताव = व्यवहार (behaviour); हक = अधिकार (right); वक्त = समय (time); हिफाजत = सुरक्षा (security); मुहब्बत = प्यार (love); गुजरना = मर जाना (to die); मरम्मत करना = पिटाई करना (beat); काँजीहौस = जहाँ आवारा पशुओं को रखा जाता है (jail of animals a type of bowl); दल = समूह (group)।

श्रुतलेख (Dictation)

पंडित, इब्राहीम, बर्ताव, हिफाजत, मुहब्बत, कब्रिस्तान, काँजीहौस, रकाबी, लाठियाँ, शर्मिंदा,

अभ्यास (Exercises)

मौखिक (Oral)

- **इन प्रश्नों के उत्तर दो—**

(क) परिवार के बाहर के किसी ऐसे व्यक्ति के बारे में बताइए, जो आपको बहुत प्यार करता है।

(ख) क्या हमें जाति व धर्म के नाम पर अपने संबंधों को तोड़ देना चाहिए?

(ग) अपने पिताजी के बारे में बताइए।

लिखित (Written)

1. इन प्रश्नों के उत्तर लिखो—

(क) इब्राहीम चाचा लेखक के परिवार के साथ कैसा व्यवहार करते थे?

____

(ख) इब्राहीम 'मीठे चाचा' क्यों कहलाते थे?

____

(ग) लेखक इब्राहीम चाचा को किस प्रकार खाना खिलाते थे?

____

(घ) हिंदू और मुसलमानों के बीच किस बात पर झगड़ा हुआ?

____

2. सही उत्तर के सामने सही का निशान (✓) लगाओ—

(क) लेखक के पिता किसके बड़े पंडित थे?

हिंदी के ☐ अंग्रेजी के ☐ संस्कृत के ☐

(ख) इब्राहीम चाचा किसमें रोटी रखकर लाते थे?

रकाबी में ☐ थाली में ☐ प्लेट में ☐

(ग) मुसलमान लोग जानवरों को ले जाने लगे—

चिड़ियाघर ☐ अपने घर ☐ काँजीहौस ☐

3. सही शब्द चुनकर रिक्त स्थान भरिए—

(क) लेखक के पिता ____________ के बड़े पंडित थे।

(ख) हर एक आदमी को अपने ____________ पर चलने का पूरा हक है।

(ग) हम कभी इब्राहीम चाचा के हाथ का ____________ न खाते।

(घ) चाचा, आप तो इस आम से भी ज्यादा ____________ हैं।

4. स्तंभ 'अ' को स्तंभ 'ब' से मिलाओ—

स्तंभ 'अ'	स्तंभ 'ब'
(क) वजह	(i) समय
(ख) बर्ताव	(ii) सुरक्षा
(ग) वक्त	(iii) अधिकार
(घ) हिफाजत	(iv) व्यवहार
(ङ) हक	(v) कारण

5. **सही कथन के सामने (✓) तथा गलत कथन के सामने (✗) लगाओ—**

(क) लेखक किसान का लड़का है, पर हल चलाना नहीं जानता। ☐

(ख) इब्राहीम चाचा हमारे साथ सौतेला बर्ताव करते थे। ☐

(ग) आम चाचा खुद उतारते थे और बहुत हिफाजत के साथ कपड़े में लपेटकर लाते थे। ☐

(घ) मुसलमानों की कुछ गायें और भैंसें चरवाहों की लापरवाही से मंदिर में घुस गईं। ☐

भाषा-ज्ञान (Language Knowledge)

1. **निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ लिखते हुए इनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए—**

	अर्थ	वाक्य-प्रयोग
(क) मरम्मत करना	________	________________
(ख) तू-तू, मैं-मैं होना	________	________________
(ग) दुनिया में न रहना	________	________________

2. **साग-सब्जी का अर्थ है, साग और सब्जी। इसी तरह के छः अन्य शब्द लिखिए—**

________ ________ ________

________ ________ ________

3. **दिए गए शब्दों का उनके समानार्थी शब्दों से रेखा खींचकर सुमेल कीजिए—**

(क) लोभ	(i) रुकावट
(ख) सम्मान	(ii) आजाद
(ग) बाधा	(iii) लालच
(घ) सर्वोपरि	(iv) आदर
(ङ) स्वतंत्र	(v) सर्वोच्च

आलोचनात्मक सोच (Critical Thinking)

- हमे इस कहानी से क्या शिक्षा मिलती है?

समूह कार्य (Group Discussion)

- हिंदू-मुस्लिम एकता के लिए सुंदर अक्षरों में एक नारा लिखिए।

रचनात्मक गतिविधि

- कहानी में लेखक कहता है कि हिंदू और मुसलमानों का झगड़ा एकदम क्यों शांत हो गया, यह मैं तब नहीं समझा था, किंतु आज समझता हूँ। क्या आप झगड़ा शांत होने का कारण समझते हैं? यदि हाँ, तो लिखिए—

16 सूरज की बेटी

(कविता)

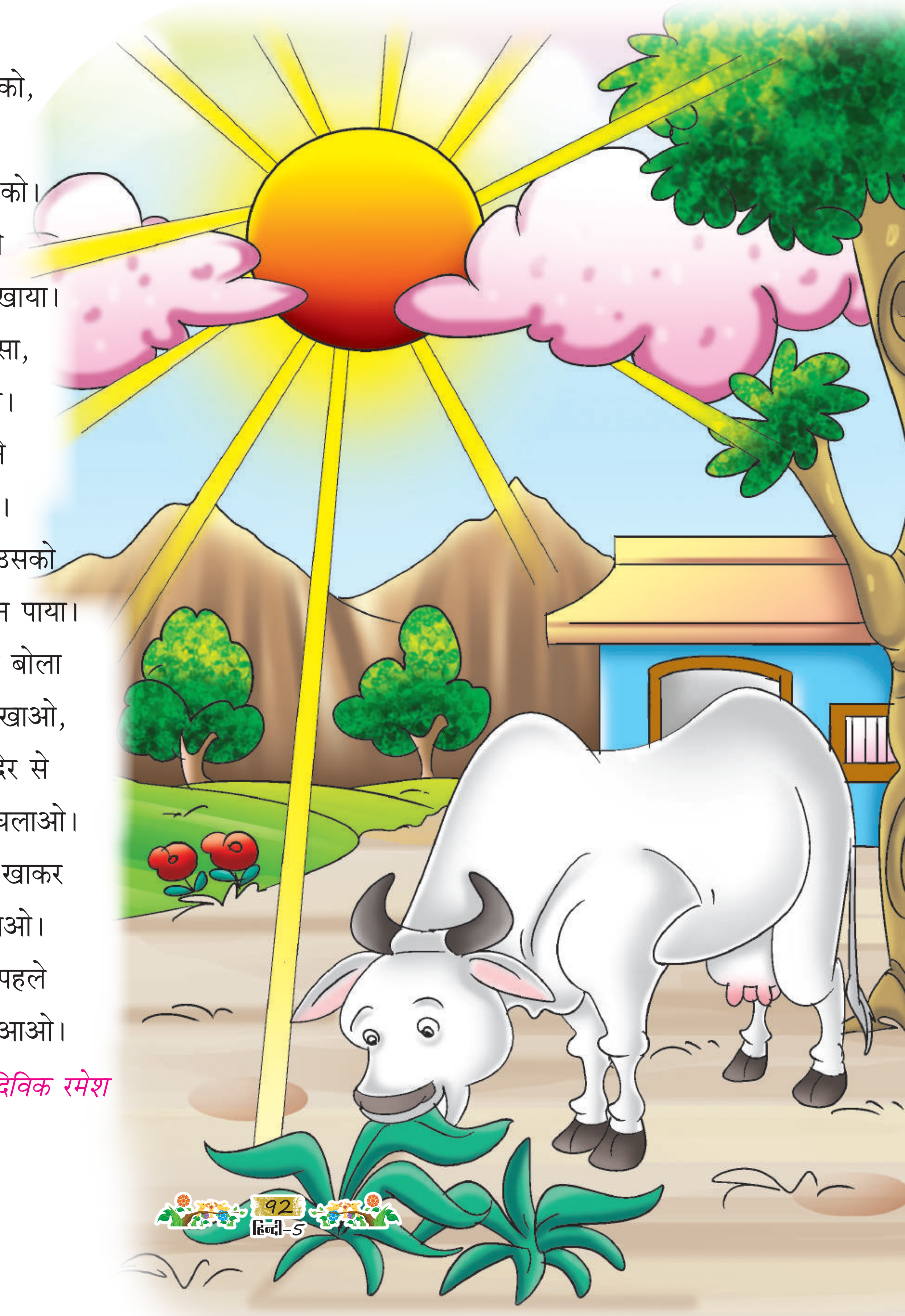

सूरज ने भेजा धरती पर
अपनी बेटी किरण धूप को,
साथ खेलते धरती ने भी
उगा दिया झट हरी दूब को।
दूब उगी तो देख गाय ने
हिला-हिला मुँह उसको खाया।
उसको खाकर खूब ढेर-सा,
दूध थनों में उसके आया।
दूध मिला तो दादी माँ ने
जामन देकर उसे जमाया।

दही जमा तो माँ ने उसको
खूब बिलोकर मक्खन पाया।
देखा मक्खन तो मन बोला
झटपट भैया इसको खाओ,
ताक रहे क्यों खड़े देर से
मत इसको इतना पिघलाओ।
पर बोली माँ इसको खाकर
हाथी से तगड़े हो जाओ।
मैं बोला माँ लेकिन पहले
सूँड़ कहीं से तो ले आओ।

—दिविक रमेश

शब्द-पिटारा (Word-Meanings)

झट = तुरंत (quick); ढेर-सा = बहुत ज़्यादा (much); धरती = भूमि, ज़मीन (earth); तगड़ा = मज़बूत और हट्टा-कट्टा (strong); दूब = लंबी और हरी घास (long and green grass); ताकना = देखना (see)।

श्रुतलेख (Dictation)

मक्खन, पिघलाओं, सूँड, तगड़ा, झटपट, धरती, ढेर-सा

अभ्यास (Exercises)

मौखिक (Oral)

- **इन प्रश्नों के उत्तर दो—**

(क) इस कविता के रचनाकार कौन हैं?

(ख) दूब को धरती पर किसने उगाया?

(ग) गाय ने क्या हिला-हिला कर दूब को खाया?

(घ) गाय अपना दूध किसमें रखती हैं?

लिखित (Written)

1. इन प्रश्नों के उत्तर लिखो—

(क) दूब को सूरज ने धरती पर कैसे उगाया?

____

(ख) सूरज ने धरती पर किसे भेजा?

____

(ग) मक्खन देखकर कवि का मन क्या बोला?

____

2. सही उत्तर के सामने सही का निशान (✓) लगाओ—

(क) सूरज की बेटी कौन है?

किरण ☐ धूप ☐ दूब ☐

(ख) दादी माँ ने जामन देकर क्या जमाया?

दही ☐ मक्खन ☐ दूध ☐

(ग) माँ ने दही बिलोकर क्या निकाला?

दूध ☐ दही ☐ मक्खन ☐

2. कविता की पंक्तियाँ पूरी कीजिए—

(क) ______ उगी तो देख गाय ने
हिला-हिला ______ उसको खाया।
उसको खाकर ______ ढेर-सा
दूध ______ में उसके आया।

(ख) दूध मिला तो ______ माँ ने
______ देकर उसे जमाया।
______ जमा तो माँ ने उसको
खूब ______ मक्खन पाया।

4. स्तंभ 'अ' को स्तंभ 'ब' से मिलाओ—

	स्तंभ 'अ'		स्तंभ 'ब'
(क)	धरती	(i)	बहुत ज़्यादा
(ख)	झट	(ii)	ज़मीन
(ग)	दूब	(ii)	तुरंत
(घ)	तगड़ा	(iv)	हरी लंबी घास
(ङ)	ढेर-सा	(v)	मज़बूत/हट्टा-कट्टा

भाषा-ज्ञान (Language Knowledge)

1. दिए गए शब्दों के समान तुकवाले दो-दो शब्द लिखिए—

धूप	दूब	भैया	मन	हरी
______	______	______	______	______
______	______	______	______	______

2. दिए गए शब्दों के विलोम शब्द लिखिए—

सूरज — ______ धरती — ______ आया — ______
धूप — ______ खाना — ______ बेटी — ______

आलोचनात्मक सोच (Critical Thinking)

- **मक्खन कौन से भगवान की मनपसंद चीज है?**

समूह कार्य (Group Discussion)

- **दूध से बनी चीजों के बारे में माँ से जानिए।**

रचनात्मक गतिविधि

- **अपने से बड़ों से जानकारी प्राप्त करके बताइए कि दूब और अन्य वनस्पतियों से क्या-क्या दवाइयाँ बनती हैं? लिखकर दिखाइए।**

धमाचौकड़ी 17

(कहानी)

आधी छुट्टी होते ही लड़कों का झुंड पेड़ों के झुरमुट में खड़े होकर बतियाने लगा। सभी लड़के इस बात से सहमत थे कि जो नए अध्यापक स्कूल आने वाले हैं, उनसे वे बिलकुल नहीं पढ़ेंगे, चाहे कुछ भी हो जाए।

नए अध्यापक का नाम भी बच्चों ने कहीं से सुन लिया था – काली कुमार तर्कालंकार। छुट्टियों में सब अपने-अपने घर चले गए। सारी छुट्टियाँ मौज़-मस्ती में निकल गईं। पता ही नहीं चला। जैसे ही छुट्टियाँ खत्म हुईं, लड़के अपने-अपने घरों से रेलगाड़ी में बैठकर स्कूल लौटने लगे। लड़कों के बीच एक लड़का कभी-कभार कुछ-कुछ अटपटी-सी कविता कर लिया करता था। उसी की रची कविता को लड़के ऊँची-नीची आवाज़ में मज़े लेकर गा रहे थे।

गाड़ी एक छोटे-से स्टेशन पर रुकी और वहाँ से एक बूढ़े सज्जन भी गाड़ी में चढ़े। सामान के नाम पर उनके पास एक बिछौना तथा गोल मुँह वाली मिट्टी की दो-तीन हंडियाँ थीं, जिनका मुँह कपड़े से बंद था। साथ ही एक लोहे का ट्रंक भी था और थीं कुछ छोटी-बड़ी पोटलियाँ। लड़कों के समूह में एक शरारती लड़का, जिसे सब बिचकुन कहते थे, सहसा बूढ़े को देखकर ज़ोर-से कहने लगा – ''अरे बुड्ढे! यहाँ जगह नहीं है। किसी दूसरे डिब्बे में जाओ।''

बूढ़े आदमी ने प्यार से कहा – ''बड़ी भीड़ है, कहीं जगह नहीं है। मैं एक कोने में बैठ जाऊँगा। तुम्हें कोई परेशानी नहीं होगी।'' और वे सीट पर बैठने के बजाए नीचे फ़र्श पर अपना बिछौना फैलाकर बैठ गए।

लड़कों ने पूछा – "बाबा, आप कहाँ जा रहे हैं? बाबा कुछ जवाब देते, उससे पहले ही बिचकुन बोल उठा – "श्राद्ध करने जा रहे होंगे।"

जवाब मिला – "काले कुम्हड़ का, हरी मिर्च का!" और लड़के एक सुर में बिचकुन की कविता के बोल गा उठे – "हरी मिर्च और काला कुम्हड़ा, जो बैठा है, हो जाए खड़ा।"

आसनसोल स्टेशन आते ही बूढ़े सज्जन वहाँ स्नान करने के लिए उतर पड़े। बूढ़े के वापस लौटते ही बिचकुन ने चेतावनी देते हुए कहा – "इस डिब्बे से उतर जाने में ही आपकी भलाई है।"

"ऐसा क्यों?" "यहाँ डिब्बे के कुछ चूहों को बड़ा कष्ट है।"

"देखिए न, चूहों ने आपकी हंडियों में घुसकर क्या धमाल कर दिया है?"

बूढ़े सज्जन ने देखा कि रसगुल्लों से भरी हंडियाँ खाली हैं और मीठी बूँदी का एक दाना भी नहीं बचा है। पोटली को खोजते देख बिचकुन झट बोल उठा – "आपकी पोटली में न जाने क्या था, उसे तो चूहे उठाकर भाग खड़े हुए हैं।" अब बूढ़े सज्जन को ध्यान आया कि उसमें तो उनके बग़ीचे के पाँच पके रसीले आम बँधे हुए थे।

बूढ़े सज्जन ने हँसकर कहा – "लगता है चूहों को बड़ी भूख लगी हुई थी।"

बिचकुन ने कहा – "कहीं-कहीं चूहे तो बिना भूख के भी सब चट कर जाते हैं।"

और बच्चे क्यों पीछे रहते। सभी कहने लगे – "हाँ-हाँ, ऐसा ही है। कुछ और भी उन्हें मिलता तो वे उसे भी चट कर जाते।"

बूढ़े सज्जन ने मुस्कुराते हुए कहा – "बड़ी भारी भूल हो गई। मुझे अगर मालूम होता कि गाड़ी चूहों से भरी पड़ी है, तो मैं उनके लिए कुछ और भी ले आता।" बूढ़े सज्जन को मुस्कुराते देख लड़के झेंपकर चुप हो गए। मन-ही-मन सोचने लगे – 'काश, गुस्सा करते तो मज़ा आ जाता।'

वर्धमान स्टेशन पर उतरकर जब दूसरी गाड़ी पकड़ने का समय आ गया, तब बूढ़े सज्जन बोल उठे – "इस बार तुम्हें कष्ट नहीं होगा। इस बार किसी दूसरे डिब्बे में चढ़ जाऊँगा।"

"सो तो अब होने का नहीं।" आपको अब की बार भी हमारे डिब्बे में ही चलना पड़ेगा। आपकी पोटलियों में अगर अब भी कुछ बचा है तो हम सब बराबर से पहरा देंगे। इस बार चूहों को कुछ भी खाने नहीं देंगे।"

बूढ़े सज्जन को लड़कों की जिद के सामने झुकना ही पड़ा। थोड़ी देर बाद डिब्बे के सामने एक मिठाई वाले का ठेला आकर रुक गया। बूढ़े सज्जन ने मिठाई का दोना हर एक को पकड़ाते हुए कहा – "इस बार चूहों की दावत में कोई गड़बड़ नहीं होगी।"

लड़कों ने खुशी से 'हुर्रे' कहा और मिठाई पर टूट पड़े। मिठाई वाले के बाद आई आम वाले की बारी। भला आम भी कहाँ बचने वाले थे।

लड़कों ने खोज-खबर लेते हुए पूछा – "आप कहाँ जा रहे हैं?"

"मैं रोज़गार की तलाश में निकला हूँ। जहाँ काम मिलेगा, वहीं उतर पडूँगा।" बूढ़े सज्जन ने कहा। लड़कों ने पूछा – " आप क्या काम करते हैं?"

"मैं टूलो पंडित हूँ, संस्कृत पढ़ाता हूँ।" बूढ़े सज्जन ने उत्तर दिया।

लड़के ताली बजाकर खुशी से उछल पड़े – "फिर तो आपको कहीं जाने की ज़रूरत नहीं। आप हमारे स्कूल में जाकर पढ़ाइए।"

"तुम्हारे स्कूल वाले भला मुझे क्यों रखेंगे?"

"रखेंगे कैसे नहीं? हम अपने यहाँ किसी ऐरे-गैरे को थोड़े ही न आने देंगे।"

"तुमने तो मुझे दुविधा में डाल दिया। अगर तुम्हारे स्कूल के अधिकारी मुझे पसंद न करें तो?"

"पसंद न करने का तो प्रश्न ही नहीं उठता। पसंद न करने पर हम स्कूल छोड़ देंगे।"

"अच्छा बाबा, तब तो तुम्हीं ले चलो।"

गाड़ी स्टेशन पर आकर रुकी। वहाँ स्वयं स्कूल के सेक्रेटरी बाबू आए हुए थे। बूढ़े सज्जन को देखते ही उन्होंने आगे बढ़कर उनके पाँव छुए और प्रणाम करते हुए बोले – "आइए, आइए तर्कालंकार महाशय! आपके रहने का सब इंतज़ाम हो गया है।

शब्द-पिटारा (Word-Meanings)

छुट्टी = अवकाश (holiday); चेतावनी = खतरे की पूर्व सूचना (warning); झुरमुट = समूह (group); रोज़गार = काम (employment); बतियाना = बातें करना (talking); तलाश = खोज (search); सहमत = राज़ी (agree); दुविधा = असमंजस की स्थिति (confusion); अटपटी = अजीब (strange); इंतज़ाम = प्रबंध (manage); बिछौना = बिस्तर (bed); ट्रंक = संदूक (box)।

श्रुतलेख (Dictation)

छुट्टी, झुरमुट, दुविधा, ट्रंक, प्रबंध, बिछौना, तर्कालंकार, सज्जन

अभ्यास (Exercises)

मौखिक (Oral)

- **इन प्रश्नों के उत्तर दो—**

(क) बच्चे छुट्टियों में कहाँ पर गए?

(ख) तर्कालंकार महाशय का रहने का इंतज़ाम किसने किया था?

(ग) बिचकुन कैसा लड़का था?

(घ) तर्कालंकार महाशय किसकी तलाश में निकले थे?

(ङ) बूढ़े सज्जन के पास गोल मुँह वाली कितनी हंडियाँ थीं?

लिखित (Written)

1. इन प्रश्नों के उत्तर लिखो—

(क) लड़कों ने बूढ़े सज्जन से क्या पूछा?

____

(ख) लड़के कविता के कौन-से बोल गा उठे?

____

(ग) बूढ़े की पोटली में क्या बँधे हुए थे?

____

(घ) बूढ़े सज्जन ने हँसकर क्या कहा?

____

(ङ) बिचकुन ने चेतावनी देते हुए बूढ़े सज्जन से क्या कहा?

____

2. सही उत्तर के सामने सही का निशान (✓) लगाओ—

(क) पाठ में चूहे किसे कहा गया है?

लड़कों को ☐ लड़कियों को ☐ चूहों को ☐

(ख) नए अध्यापक का क्या नाम था?

अर्थालंकार ☐ शब्दालंकार ☐ तर्कालंकार ☐

(ग) पेड़ों के झुरमुट में खड़े होकर कौन बतिया रहे थे?

लड़के ☐ छात्र ☐ छात्राएँ ☐

(घ) छुट्टियाँ खत्म होने पर लड़के किसमें बैठकर स्कूल लौटने लगे?

बस में ☐ अपनी-अपनी कार में ☐ रेलगाड़ी में ☐

(ङ) शरारती लड़के का क्या नाम था?

हिमशुक ☐ बिचकुन ☐ सुचिकन ☐

3. सही शब्द चुनकर रिक्त स्थान भरिए—

(क) नए अध्यापक का नाम ____________ था।

(ख) स्टेशन से एक ____________ सज्जन भी गाड़ी में चढ़े।

(ग) सारी छुट्टियाँ ____________ में निकल गईं।

(घ) एक लड़का कभी-कभार ____________ कविता कर लिया करता था।

(ङ) बूढ़े सज्जन को मुस्कुराते देख लड़के ____________ हो गए।

4. स्तंभ 'अ' को स्तंभ 'ब' से मिलाओ—

	स्तंभ 'अ'		स्तंभ 'ब'
(क)	बतियाना	(i)	खोज
(ख)	सहमत	(ii)	बातें करना
(ग)	झुरमुट	(iii)	राज़ी
(घ)	अटपटी	(iv)	समूह
(ङ)	रोज़गार	(v)	अजीब
(च)	तलाश	(vi)	काम

5. निम्नलिखित कथन किसने, किससे कहे?

	कथन	किसने कहे?	किससे कहे?
(क)	"अरे बुड्ढे! यहाँ जगह नहीं है। किसी दूसरे डिब्बे में जाओ।"	____________	____________
(ख)	"बड़ी भीड़ है, कहीं जगह नहीं है।"	____________	____________
(ग)	"हरी मिर्च और काला कुम्हड़ा जो बैठा है, हो जाए खड़ा।"	____________	____________
(घ)	"लगता है चूहों को बड़ी भूख लगी है।"	____________	____________

(ङ) "महाशय! आपके रहने का सब इंतज़ाम हो गया है।" ______ ______

भाषा-ज्ञान (Language Knowledge)

1. दिए गए शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए—

घर	पेड़	अध्यापक	कपड़ा
______	______	______	______
______	______	______	______
सहसा	**कष्ट**	**बग़ीचा**	**तलाश**
______	______	______	______
______	______	______	______

2. पाठ में आए अंग्रेज़ी भाषा के शब्द छाँटकर लिखिए—

______ ______ ______

आलोचनात्मक सोच (Critical Thinking)

- हमें अपने बड़ों का सम्मान करना चाहिए। क्या आप सहमत हैं? अपने शब्दों में बताइए।

समूह कार्य (Group Discussion)

- क्या आपने भी कभी किसी का खाने का सामान बिना बताए खाया है? अपने मित्रों के साथ चर्चा करें।

रचनात्मक गतिविधि

- आपने भी कभी रेलयात्रा की होगी। यात्रा करने के लिए हम अपने साथ कुछ ज़रूरी सामान लेकर चलते हैं। उन आवश्यक वस्तुओं की सूची बनाइए।

______	______	______
______	______	______
______	______	______
______	______	______
______	______	______

बुधिया की समझदारी 18
(कहानी)

बहुत पुरानी बात है। टीकमगढ़ नाम के राज्य में एक राजा राज करता था। उसे शिकार का बहुत शौक था। एक दिन वह शिकार पर गया हुआ था। उस समय उसका नौकर बुधिया राजा के शयनकक्ष की सफाई कर रहा था। सफाई करते-करते बुधिया की नजर राजा के बिस्तर पर पड़ी। नर्म मुलायम बिस्तर को देखकर बुधिया का मन थोड़ी देर बिस्तर पर बैठने को किया। नर्म गद्दे पर बैठकर उसे एहसास हुआ कि राजा कितने आलीशान बिस्तर पर सोता है। वह सोचने लगा, 'अभी तो इस कक्ष में कोई भी नहीं है, क्यों न मैं इस बिस्तर पर लेटकर देखूँ।'

बुधिया हिम्मत करके राजा के बिस्तर पर लेट गया। थका हुआ होने के कारण लेटते ही उसे गहरी नींद आ गई। फिर तो वह न जाने कितनी देर तक सोता रहा। गहरी नींद में उसे सपना आया जिसमें किसी बात पर क्रोधित होकर महाराज उससे कुछ कह रहे थे। यह देखते ही वह हड़बड़ाकर उठ बैठा। आँखें खुलीं, तो देखा सामने सचमुच महाराज खड़े थे। उनकी आँखें गुस्से से लाल थीं और वह बुधिया को बुरी तरह घूर रहे थे। बुधिया की सिट्टी-पिट्टी गुम हो गई। वह भय से काँपता हुआ हाथ जोड़कर खड़ा हो गया।

एक अदने नौकर को अपने बिस्तर पर सोते देखकर महाराज आग-बबूला हो उठे थे। लेकिन उनके कुछ कहने से पहले ही अचानक बुधिया पहले तो जोर-जोर-से रोने लगा और फिर जोर-जोर-से हँसने लगा।

राजा ने उसकी ऐसी हालत देखकर कुछ नर्म पड़ते हुए बुधिया से पूछा, "अरे! यह सब क्या है ? मुझे देखकर पहले तो तुम रोए, फिर हँसने लगे। ऐसा क्यों ?"

बुधिया ने हाथ जोड़कर कहा, "महाराज! मैं पहले रोया इसलिए था कि इस गुस्ताखी पर आज मेरी मौत निश्चित है। मैं हँसा इसलिए कि राजा होते हुए भी आप इस नर्म, मखमली और आरामदेह बिस्तर पर शान्ति से नहीं सो सकते। आप हमेशा ही प्रजा, सेना, धन-दौलत आदि को लेकर चिन्तित रहते हैं। ऐसे में यह बिस्तर आपको क्या दे पाता होगा, महाराज ? आपसे भले तो हम हैं कि अपना काम निपटाकर आराम से खाते-पीते तो हैं। सुख व ऐश्वर्य के इतने साधन होते हुए भी आपको चैन से सोना नसीब नहीं होता।"

बुधिया की बात सुनकर राजा को लगा कि बुधिया सच ही कह रहा है। उन्होंने बुधिया के अपराध को क्षमा कर दिया। वास्तव में इतना कुछ होने के बावजूद उनकी किस्मत में चैन की नींद नहीं थी।

शब्द-पिटारा (Word-Meanings)

शयनकक्ष = सोने का कमरा (Bedroom); आलीशान = शानदार (Grand); क्रोधित = नाराज (Angry); अदने = छोटे-से, बिना वजूद के (Small); गुस्ताखी = गलती (Arrogance); आरामदेह = आराम देने वाला (Comfortable); अपराध = दोष, गलती (Ofence); किस्मत = भाग्य (Luck)।

श्रुतलेख (Dictation)

शयनकक्ष, क्रोधित, गुस्ताखी, मखमली, सिट्टी-पिट्टी, बुधिया, कक्ष,

अभ्यास (Exercises)

मौखिक (Oral)

- **इन प्रश्नों के उत्तर दो—**

(क) राजा को किसका शौक था?

(ख) राजा के नौकर का क्या नाम था?

(ग) बिस्तर पर लेटते ही बुधिया को क्या आ गई?

(घ) आँखें खुलने पर बुधिया ने अपने सामने किसे देखा?

लिखित (Written)

1. इन प्रश्नों के उत्तर लिखो—

(क) बुधिया राजा के कक्ष में क्या कर रहा था?

(ख) राजा का आलीशान बिस्तर देखकर बुधिया ने क्या सोचा?

(ग) बुधिया ने सपने में क्या देखा?

(घ) राजा के सामने बुधिया की क्या हालत हुई?

(ङ) राजा ने बुधिया को क्षमा क्यों कर दिया?

2. सही उत्तर के सामने सही का निशान (✓) लगाओ—

(क) राजा को शौक था–

संगीत का ☐ चित्रकारी का ☐ शिकार का ☐

(ख) राजा के नौकर का नाम था–

बुधिया ☐ रामू ☐ दीनू ☐

(ग) बुधिया को राजा के बिस्तर पर लेटते ही आ गई–

रानी ☐ नींद ☐ राजकुमारी ☐

(घ) बुधिया राजा को देखकर किसके डर से रोने लगा–

दर्द ☐ खुशी ☐ दण्ड ☐

(ङ) राजा ने बुधिया को–

दण्ड दिया ☐ माफ कर दिया ☐ इनमें कोई नहीं ☐

3. सही कथन के सामने (✓) तथा गलत कथन के सामने (✗) लगाओ—

(क) टीकमपुर नाम के राज्य में एक राजा राज्य करता था। ☐

(ख) उसका नौकर बुधिया राजा के शयनकक्ष की सफाई कर रहा था। ☐

(ग) बुधिया का मन राजा के बिस्तर पर लेटने को हुआ। ☐

(घ) आँख खुलने पर बुधिया ने रानी को अपने सामने खड़ा पाया। ☐

(ङ) राजा ने बुधिया को दण्ड दिया। ☐

4. **स्तंभ 'अ' को स्तंभ 'ब' से मिलाओ—**

स्तंभ 'अ'		स्तंभ 'ब'
(क) क्रोध	(i)	चिन्ता
(ख) कक्ष	(ii)	नजर
(ग) निगाह	(iii)	कमरा
(घ) परेशानी	(iv)	गुस्सा

भाषा-ज्ञान (Language Knowledge)

1. **निम्नलिखित वाक्यों में उद्देश्य और विधेय अलग-अलग कीजिए—**

वाक्य	उद्देश्य	विधेय
(क) सूरज पूरब में निकलता है।	____________	____________
(ख) रात में तारे चमकते हैं।	____________	____________
(ग) सौरभ क्रिकेट खेलेगा।	____________	____________
(घ) पुलकित विद्यालय चला गया।	____________	____________
(ङ) धोबी कपड़े धो चुका है।	____________	____________

2. **दिए गए विदेशी शब्दों का उनके हिंदी अर्थ से मेल मिलाइए—**

इस्तीफा	चिकित्सक	मरीज	समय
डॉक्टर	न्यायालय	टाइम	विज्ञान
कोर्ट	त्यागपत्र	फीस	विद्यालय
प्रिंसिपल	विवाह	स्कूल	रोगी
शादी	प्रधानाचार्य	साइंस	शुल्क

जिस शब्द से किसी काम का होना प्रकट हो, उसे **क्रिया** कहते हैं।
जैसे– पढ़ता है, खाता है, भागता है, आदि।

आलोचनात्मक सोच (Critical Thinking)

- **राजा के स्थान पर आप होते तो बुधिया को क्या सज़ा देते?**

समूह कार्य (Group Discussion)

- **अक्सर हम आरामदेह वस्तुओं का उपयोग करने की सोचते हैं। इस विषय पर कक्षा में चर्चा कीजिए।**

रचनात्मक गतिविधि

- **अपने किसी ऐसे कार्य का वर्णन कीजिए, जब आपको डाँट खानी पड़ी—**

केवल पठन हेतु

सबसे मीठी, सबसे कड़वी

तेनालीराम बिलकुल चुप बैठे थे।
क्यों तेनालीराम, तुम्हें कुछ नहीं कहना?
महाराज, मैं अपना जवाब अभी नहीं, पर जल्दी ही दूँगा।
कुछ दिन बाद राजदरबार में ऊँची पगड़ीधारी एक अनोखा व्यक्ति आया।
महाराज! मै एकचक्रनाथ हूँ। आपके पड़ोसी राजा महापराक्रमी इंद्रेश्वर जी का राजकवि।
आपको शायद अपनी वीरता और समृद्धि का कुछ ज्यादा घमंड हो गया है। पर हमारे महाराज इतने बलवान हैं कि जब चाहें, आपकी शान को धूल में मिला सकते हैं।

राजा कृष्णदेव राय ही नहीं, सभासद भी क्रोध से थर-थर काँपने लगे।
ठहर दुष्ट, तुझे तेरी दुष्टता की सजा मिलेगी। हम तुझे कारागार में....!
वह अपनी बात पूरी करते, इससे पहले ही चमत्कार हुआ। एकचक्रनाथ ने देखते ही देखते अपनी दाढ़ी और पगड़ी उतारी, तो सब चौंक गए। सामने तेनालीराम थे।
तेनालीराम हँसे!
हे, पृथ्वीनाथ! किसकी हिम्मत है कि दरबार में आपकी बेअदबी कर सके। मैंने तो सिर्फ आपके सवाल का जवाब दिया था।

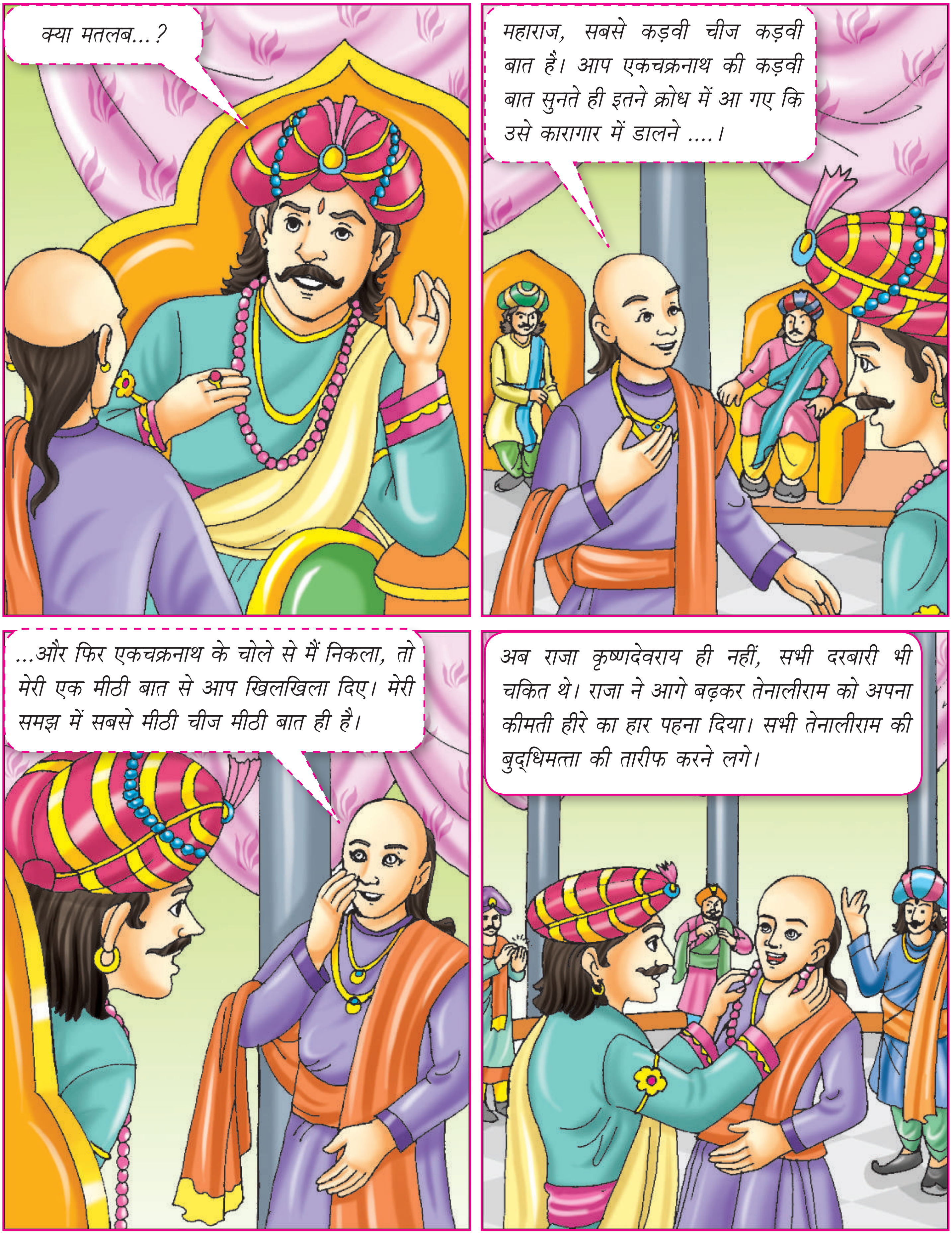
क्या मतलब...?
महाराज, सबसे कड़वी चीज कड़वी बात है। आप एकचक्रनाथ की कड़वी बात सुनते ही इतने क्रोध में आ गए कि उसे कारागार में डालने ....।
...और फिर एकचक्रनाथ के चोले से मैं निकला, तो मेरी एक मीठी बात से आप खिलखिला दिए। मेरी समझ में सबसे मीठी चीज मीठी बात ही है।
अब राजा कृष्णदेवराय ही नहीं, सभी दरबारी भी चकित थे। राजा ने आगे बढ़कर तेनालीराम को अपना कीमती हीरे का हार पहना दिया। सभी तेनालीराम की बुद्धिमत्ता की तारीफ करने लगे।

प्रश्न-पत्र (Test-Paper) – I

समयः 1 घंटा **अंक-40**

1. सही विकल्प पर (✓) लगाइए—

(क) काबुलीवाले ने अपने कुरते से पायल के पिताजी को क्या दिखाया?

किशमिश और बादाम ☐ कुछ पैसे ☐ कागज़ का टुकड़ा ☐

(ख) लोनपोगार ने अपने बेटे को कितनी भेड़ें दी?

सौ ☐ पचास ☐ इक्कीस ☐

(ग) प्राणदायक गैस कौन-सी कहलाती है?

ऑक्सीजन ☐ नाइट्रोजन ☐ कार्बन डाई-ऑक्साइड ☐

(घ) घोड़े का क्या नाम था?

चेतक ☐ सुल्तान ☐ चेतन ☐

(ङ) किसान कैसा आदमी था?

मेहनती और पत्नी भक्त ☐ गरीब किंतु नेक ☐ श्रद्धालु किंतु ईर्ष्यालु ☐

2. सही शब्द से खाली जगह भरो—

(क) ____________ के हाथ-पाँव गहरे छिल गए।

(ख) भैंस ने ____________ का पानी गंदा कर दिया।

(ग) भगवान को खड़ा देखकर ____________ अचंभे में पड़ गया।

(घ) ____________ ही भोजन को पचने में भी सहायक होती है।

(ङ) ____________ की रस्सी गले में पहनना तो दूर, उठाना भी मुश्किल है।

3. स्तंभ 'अ' को स्तंभ 'ब' से मिलाओ—

स्तंभ 'अ'	स्तंभ 'ब'
सेब	सूखे मेवे
काजू	फूल
हाथी	मिठाई
रसगुल्ला	फल
चमेली	जानवर

4. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए—**

(क) बगीचे में सुगंध कौन बिखेरता है?

(ख) काबुलीवाले से पायल की मित्रता कैसे हुई?

(ग) हवा में कौन-कौन सी प्रमुख गैसें हैं?

(घ) किसान ने भगवान से क्या शिकायत की?

(ङ) सुरेश ने आकाश की प्राथमिक चिकित्सा कैसे की?

5. **दिए गए शब्दों के तीन-तीन पर्यायवाची शब्द लिखिए—**

(क) चाँद — ____________ ____________ ____________

(ख) हवा — ____________ ____________ ____________

(ग) फूल — ____________ ____________ ____________

(घ) आँख — ____________ ____________ ____________

6. **दिए गए शब्दों को अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए—**

(क) अदृश्य — ________________________________

(ख) सूत्र — ________________________________

(ग) प्रक्रिया — ________________________________

(घ) प्रदूषण — ________________________________

7. **दिए गए वाक्यों को उचित मुहावरों से पूरा कीजिए—**

कानों पर जूँ न रेंगना, जान में जान आना, चेहरा खिल उठना,
अपने पाँव पर आप कुल्हाड़ी मारना, आँखें चमकना

(क) किसान की ____________ ।

(ख) वरदान माँगकर किसान ने ____________ ली।

(ग) रुपयों से भरा संदूक देखकर किसान की ____________ लगीं।

(घ) भगवान को अपने सामने देखकर किसान का ____________ ।

(ङ) किसान ने दुकानदारों को ढेर सारा रुपया देना चाहा मगर दुकानदारों के ____________

प्रश्न-पत्र (Test-Paper) – II

समयः 1 घंटा **अंक-40**

1. सही विकल्प पर (✓) लगाइए—

(क) बीरबल जब नवरत्न नहीं थे, तब वह काम करते थे—

पान की दुकान पर ☐ कपड़े की दुकान पर ☐ सुनार की दुकान पर ☐

(ख) मजदूर ने अमीर बनने के लिए क्या किया?

जी-तोड़ मेहनत ☐ छल-कपट ☐ ये सभी ☐

(ग) सुमित्रा की दासी का क्या नाम था?

चैती ☐ फूलकुमारी ☐ मंथरा ☐

(घ) पंछियों के चहचहाने के साथ-साथ क्या उठता है?

अँधेरा ☐ उजाला ☐ पर्दा ☐

(ङ) ब्राह्मण ने परदेसी का किया—

सत्कार ☐ तिरस्कार ☐ ये दोनों ☐

2. सही शब्द से खाली जगह भरो—

(क) सम्राट को अपराधी घोषित करना बहुत ____________ काम था।

(ख) हर एक आदमी को अपने ____________ पर चलने का पूरा हक है।

(ग) नए अध्यापक का नाम ____________ था।

(घ) नौकर की हरकत पर राजा ____________ हो गया।

(ङ) बूढ़े सज्जन को मुस्कुराते देख लड़के ____________ हो गए।

3. स्तंभ 'अ' को स्तंभ 'ब' से मिलाओ—

स्तंभ 'अ'	स्तंभ 'ब'
कौशल्या	नीलकंज की बहन
चैती	महारानी
मंथरा	सुमित्रा की दासी
फूलचंद	कैकेयी की दासी
नीलकंज	बाग का माली
पंखुरी	फूलचंद का बेटा

4. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए—**

(क) बीरबल किसका चहेता बन गया था?

(ख) रईस की पालकी क्यों रुक गई?

(ग) सुमित्रा ने कौशल्या को रोककर क्या कहा?

(घ) रोहित अलमारी खोलकर क्या निकाल रहा था?

(ङ) बूढ़े की पोटली में क्या बँधे हुए थे?

5. **दिए गए शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए—**

घर	पेड़	अध्यापक	कपड़ा
________	________	________	________
________	________	________	________

सहसा	कष्ट	बग़ीचा	तलाश
________	________	________	________
________	________	________	________

6. **निम्नलिखित वाक्यों में उद्देश्य ओर विधेय अलग-अलग कीजिए—**

वाक्य	उद्देश्य	विधेय
(क) सूरज पूरब में निकलता है।	________	________
(ख) रात में तारे चमकते हैं।	________	________
(ग) सौरभ क्रिकेट खेलेगा।	________	________
(घ) पुलकित विद्यालय चला गया।	________	________
(ङ) धोबी कपड़े धो चुका है।	________	________

7. **दिए गए शब्दों के विलोम शब्द लिखिए—**

सूरज — ________ धरती — ________ आया — ________

धूप — ________ खाना — ________ बेटी — ________